बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र के बढ़ते चरण

एच० के० व्यास

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

चमेलीवाला
जयपुर 302

सितम्बर, 1984 (RPPH-2)

मूल्य : दस रुपये

भारती प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित तथा रामपाल
राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि०, जयपुर की ओर से प्रका

9 सितम्बर, 1984

बल्गेरिया के

गौरवशाली मुक्ति दिवस

की

40वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष में

सादर समर्पित

—एच० के० व्यास

विषय-सूची

प्रस्तावना

मुझे नवम्बर 1980 मे, और फिर जून 1983 मे, बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र जाने का सुअवसर मिला। 7 नवम्बर, 1980 को हमने राजधानी सोफिया मे शानदार जुलूस परेड को भी देखा। सोवियत संघ के अलावा बल्गेरिया ही ऐसा समाजवादी देश है, जहाँ प्रतिवर्ष 7 नवम्बर अर्थात् सोवियत समाजवादी क्रान्ति दिवस के दिन जोश और उल्लास के साथ शानदार परेड व जन जुलूस का आयोजन किया जाता है। वह एक स्मरणीय घटना थी।

मेरी इन दो बार की यात्राओं के दौरान मुझे जनवादी बल्गेरिया के कई शहरो, गाँवों, महत्वपूर्ण औद्योगिक संयंत्रों, सहकारी खेती के केन्द्रों जिन्हें अब खेतिहर-औद्योगिक मिले-जुले संस्थान के तौर पर संगठित किया गया है यह सब देखने का अवसर मिला। सैकड़ो सामान्य नागरिको से बाते करने का मौका मिला। सहकारी खेतो मे काम करने वाले श्रमिकों तथा सरकार द्वारा श्रमिको तथा अन्य लोगो के लिए निर्मित मकानो मे जाकर वहाँ के रहने वाले परिवारो से बातचीत करने का तथा उनके जीवन की ठोस जानकारी प्राप्त करने का अवसर भी मुझे मिला।

मुझे संस्थानो के प्रबंधको, वहाँ के कम्युनिस्ट पार्टी संगठन के मुखियाओ, ट्रेड यूनियनो के पदाधिकारियो तथा नौजवान संगठन के प्रमुख पदाधिकारियों से विस्तार से बातें करने का अवसर मिला। 1980 की मेरी यात्रा के दौरान पार्टी तथा तकनीकी शिक्षा प्रदान करने वाले दो सस्थानो को देखने का अवसर भी मुझे मिला।

कई सस्थानो, संग्रहालयों में मुझे बल्गेरिया के राष्ट्रीय विकास, उसकी प्राचीनतम संस्कृति, वहाँ के क्रान्तिकारी संघर्षों के इतिहास विशेषकर 1923 की विश्व के पहले फ़ासिस्ट विरोधी सशस्त्र विद्रोह की जानकारी मिली। 9 सितम्बर 1944 की जनक्रान्ति तथा इन सब ऐतिहासिक प्रेरणादायक क्रान्तिकारी संघर्षों के पीछे बल्गेरिया के लोगो और वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी व अन्य फासिस्ट विरोधी शक्तियो की वीरतापूर्ण कुर्बानी और संगठन के इतिहास का परिचय प्राप्त करने का सुअवसर भी मुझे मिला।

1930 में मैं [illegible] का पुनर्निर्माण [illegible] छोटा-सा गाँव मार्गोन्‍स भी देखा। यहाँ पहाड़ी पर कुछ विश्रामगृह आलीशान आराम-गृह बनाया गया है यहाँ भी मुझे रहने का मौका मिला। ऐसे अनेक रमणीक और सौंदर्यमय स्थानों पर जाने और वहाँ रहने की यादें आज भी ताजा है।

सड़कों पर चलने वाले, दुकानों में सामान खरीदने आने-जाने वाले, रेस्त्रां में बैठकर अपना आनन्दमय समय बिताने वाले हजारों लोगों को, उनकी वेशभूषा, उनके चेहरे पर सन्तोष और आनन्दमय उत्साह की भावना को भी मैंने देखा।

मैंने महसूस किया कि समाजवाद और उच्चश्रेणी की समाजवादी व्यवस्था के निर्माण में बल्गेरिया ने आलीशान नहीं बल्कि, यह कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि, विस्मयकारी प्रगति की है।

बल्गेरिया की इस प्रगति का एक नया अध्याय जून 1956 की बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की उस ऐतिहासिक बैठक से जुड़ा हुआ है जहाँ उस समय पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव और वर्तमान में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव और बल्गेरिया जनवादी गणतन्त्र के राष्ट्रपति टोडोर ज़िवकोव ने अपनी ऐतिहासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके फलस्वरूप उस समय पार्टी और प्रशासन में जो सकीर्णतावादी त्रुटियाँ घर कर गई थीं उनका सुधार हुआ। उस रिपोर्ट में रेखांकित मार्गदर्शन और उल्लेखित कदमों पर चलने से भारी प्रगति हुई है। अप्रैल 1956 के इस ऐतिहासिक पूर्णाधिवेशन के निर्णयों के कारण बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और बल्गेरिया जनवादी गणराज्य के शासन को फिर से बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और जनता के पितामह नेता जॉर्जी दिमित्रोव के दर्शाए मार्ग पर पुनःस्थापित किया जा सका है।

यह टोडोर ज़िवकोव के सैद्धांतिक और ठोस व्यावहारिक तथा वस्तुगत

मार्गदर्शन का तथा बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी में सामूहिक नेतृत्व के फिर स्थापित होने का ही परिणाम है कि जनवादी बल्गेरिया ने ऐसी द्रुतगति से प्रगति की है। यह प्रगति पिछले 15-20 वर्षों में विशेष रूप से अत्यन्त व्यापक, सर्वांगीण और प्रेरणादायक है। दुनिया के लिए यह विस्मयकारी प्रगति है।

जनवादी बल्गेरिया अपने गौरवशाली मुक्ति दिवस की 40वीं वर्षगांठ मना रहा है। सारी दुनिया में मानवतावादी भावना से ओतप्रोत जनता तथा कई देश जनवादी बल्गेरिया के इस उल्लास समारोह में शामिल हो रहे हैं।

मुक्ति दिवस की 40वीं वर्षगांठ के अवसर पर जनवादी बल्गेरिया की इस प्रगति की कहानी का कुछ चित्र इस पुस्तिका में प्रस्तुत करने का मैंने प्रयत्न किया है।

यह पुस्तिका इसी गौरवशाली मुक्ति दिवस की 40वीं वर्षगांठ को सादर समर्पित है।

9313

गौरवशाली मुक्ति दिवस

म्बर 1944

दिन बलोरिया के इतिहास मे न सिर्फ फासिस्ट गलाघोट, तानाशाही शासन
ता पलटने वाला गौरवशाली मुक्ति दिवस है बल्कि बल्गेरिया के इतिहास मे
ग परिवर्तनकारी दिवस भी है।

सरे महायुद्ध के दौरान बल्गेरिया की उस समय की तानाशाही सरकार
री फासिस्टो के साथ पूरा सहयोग कर रही थी। फ़ासिस्ट तानाशाही के
संघर्ष तेज करने और बल्गेरिया की मुक्ति के लिए सभी फ़ासिस्ट विरोधी
यों का मिला-जुला मोर्चा, फादरलैण्ड फ्रण्ट का गठन हुआ। इसके लिए प्रेरणा
मार्गदर्शन दिया जॉर्जी दिमित्रोव ने। इसमे प्रमुख भूमिका बल्गेरिया की
निस्ट पार्टी की थी।

1944 मे सोवियत लाल फ़ौजें रूमानिया को आज़ाद कराकर बल्गेरिया की
के निकट पहुँच गई थी। उन दिनों 26 अगस्त, 1944 को बल्गेरिया की
निस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने एक विशेष आदेश पत्र जारी किया जिसमे
आह्वान किया गया था कि इस समय कम्युनिस्ट पार्टी और फादरलैण्ड फ्रण्ट का
कार्य है कि सारे देश मे हथियारबंद बगावत सगठित करें। 5 सितम्बर,
44 को जब सोवियत संघ ने बल्गेरिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की उसी
य बल्गेरिया के विभिन्न स्थानो और इलाको मे हथियारबंद बगावत शुरू हो
। सोवियत संघ की लाल फ़ौजें लगातार आगे बढ़ती जा रही थी। 9 सितम्बर
44 को बल्गेरिया की राजधानी सोफिया में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और
दरलैण्ड फ्रण्ट की जो फ़ौजी टुकड़ियाँ हथियारबंद संघर्ष कर रही थी उनके
थ बल्गेरिया की फ़ौज की कई टुकड़ियाँ भी शामिल हो गईं।

उस दिन बल्गेरिया मे पुराने शासन का तख्ता पलट दिया गया। फ़ादरलैण्ड
ट की सरकार की स्थापना की घोषणा कर दी गई। बल्गेरिया ने फ़ासिस्ट
नाशाही शासन से मुक्ति पाई। फ़ादरलैण्ड फ्रण्ट की सरकार की स्थापना से
ल्गेरिया मे बुनियादी जनवादी परिवर्तन और इसी रास्ते पर चलते हुए समाजवादी
वस्था की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया।

इसीलिए यह गौरवशाली मुक्ति दिवस, बल्गेरिया के इतिहास में युग परिवर्तनकारी दिवस भी है।

17 सितम्बर को फादरलैण्ड फ्रण्ट सरकार के प्रधान मंत्री, के. जोर्जीव ने फादरलैण्ड फ्रण्ट के कार्यक्रम का ऐलान किया। 28 अक्तूबर, 1944 को मास्को में बल्गेरिया की फ़ादरलैण्ड फ्रण्ट सरकार और सोवियत, अमरीका तथा ब्रिटेन की सरकारों के बीच युद्ध समाप्त करने की संधि पर हस्ताक्षर हुए और बल्गेरिया का यह नया शासन फ़ासिस्ट विरोधी फ़ौजी संघर्ष में शामिल हो गया।

बल्गेरिया की फ़ौज ने सोवियत लाल फौज के साथ हंगरी और युगोस्लाविया में नाज़ी जर्मनी की फ़ासिस्ट फ़ौज को परास्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

फ़ादरलैण्ड फ्रण्ट की सरकार अत्यन्त कठिन परिस्थितियों और विरोधी प्रतिगामी शक्तियों के रोड़ों के बावजूद बड़े उद्योगों के राष्ट्रीयकरण, उद्योगों में श्रमिकों की देखभाल तथा राज्य शासन से प्रतिगामी तत्वों को हटाना, ऐसे कई महत्वपूर्ण कार्य करने में सफल हुई।

उस समय व्याप्त पेचीदा अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में 18 नवम्बर 1945 को बल्गेरिया में हुए राष्ट्रीय असेम्बली के चुनाव अपना विशेष महत्व रखते हैं। इन चुनावों के कुछ ही दिनों पहले 5 नवम्बर 1945 को जॉर्जी दिमित्रोव सोफिया पहुँच गए।

जॉर्जी दिमित्रोव का बल्गेरिया की राजनीति में विशेष स्थान रहा है। उनकी लोकप्रियता तथा अधिकारपूर्ण स्थिति का लाभ फ़ादरलैण्ड फ्रण्ट को मिला और राष्ट्रीय असेम्बली के चुनाव में फ़ादरलैण्ड फ्रण्ट ने शानदार सफलता हासिल की। फादरलैण्ड फ्रण्ट की नई सरकार का गठन किया गया।

उस समय तक बल्गेरिया की राज्यव्यवस्था राजशाही की थी। नई सरकार ने सबसे पहले राजशाही को समाप्त कर गणतन्त्र की स्थापना के प्रश्न को महत्व दिया। 8 सितम्बर 1946 को बल्गेरिया में इस प्रश्न पर जनमत संग्रह कराया गया जिसमें गणराज्य की स्थापना के पक्ष में 92 प्रतिशत मत पड़े। 15 सितम्बर 1946 को बल्गेरिया जनवादी गणतन्त्र की घोषणा की गई। उसके तुरन्त बाद नए गणराज्य के लिए 27 अक्तूबर 1946 को नई राष्ट्रीय महा असेम्बली के लिए चुनाव हुए। इन चुनावों में फादरलैण्ड फ्रण्ट को 70 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। कुल मतों में से 50 प्रतिशत मत बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी को मिले।

इन चुनावों के तुरन्त बाद जॉर्जी दिमित्रोव के नेतृत्व में फादरलैण्ड फ्रण्ट की नई सरकार की स्थापना की गई।

अपने गौरवशाली मुक्ति दिवस के बाद इस छोटे से काल में बल्गेरिया में उसकी कम्युनिस्ट पार्टी और फादरलैण्ड फ्रण्ट के नेतृत्व में महान सार्वजनिक और [illegible] क्रान्तिकारी परिवर्तन के कार्य पूरे किए।

बल्गेरिया में जनवादी गणतंत्र का उदय हुआ।

4 दिसम्बर 1947 को बल्गेरिया में नया संविधान लागू हुआ। इस संविधान ने बल्गेरिया में बुनियादी और क्रान्तिकारी सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तनों का सूत्रपात किया।

नई सरकार ने 1947-48 के लिए एक अल्पकालीन योजना बनाई जिसका उद्देश्य था बल्गेरिया के अर्थतन्त्र को कम-से-कम युद्ध के पहले के, 1939 के स्तर पर लाना। दिसम्बर 1947 को एक कानून बनाकर बैंकों, सभी बड़े उद्योगों, विदेशी व्यापार, थोक व्यापार इत्यादि का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। खेतिहर क्षेत्र में बुनियादी भूमिसुधार लागू किए गए और शुरुआती सहकारी खेतों की स्थापना की गई। तेजी से नवनिर्माण के कार्य को हाथ में लिया गया। इस कार्य में नौजवानों ने विशेष उत्साहपूर्वक कार्य किया। महत्वपूर्ण परनिक—वोलोयुवाव रेलवे लाइन, जॉर्जी दिमित्रोव बाँध इत्यादि कई महत्वपूर्ण निर्माण कार्य नौजवानों की टुकड़ियों ने स्वेच्छा से, बिना कोई पारिश्रमिक लिये, पूरे किये।

बल्गेरिया में समाजवादी व्यवस्था के निर्माण के आधारस्तम्भ रखने में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी और निर्णायक भूमिका रही है। इस सदर्भ में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के 5वें महाधिवेशन का उल्लेख आवश्यक है। इस महाधिवेशन की शुरुआत 18 दिसम्बर 1948 को हुई।

इस महाधिवेशन में प्रस्तुत रिपोर्ट में जॉर्जी दिमित्रोव ने स्थापना वर्ष 1891 से लगाकर 1948 तक बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्य और उसके मुख्य कार्यकालों की बड़ी पैनी और व्याख्यात्मक मीमांसा की। उन्होंने यह बुनियादी स्थापना प्रस्थापित की कि बल्गेरिया में जो जनवादी राज्य-व्यवस्था स्थापित हुई है वह मजदूर वर्ग के शासन का एक विशेष रूप है। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए मुख्य और महत्वपूर्ण कदमों को रेखांकित किया।

इस महाधिवेशन और उसमें तय किए गए कार्यक्रम ने बल्गेरिया में समाजवाद की स्थापना की निर्णायक शुरुआत कर दी। सोवियत संघ की महान अक्तूबर क्रांति के बाद पूर्वी यूरोपीय देशों में दूसरे महायुद्ध के अन्तिम समय में जनवादी लोकशाही क्रांतियाँ हुईं। दुनिया के मार्क्सवादी लेनिनवादी आन्दोलन के सामने यह एक नई स्थिति उत्पन्न हुई जिसकी सैद्धान्तिक मीमांसा आवश्यक थी।

जॉर्जी दिमित्रोव जो कि विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के भी एक महान नेता थे उन्होंने बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के पाँचवें महाधिवेशन में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में यह सैद्धान्तिक स्थापना का प्रतिपादन किया कि यह जनवादी लोकशाही क्रान्तियाँ मजदूर वर्ग के राज्य का ही एक विशेष स्वरूप हैं और इनसे समाजवाद के निर्माण का रास्ता प्रशस्त हो जाता है। यह सैद्धान्तिक स्थापना मार्क्सवाद

मार्क्सवाद को विचारधारा को अनुरूप है और यह उसको ...
से आगे बढ़ाने वाली स्थापना है, जिसका विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन में एक वि
महत्वपूर्ण स्थान है।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री और बल्गेरिया के राष्ट्रपति टो
जिवकोव ने भी कहा है कि इस क्रान्ति की अपनी विशेषताओं के बावजूद "
महान अक्तूबर क्रान्ति से बुनियादी समानता है और यह क्रान्ति उसी म
अक्तूबर क्रान्ति की एक पुनरावृत्ति है।"

बल्गेरिया के गौरवशाली मुक्ति दिवस ने जिन ऐतिहासिक और बुनि
क्रान्तिकारी सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों का सूत्रपात किया उस कड़ी में
का यह 5वां महाधिवेशन एक निर्णायक कड़ी है।

आज बल्गेरिया अपने उस गौरवशाली मुक्ति दिवस की 40वीं वर्षगांठ
रहा है।

इन चालीस वर्षों में बल्गेरिया में युगांतरकारी सामाजिक और आ
परिवर्तन हुए हैं।

एक पिछड़े खेतिहर देश से शुरुआत कर आज बल्गेरिया एक उ
औद्योगिक देश बन गया है; अर्थतंत्र, में लगातार प्रगति, जन-जीवन के स्त
लगातार उन्नति, शिक्षा संस्कृति और हर क्षेत्र में विस्मयकारी प्रगति के इस
ने आज बल्गेरिया को दुनिया के उन्नत देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर
है।

यह एक रोमांचकारी और प्रेरणादायक कहानी है।

बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र

बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र दक्षिण पश्चिम यूरोप में काले समुद्र के तट पर स्थित एक राज्य है। इसका क्षेत्रफल करीब 1.1 लाख वर्ग किलोमीटर है। बल्गेरिया के पूर्वी भाग से पश्चिमी भाग की दूरी करीब 500 किलोमीटर है इसकी जनसख्या लगभग 90 लाख है।

इसके उत्तर और उत्तर पूर्व में रूमानिया समाजवादी गणतंत्र स्थित है। दोनो देशों की सीमाओं का ज्यादातर भाग डेन्यूब नदी के किनारो से बनता है। बल्गेरिया के पूर्व में काला समुद्र पड़ता है। इसके दक्षिण पूर्व में स्थित है तुर्की, दक्षिण मे स्थित है ग्रीस और पश्चिम मे स्थित है युगोस्लाव समाजवादी सघीय गणतंत्र।

बल्गेरिया में प्राकृतिक तथा खनिज सपदा विशेष नही है। कोयले के भंडार बाल्कान और मरित्सा क्षेत्रों में ही स्थित हैं और कोयले की किस्म भी उच्चकोटि की नही बल्कि मध्यम श्रेणी की है। लौह खनिज सोफिया, याम्बोल, तोलबुहिन और कुर्दजाली जिलो मे पाया जाता है। अलौह खनिज रोडोपे, ओसोगोवो और बाल्कान पहाड़ियो मे पाए जाते हैं।

बल्गेरिया में नदियाँ भी बहुत बड़ी नही हैं। सबसे बड़ी नदियाँ हैं मारीत्सा, इसकूट, मेस्ता, स्त्रोमा इत्यादि। जिनसे पन-बिजली निर्मित की जाती है और सिचाई भी की जाती है।

बल्गेरिया मे काफी बड़ी मात्रा में प्राकृतिक-खनिज नमकयुक्त पानी के झरने हैं। इनकी सख्या करीब 600 है। इस प्राकृतिक सपदा के मामले मे बल्गेरिया का स्थान विश्व भर मे अग्रणी देशो मे है। इन प्राकृतिक झरनो से खनिज नमक भरे पानी की बोतलें भर कर न सिर्फ पूरे बल्गेरिया मे भेजी जाती हैं बल्कि इनका बहुत बड़ी मात्रा मे निर्यात भी किया जाता है। खनिज नमकयुक्त पानी का सेवन स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। इन झरनो के नजदीक रहने वाले लोग नि:शुल्क यहाँ से बरतनों और कनस्तरो मे भर कर इस पानी को अपने घरेलू उपयोग के लिए ले जाते हैं।

बल्गेरिया में जनसख्या की वृद्धि की दर बहुत कम है। 1980 मे यह दर 3.6 प्रति हजार थी। इसका कारण यह है कि यद्यपि शिशुओ की जन्म-दर बहुत

कम है। 1980 में यह दर प्रति हजार केवल 14.3 थी। वैसे बल्गेरिया में पिछले वर्षों में जन स्वास्थ्य, चिकित्सा, आवास, इत्यादि क्षेत्रों में जो प्रगति हुई है उसके परिणामस्वरूप बल्गेरिया के लोगों की औसत आयु बढ़कर 71 वर्ष से ज्यादा हो गई है। आबादी की दृष्टि से दुनिया की जनसंख्या में प्रति 500 लोगों में एक बल्गेरियाई है।

समाजवाद के निर्माण और उत्तरोत्तर प्रगति से लोगों के रिहायशी स्थानों में भी व्यापक परिवर्तन हुए हैं। 1980 में बल्गेरिया की जनसंख्या का 62.4 प्रतिशत भाग शहरों में और 37.6 प्रतिशत देहातों में रहने लगा।

बल्गेरिया की राजधानी है सोफिया जिसकी आबादी 12 लाख से ऊपर है अर्थात् कुल देश की आबादी का करीब आठवाँ भाग राजधानी सोफिया में रहता है।

बल्गेरिया में 221 शहर और कस्बे तथा 5147 गाँव हैं। सारे देश को 28 प्रशासनिक तथा आर्थिक जिलों में बाँटा गया है।

बल्गेरिया : ऐतिहासिक-सांस्कृतिक

बल्गेरिया की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर बहुत पुरानी है। हाल ही में बल्गेरिया के बंदरगाह और रमणीक समुद्र तट विश्राम स्थान वार्ना के पास स्थित झीलों के पड़ोस में खुदाई करने समय कई प्राचीन काल के सामान, आवासीय बस्तियों के अवशेष, औजार, गहने इत्यादि मिले हैं। अन्य स्थानों पर भी ऐसी ही प्राचीन कालीन वस्तुएँ मिली हैं।

इसको दृष्टिगत कर वार्ना स्थित एक पुराने विशाल स्कूल भवन में मार्च 1983 में बल्गेरिया के "इतिहास व कला" का एक संग्रहालय खोला गया है। जून 1983 में मुझे यह संग्रहालय देखने का सुअवसर मिला। इसमें जो वस्तुएँ और सामान रखा गया है 4 से 40 ईसा पूर्व शताब्दियों का है। यहाँ 4 से 7 ईसा पूर्व शताब्दियों के मिट्टी के बने सामान रखे हुए हैं। तांबा और पत्थर युग के निर्मित औजार, बर्तन और शिकार में काम आने वाले हथियार रखे हैं। ईसा पूर्व 2 और 3 शताब्दियों के काल से निर्मित सोने और विभिन्न धातुओं के जो सामान यहाँ रखे हुए हैं वह दिखाते हैं कि उस काल में भी बल्गेरिया के धातु शिल्प उत्कृष्ट कोटि की थी।

यहाँ लौहयुग अर्थात् 6 से 16 ईसा पूर्व काल के बने औजार, मछली पकड़ने के काँटे, चाकू, छुरे इत्यादि भी रखे हैं।

4 ईसा पूर्व शताब्दी से बने सोने के बरतन भी यहाँ रखे हैं जिनमें 23.5 कैरेट के सोने का प्रयोग किया गया है। ये बरतन बहुत सुन्दर हैं।

दूसरी और तीसरी शताब्दी से हम कांस्य के सुन्दर कलात्मक एवं सांस्कृतिक,

धरोहर की उत्तरोत्तर प्रगति दर्शाते हैं। इसी काल में बने खनिज नमकयुक्त पानी का उपयोग करने वाले स्नानगृह के अवशेष मिले हैं जिनमें कुछ तो 10,000 वर्ग मीटर बड़े थे।

"इतिहास व कला" के इस संग्रहालय में मैंने जो देखा और सुना उससे ठोस रूप से यह धारणा परिपक्व हुई कि बल्गेरिया की सांस्कृतिक धरोहर कितनी पुरानी है। ईसापूर्व शताब्दियों में बने सोने के सुन्दर गहने देखकर तो और भी विस्मय हुआ। यह संग्रहालय देखने पर बल्गेरिया के इतिहास और संस्कृति की अति प्राचीनकालीन धरोधर की एक अमिट छाप मेरे मस्तिष्क और मन में जम गई।

वैसे तो बल्गेरिया के इस क्षेत्र में इंसान के रहने के अवशेष 100,000 वर्ष पुराने काल के मिले हैं। पत्थर काल में प्राथमिक मनुष्य जिस प्रकार के औजार और हथियारों का प्रयोग करते थे वे बाचोकिरो गुफा इत्यादि स्थानों से मिले हैं।

ऐतिहासिक तौर पर ईसापूर्व 1500 वर्ष में उस समय उस्कूदामे कहलाने वाले क्षेत्र जिसका आज नाम है एड्रियानोपोल वहाँ एक थ्रेसियाई कुनबे ने काले समुद्र और दार्दनेल्स के बीच एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। बाद में यह क्षेत्र रोम साम्राज्य में शामिल कर लिया गया, तथा दास प्रथा ने व्यापक रूप ले लिया।

6 और 7वीं शताब्दी के दौरान डेन्यूब नदी के दक्षिण के बाइज़ेन्टीन क्षेत्रों में कई स्लाव लोग आकर बस गये। 7वीं शताब्दी के मध्य में डेन्यूब नदी में स्थित एक टापू में रहने वाले प्रूटो बल्गेरियन लोग भी डेन्यूब नदी और बाल्कान पहाड़ियों के बीच के इस क्षेत्र में बस गए। इन प्रूटो बल्गेरियन और स्लाव लोगों ने मिलकर 681 वर्ष में पहले स्लाव-बल्गेरिया राज्य की स्थापना की। यह राज्य डेन्यूब नदी, बाल्कान पहाड़ियों और काले समुद्र के बीच में स्थित था। यही बल्गेरिया के स्वतंत्र राज्य की स्थापना का वर्ष है।

1981 में बल्गेरिया ने अपने राज्य की स्थापना की 1300वीं वर्षगाँठ मनाई थी। इस राज्य का मुखिया था अस्पारुख (681-701) इस राज्य की राजधानी थी प्लिसका।'

ईसवी 852 से 889 तक बल्गेरिया राज्य का राजा जिसे—जार कहते थे—जार बोरिस था। बल्गेरिया को एकतापूर्ण ढाँचे में बाँधने के लिए और स्लाव तथा प्रूटो बल्गेरियाई लोगों को एक करने के लिए जार बोरिस ने 865 ईसवी में राज्य के लिए ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। सामंती राज्य के लिए यह एक ठोस वैचारिक आधार बन गया। जार बोरिस के काल में संस्कृति को भी बहुत प्रोत्साहन मिला जिसका परिणाम यह हुआ कि सिरिल और मेथोडिस नामक दो भाइयों, जिन्होंने स्लाव लिपि का आविष्कार किया था, के अनुयाइयों ने इस काल में कई पुस्तकें लिखीं और इसी काल में रूसी और सर्बो क्रोटियन लिपियों का उपयोग चालू हुआ।

बल्गेरिया राज्य के विस्तार के साथ-साथ उस पर विदेशी आक्रमण के दबाव भी बढ़ते गये। 13वी शताब्दी में बल्गेरिया पर बाइजेन्टीन, तातार तथा माग्यार हमले बढ़ गये।

सामन्ती तत्वो के लोभ और शोषण के कारण आम लोगों में असंतोष की स्थितियों का फायदा तुर्की के ओटोमन साम्राज्य ने उठाया। उसने इस राज्य पर धावा बोल दिया और 1393 से 1396 के बीच तुर्की की फ़ौजो ने सारे क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। बल्गेरिया को गुलाम बनाकर उसे तुर्की ओटोमन साम्राज्य का अंग बना दिया।

बल्गेरिया के इतिहास मे यह सबसे ज्यादा दमन और शोषण का काल रहा है। जमीन को ओटोमन साम्राज्यी लोगों के रिश्तेदारों के स्वामित्व मे दे दिया गया। तरह-तरह के कर और लगान रूपी बोझे लादे गये। शहरो और गाँवो पर घातक हमले किए गए। बल्गेरियाई लोगो को भागकर पहाड़ो मे शरण लेनी पड़ी। बल्गेरियाई भाषा और संस्कृति को पूरी तरह समाप्त करने के लिए घोर बर्बर और दमनकारी तरीक़े अपनाए गए। लोगों को इस बात के लिए मजबूर किया जाने लगा कि वे इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लें।

परन्तु बल्गेरिया की जनता ने इस जुल्म और आतंक के विरुद्ध लगातार संघर्ष किया। 1404 में विदिन और पीरोट ज़िलों में विद्रोह हुए। 16वीं और 17वीं शताब्दियों में आस्ट्रिया और ओटोमन साम्राज्य के बीच जो युद्ध हुआ उसमे बल्गेरिया के लोगों में आशा का संचार हुआ।

इस काल में भी बल्गेरिया में कई विद्रोह हुए। साथ ही बल्गेरिया में पूँजीवादी अर्थ सम्बन्धों का विकास भी शुरू हुआ। 1762 में हिलैन्डर के पाइसी ने 'स्लाव बल्गेरियन इतिहास' नामक पुस्तक में लिखा कि 18वीं शताब्दी के दूसरे भाग में बल्गेरिया के लोगों में अपने गौरवशाली अतीत की परम्पराओं के अनुरूप और उसे आगे बढ़ानेवाली एक राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। 18वीं और 19वीं शताब्दी के रूस और तुर्की के युद्धों के कारण बल्गेरिया की जनता में नव उत्साह का संचार हुआ। 1824 में बल्गेरियन में प्राथमिक शिक्षा की पहली पुस्तक का प्रकाशन हुआ। 1834 में गाब्रोवो में पहले धर्म-निरपेक्ष स्कूल की स्थापना हुई। गिरिजाघरों की व्यवस्था में स्वशासन के लिए भी संघर्ष शुरू हुआ। इसी काल में एक सशक्त राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की भी शुरुआत हुई। यह संघर्ष उस काल के दो महान क्रान्तिकारियों के नाम से जुड़ा हुआ है। वे हैं वासिल लेवस्की और ल्यूबेन कराबेलोव। इन लोगों ने 1869 में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में लगे अन्य क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर रूमानिया में एक बल्गेरिया की क्रान्तिकारी केन्द्रीय कमेटी की स्थापना की। राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों के इस क्रम में अप्रैल 1876 की क्रान्तिकारी बगावत का एक विशेष महत्त्व है।

12 अप्रैल 1877 को रूसी बादशाह एलेक्सेण्डर द्वितीय ने तुर्कों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जून 1877 में रूस की फौजी टुकड़ियों ने आगे बढ़ते हुए बल्गेरिया के क्षेत्र को आजाद कराना शुरू कर दिया। बल्गेरिया के फौजी स्वय-सेवकों ने इस युद्ध में रूसी फौजों का साथ दिया। प्लेवेन और शिपका के युद्ध में रूसी फौजों और बल्गेरिया के हथियारबंद स्वयसेवकों ने तुर्की की फ़ौजों को परास्त किया। उस काल में रूस और बल्गेरिया की फ़ौजी टुकड़ियों के बीच और दोनों देशों के आम लोगों के बीच बहुत मजबूत भाईचारे की भावनाएँ जागृत हुईं।

19 फरवरी 1878 की शान्ति सधि के फलस्वरूप बल्गेरियाई क्षेत्र में उसकी स्वायत्तता के अधिकार को स्वीकार किया गया। यही एक आजाद बल्गेरिया राज्य की स्थापना का दिन है। 1 जून 1878 की बर्लिन सधि ने उस समय के बल्गेरियाई राज्य का विभाजन कर दिया। बल्गेरिया की राजधानी सोफिया थी।

इसी काल में एक आजाद बल्गेरिया राष्ट्र और उसके शासन की शुरुआत हुई।

तुर्कों के आतंकवादी शोषणकारी प्रभुत्व से बल्गेरिया को आजादी दिलाने के कार्य में रूसी फौज ने महत्वपूर्ण और लगभग निर्णायक भूमिका अदा की थी।

रूस और बल्गेरिया की जनता के बीच आत्मीयता और भाईचारा स्थापित करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बल्गेरिया के लोगों के मन में इस बात का बड़ा प्रभाव है कि रूस ने उसे राष्ट्रीय आजादी दिलवाई।

यही कारण है कि सितम्बर 1944 में जब सोवियत सघ की लाल फौज ने हिटलर के फासिस्ट निरंकुश शासन से बल्गेरिया को दूसरी बार आजादी प्राप्त करने में निर्णायक सहायता दी तो ऐतिहासिक रूप से प्रस्थापित रूस और बल्गेरिया की जनता के बीच मैत्री और भाईचारे की भावना को और ज्यादा बल मिला।

9 सितम्बर 1944 को बल्गेरिया ने जो गौरवशाली मुक्ति प्राप्त की उसका वर्ग स्वरूप नया था। यह एक जनवादी लोकशाही क्रान्ति थी जिसने बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में, बल्गेरिया में, समाजवादी व्यवस्था का आधार रखा। यही कारण है कि सोवियत जनता और बल्गेरिया की जनता, सोवियत सरकार और बल्गेरिया की सरकार तथा सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच प्रगाढ़ मैत्री और भाईचारे के सम्बन्ध रहे हैं और लगातार विकसित होते रहे हैं। राष्ट्रीय भावनाओं के साथ कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे का पुट लग गया। इस अगाढ़ तथा उत्तरोत्तर बढ़ती मैत्री और भाईचारे की भावना का ठोस और अटूट आधार यही है।

शायद यही कारण है कि महान अक्तूबर क्रान्ति के दिवस 7 नवम्बर के दिन प्रति वर्ष बल्गेरिया की राजधानी सोफिया में एक विशाल परेड और जुलूस निकाला जाता है।

कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी विचारधारा तथा संगठन का उदय

19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक तक बल्गेरिया में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का काफी विकास हो गया था। इसके साथ ही मजदूर वर्ग भी अस्तित्व में आया और मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी विचारधारा का भी उदय हुआ।

बल्गेरिया में समाजवादी विचारधारा और प्रचार दिमितर ब्लागोएव के नाम से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। दिमितर ब्लागोएव (1856-1924) 19वीं शताब्दी के अन्त में तथा 20वीं शताब्दी के शुरू के दो दशकों के काल के बाल्कान क्षेत्र के सबसे अग्रणी मार्क्सवादी थे। उनका जन्म कोस्तूर जिले के जागोरिचेने गांव (जो इस समय युगोस्लाविया के मसिडोनिया इलाके में स्थित है) में हुआ था। उन्होंने पहले इस्तम्बूल में, और फिर स्तारा जगोरा में शिक्षा प्राप्त की और बाद में वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए रूस गये। वहीं उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन किया और रूस के सेन्ट पीटर्सबर्ग शहर में उन्होंने एक मार्क्सवादी ग्रुप का गठन किया जो 'ब्लागोएव ग्रुप' के नाम से जाना जाता है। इस कारण उन्हें जारशाही शासन ने रूस से निष्कासित कर दिया था।

बल्गेरिया वापस लौटने के बाद उन्होंने 1891 में समाजवादी प्रचार कार्य शुरू कर दिया। उसी वर्ष उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर बाल्कान पहाड़ी पर [illegible] में बल्गेरियन समाजवादी प्रजातान्त्रिक पार्टी की स्थापना की।

बल्गेरिया की समाजवादी प्रजातान्त्रिक पार्टी की स्थापना से ही उसमें इस प्रश्न का सैद्धान्तिक संघर्ष शुरू हो गया कि पार्टी का स्वरूप क्या हो जिसके परि-णामस्वरूप पार्टी दो धाराओं में विभाजित हो गई। इनमें से एक धारा का [illegible] दूसरा [illegible]। इस बीच [illegible] के विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता के कारण [illegible] में विभाजन [illegible] पार्टी [illegible] बल्गेरिया की मजदूर [illegible] समाजवादी [illegible] पार्टी। इस नई पार्टी की स्थापना के बावजूद यह सैद्धान्तिक संघर्ष

तीव्रता से चलता रहा। ब्लागोएव के साथ जो लोग थे वे पार्टी को एक मजदूर वर्ग की विचारधारा से लैस लड़ाकू क्रान्तिकारी पार्टी बनाना चाहते थे। पर्चों से अवसरवादी विचारधारा का नेतृत्व कर रहे थे साकुजोव।

इसी बीच एक महत्वपूर्ण घटना हुई। सोफ़िया स्थित इस पार्टी के संगठन मे 1903 मे फूट पड़ गई। इस प्रक्रिया का नेतृत्व किया छापाखाने मे काम करने वाले एक नौजवान मजदूर जॉर्जी दिमित्रोव ने। उन्होंने क्रान्तिकारी सिद्धान्तो पर आधारित एक स्वतन्त्र संगठन की घोषणा कर दी। बल्गेरिया की मजदूरवर्गीय समाजवादी प्रजातान्त्रिक पार्टी की केन्द्रीय समिति के बहुमत सदस्यो ने सोफिया मे जॉर्जी दिमित्रोव द्वारा उठाये गये कदम और उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो का समर्थन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उस पार्टी के जुलाई 1903 मे हुए दसवें महाधिवेशन ने अवसरवादी ग्रुप को पार्टी से निकाल दिया और स्वतन्त्र बल्गेरिया मजदूरवर्गीय समाजवादी प्रजातान्त्रिक पार्टी (वामपंथी) का गठन कर लिया।

इस पार्टी ने बल्गेरिया द्वारा प्रथम साम्राज्यवादी युद्ध मे शामिल होने का विरोध किया। यशस्वी महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का बल्गेरिया के क्रान्तिकारी आन्दोलन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। पार्टी के मुखपत्र 'मजदूरवर्ग का समाचार पत्र' ने अक्तूबर क्रान्ति का बड़ा जोश के साथ स्वागत किया। वामपंथी समाजवादी लोगों ने सोवियत सरकार के इस प्रस्ताव का जोरदार समर्थन किया कि बिना मुआवजे और बिना दूसरे देश के भूभाग पर कब्जा किये शान्ति संधियाँ की जाएँ।

18 सितम्बर 1918 मे दोब्रो पोल मे फ़ौजी विफलता के बाद जब बाल्कन फ्रन्ट टूट गया और बल्गेरियाई फौजें अस्त-व्यस्त स्थिति मे पीछे हटने लगी तो बल्गेरिया की मजदूरवर्गीय समाजवादी प्रजातान्त्रिक पार्टी और बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी ने फौजों मे प्रचार कर इस बात का प्रयत्न किया कि बल्गेरिया मे एक गणतन्त्र की स्थापना की जाए और बल्गेरिया को युद्ध मे धकेलने वाले शासकों को सज़ा दी जाए। 22-23 सितम्बर को इस प्रकार की योजना भी बन गई। परन्तु इस बीच मालिनोव सरकार ने सुलहनामा कर लिया और विद्रोही सैनिकों को समझाने का प्रयत्न शुरू कर दिया। खेतिहर पार्टी के नेतृत्व को तुरन्त जेलों से रिहा कर दिया गया।

27 सितम्बर 1918 को बल्गेरिया को एक गणराज्य बनाने की घोषणा कर दी गई।

परन्तु वामपंथी समाजवादी पार्टी के लोगों ने खेतिहर पार्टी के नेता स्टाम-बोलिस्की के इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया कि पूंजीवादी वर्ग और राजशाही राजसत्ता के विरुद्ध मिला-जुला संघर्ष संगठित किया जाए। इस प्रकार इन दोनों पार्टियों की एकता नहीं हो पाई। यह कहना पड़ेगा कि क्रान्ति के इस दौर मे

मजदूर वर्ग और किसानों की एकता की बोल्शेविक कार्यनीति का बल्गेरिया की वामपंथी समाजवादी प्रजातंत्रीय पार्टी के नेतृत्व ने सही रूप में पालन नहीं किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि फौजों का यह विद्रोह असफल रहा उसे विभिन्न स्थानों पर कुचल दिया गया या ठंडा कर दिया गया।

खेतिहर पार्टी को कुछ रियायतें देकर एक मिली-जुली सरकार बनाकर पूंजीवादी वर्ग ने बढ़ते हुए विद्रोह पर क़ाबू पा लिया।

इस बीच बल्गेरिया की मजदूरवर्गीय समाजवादी प्रजातांत्रिक पार्टी ने तीसरे कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय सगठन से अपना सम्बन्ध जोड़ने का निर्णय कर लिया और 1919 में हुए अपने प्रथम महाधिवेशन में उसने अपना नाम बदल कर बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी यह नाम तय कर लिया तथा उसने अपने कार्यक्रम में यह दर्ज कर लिया कि बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का मूल उद्देश्य है बल्गेरिया में मजदूर वर्ग का राज्य अर्थात् सर्वहारा के वर्चस्व वाले राज्य की स्थापना करना है।

वी० कोलारोव (1877-1951) बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री चुने गए।

1920 से 1923 तक बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी सत्ता में थी। परन्तु बल्गेरिया की प्रतिगामी और फ़ासिस्ट शक्तियां उसे उखाड़कर निरंकुश फ़ासिस्ट शासन कायम करने के षड्यंत्रों में लगी थीं।

9 जून, 1923 को फ़ासिस्ट शक्तियों ने षड्यंत्र कर सत्ता का तख्ता पलट दिया, खेतिहर पार्टी को हटाकर उन्होंने अपना तानाशाही निरंकुश शासन कायम कर लिया। उस समय बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने दूरदर्शक का-सा कार्य किया। कुछ समय बाद बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने फ़ासिस्ट तानाशाही शासन के विरुद्ध बग़ावत का आह्वान किया। 1923 की यह फ़ासिस्ट विरोधी बग़ावत दुनिया के इतिहास में पहली फ़ासिस्ट विरोधी बग़ावत है। 23 सितम्बर 1923 की रात को व्रात्सा जिले में बग़ावत की शुरुआत हुई। कई शहरों और गाँवों में मजदूर वर्ग की सत्ता स्थापित कर दी गई और यह आजाद शहर और गाँव बन गए। परन्तु बग़ावत न इतनी व्यापक हो पाई और न ही देहाती क्षेत्र में इसे अपेक्षित व्यापक समर्थन मिल पाया। इस बग़ावत के दौरान बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं और नेताओं ने तथा आम मजदूर वर्ग और ग़रीब खेतिहर मजदूरों ने असीम शूरवीरता और क़ुर्बानी की मिसाल क़ायम की। हजारों लोग शहीद हुए। क़ुर्बानी और साहसपूर्ण शूरवीरता की अनेक मिसालें इस संघर्ष में निर्मित हुईं। फ़ासिस्ट शासन क्रूर दमन के जरिए इस बग़ावत को कुचलने में सफल हो पाया। बल्गेरिया में यह फ़ासिस्ट शासन और ज्यादा दमनकारी और निरंकुश हो गया। इस संघर्ष में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी को काफी क्षति

पहुँची, उसका कार्य और कठिन हो गया।

बहुत वर्षों बाद उस काल की पार्टी की कार्यनीति की मीमांसा करते हुए जॉर्जी दिमित्रोव ने कहा कि इस काल में पार्टी एक व्यापक एकतापूर्ण फासिस्ट-विरोधी मोर्चे के निर्माण कार्य में सफल नहीं हो पाई। इस विफलता का एक महत्वपूर्ण कारण था पार्टी नेतृत्व की समझ में संकीर्णतावादी रुझान। यह सही है कि खेतिहर पार्टी जो कुछ वर्ष तक शासन भी कर रही थी वह ढुलमुलयकीन और एक सीमा तक समझौतावादी, अवसरवादी पार्टी थी। परन्तु इसके बावजूद बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी को खेतिहर पार्टी के बीच और घोर प्रतिगामी फासिस्ट शक्तियों के बीच फर्क को प्रखर रूप से समझना चाहिए था। सब कुछ कमजोरियों और खामियों के बावजूद खेतिहर पार्टी की फासिस्ट विरोधी संघर्ष में कम्युनिस्ट पार्टी के साथ चलने की संभावनाएँ थीं जिन्हें उस समय पार्टी के नेतृत्व ने पूरा महत्व नहीं दिया।

आत्मालोचनात्मक रूप से यह नतीजा निकालने का ही यह परिणाम हुआ कि दूसरे महायुद्ध के दौरान जॉर्जी दिमित्रोव के मार्गदर्शन में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने खेतिहर पार्टी, मजदूर संगठन, नौजवान संगठनों सबको मिलाकर एक फासिस्ट विरोधी मोर्चा संगठित किया जिसका नाम है फ़ादरलैंड फ्रन्ट। 9 सितम्बर 1944 के सफल विद्रोह और मुक्ति संघर्ष में फादरलैंड फ्रन्ट ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आज यह स्थिति है कि बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी ने बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम को अपना खुद का कार्यक्रम बना लिया है। मजदूर वर्ग तथा अन्य वर्गों के एक सिद्धान्त पूर्ण मोर्चे के रूप में बल्गेरिया में फादरलैंड फ्रन्ट आज भी प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है और बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी इस फ़ादरलैंड फ्रन्ट की आज भी एक अंग है।

जॉर्जी दिमित्रोव

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी में जॉर्जी दिमित्रोव का एक विशेष स्थान है। जॉर्जी दिमित्रोव न सिर्फ बल्गेरिया के महान कम्युनिस्ट और लोकप्रिय नेता थे बल्कि उन्होंने विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन में भी एक महत्वपूर्ण नेतृत्वकारी स्थान प्राप्त कर लिया था। 1935 में हुए कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संघ के 7वें महाधिवेशन में वे उसके प्रथम सचिव चुने गए। उस अधिवेशन में उन्होंने 'फ़ासिस्टवाद तथा युद्ध के विरोध में संयुक्त मोर्चा' इस शीर्षक की रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। इस रिपोर्ट में संयुक्त मोर्चे की रूपरेखा, उसके लिए आवश्यक कार्यनीति, संकीर्णतावादी रुझानों को त्यागने तथा एक व्यापक मोर्चा बनाने के लिए अत्यन्त मर्मभरा सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है तथा ठोस मार्गदर्शक रास्ता दिखाया गया है।

कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संघ के 7वें महाधिवेशन में प्रस्तुत जॉर्जी दिमित्रोव की रिपोर्ट ने दुनिया भर में कम्युनिस्ट आन्दोलन के विकास और विस्तार में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में भी वह नौजवान कतारें जो उस काल में कम्युनिस्ट पार्टी की ओर आकर्षित हुईं और जिन्होंने पार्टी कार्य के विकास और विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन पर जॉर्जी दिमित्रोव की इस रिपोर्ट की अमिट छाप रही है। मैं भी उन लोगों में से एक हूँ। इसी रिपोर्ट से सबक ले भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद से देश को मुक्ति दिलाने के लिए एक राष्ट्रीय साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चे की सही कार्यनीति अपनाई।

हिटलरी फासिस्ट शासन द्वारा जॉर्जी दिमित्रोव तथा अन्य लोगों पर जो झूठा मुकदमा चलाया गया और जिसकी अदालती कार्रवाई लाइपजिग में हुई उस मुकदमे में एक सच्चे कम्युनिस्ट के तौर पर निर्भीकता से अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिए जॉर्जी दिमित्रोव ने जो बयान दिए तथा साथ ही बड़ी बारीकी से उन्होंने उस मुकदमे के खोखलेपन को उजागर किया, यहाँ तक कि हिटलरी शासन के फ़ौजी मुखिया गोअरिंग को अपनी जिरह के दौरान जॉर्जी दिमित्रोव ने जिस प्रकार आड़े हाथों लिया और उसके बयानों की छीछालेदर की। उस समय से ही जॉर्जी दिमित्रोव विश्व भर में कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के दिमाग में एक प्रभावशाली, बहादुर तथा प्रेरणादायक नेता के रूप में सामने आए।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी में जॉर्जी दिमित्रोव का एक विशेष स्थान है। जॉर्जी दिमित्रोव न सिर्फ बल्गेरिया के महान कम्युनिस्ट और लोकप्रिय नेता थे बल्कि उन्होंने विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन में भी एक महत्वपूर्ण [illegible] कर लिया था। 1935 में हुए कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संघ के 7वें महाधिवेशन में वे उसके प्रथम सचिव चुने गए। उस अधिवेशन में उन्होंने 'फासिस्टवाद तथा युद्ध के विरोध में संयुक्त मोर्चा' इस शीर्षक की रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। इस रिपोर्ट में संयुक्त मोर्चे की रूपरेखा, उसके लिए आवश्यक कार्यनीति, संकीर्णतावादी रुझानों को त्यागने तथा एक व्यापक मोर्चा बनाने के लिए अत्यन्त मर्मभरा सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है तथा ठोस मार्गदर्शक रास्ता दिखाया गया है।

कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संघ के 7वें महाधिवेशन में प्रस्तुत जॉर्जी दिमित्रोव की रिपोर्ट ने दुनिया भर में कम्युनिस्ट आन्दोलन के विकास और विस्तार में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में भी वह नौजवान कतारें जो उस काल में कम्युनिस्ट पार्टी की ओर आकर्षित हुईं और जिन्होंने पार्टी कार्य के विकास और विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन पर जॉर्जी दिमित्रोव की इस रिपोर्ट की अमिट छाप रही है। मैं भी उन लोगों में से एक हूं। इसी रिपोर्ट से सबक ले भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद से देश को मुक्ति दिलाने के लिए एक राष्ट्रीय साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चे की सही कार्यनीति अपनाई।

हिटलरी फासिस्ट शासन द्वारा जॉर्जी दिमित्रोव तथा अन्य लोगों पर जो झूठा मुकदमा चलाया गया और जिसकी अदालती कार्रवाई लाइपजिग में हुई उस मुकदमे में एक सच्चे कम्युनिस्ट के तौर पर निर्भीकता से अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए जॉर्जी दिमित्रोव ने जो बयान दिए तथा साथ ही बड़ी बारीकी से उन्होंने उस मुकदमे के खोखलेपन को उजागर किया, यहां तक कि हिटलरी शासन के फौजी मुखिया गोअरिंग को अपनी जिरह के दौरान जॉर्जी दिमित्रोव ने जिस प्रकार आड़े हाथों लिया और उसके बयानों की छीछालेदर की। उस [illegible] दिमित्रोव विश्व भर में कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के [illegible] बहादुर तथा प्रेरणादायक नेता के रूप में सामने

ग॰ दी॰ दिमित्रोव
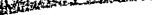
पड़ा। उन्होंने कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संघ की देखरेख में कार्य करना शुरू कर दिया।

उन दिनों फासिस्टवाद तेज़ी से बढ़ रहा था। जर्मनी में हिटलर के नेतृत्व में फ़ासिस्टों ने अपनी एक निजी फौज बना ली थी और कम्युनिस्ट विरोधी उन्माद और आतंक फैलाना शुरू कर दिया था।

फ़ासिज्म के विरुद्ध एक व्यापक संघर्ष संगठित करना यह कम्युनिस्ट आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य बन गया था। कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संघ ने जॉर्जी दिमित्रोव को यह कार्य सौंपा कि वह यूरोप के विभिन्न देशों में कार्य कर रही कम्युनिस्ट पार्टियों के कार्य को इस दिशा में समन्वित करें। कई बनावटी नाम ग्रहण कर, ऐसे ही बनावटी पासपोर्ट बनाकर, अपना भेष बदलकर जॉर्जी दिमित्रोव इन देशों की यात्रा करते रहे। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व तथा अन्य लोगों से सम्पर्क करते रहे।

1933 में जर्मनी में हिटलरी फ़ासिस्ट शासन कायम हो गया। हिटलरी फ़ासिस्ट शासन ने एक ही रात में हजारों कम्युनिस्टों का कत्लेआम किया और उन्हें जेलों में बंद कर दिया। अपने बर्बर पाशविक दमन के लिए बहाना बनाने के लिए हिटलर और गोअरिंग ने साजिश कर जर्मनी के संसद भवन राइखस्टाग में आग लगवा दी और इस आगजनी का आरोप कम्युनिस्टों के सिर मढ़कर गिरफ्तारियाँ और तेज कर दीं।

राइखस्टाग में आग लगाने का झूठा मुकदमा चलाया गया। जिन लोगों पर मुकदमा चलाया गया उनमें प्रमुख थे जॉर्जी दिमित्रोव। जॉर्जी दिमित्रोव ने उस अदालत के सामने जो भाषण दिया है वह एक निर्भीक कट्टर कम्युनिस्ट की सफाई-भर का भाषण ही नहीं बल्कि कम्युनिस्ट विचारधारा की जोरदार रूप में रक्षा करने, कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ के सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने तथा फासिस्ट षड्यंत्र का पर्दाफाश करने वाला एक अत्यन्त प्रेरणादायक दस्तावेज है।

उन्होंने यह स्वीकार किया कि वह कम्युनिस्ट हैं और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट संघ के एक कार्यकर्ता हैं, और उन्हें इस बात पर गर्व है। उन्होंने साफ कहा कि कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ का उद्देश्य है कि एक सर्वहारा क्रान्ति के जरिये सामाजिक ढाँचे का परिवर्तन किया जाए। वह षड्यंत्र [illegible] किया और आगजनी के खिलाफ [illegible]। उन्होंने बड़ी दृढ़ता से कहा कि सोवियत संघ के साथ [illegible] है क्योंकि वह मजदूर वर्ग का पहला [illegible] राज्य है। अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] में [illegible] जॉर्जी दिमित्रोव को एक [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] ने यह [illegible] कि वह [illegible] [illegible] है [illegible] जॉर्जी दिमित्रोव ने इस [illegible] [illegible] हुए [illegible] है कि वह [illegible] [illegible] के [illegible] के कारण [illegible] थे [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

...स्तर का परिचायक मानती थी और जब जर्मन शासक केवल अपने घोडो से जर्मन भाषा मे बात करते थे उस काल मे बल्गेरिया के दो भ्राताओ ने स्लाव लिपि को ईजाद किया उस समय बल्गेरिया के लोग अपनी सस्कृति के विकास मे लगे थे और सास्कृतिक क्षेत्र मे उन्होने उत्कृष्टता का परिचय दिया।

तुम किस मुंह से बल्गेरियाई लोगो को निपट गँवार कहने का नैतिक अधिकार रखते हो ?

उस मुकदमे में अंत में जाकर जॉर्जी दिमित्रोव निर्दोष करार दिये गये और उनकी रिहाई के आदेश दिये गये। फिर भी हिटलर फासिस्ट शासन ने कई दिन तक उन्हे रिहा नही किया। सोवियत सघ ने जॉर्जी दिमित्रोव को अपनी नागरिकता प्रदान कर दी और उनकी रिहाई के लिए दवाव डाला। अन्त मे जाकर जॉर्जी दिमित्रोव को रिहा किया गया।

लिपज़िग मे रायस्टाग पर आग लगाने के आरोप पर यह जो मुकदमा चलाया गया उसने विश्व भर में फासिस्ट विरोधी विचारको, लेखको, वकीलो तथा मजदूर-वर्ग और मध्यमवर्ग के सामान्य लोगो को सघर्ष के लिए प्रेरित किया। फ्रांस के प्रसिद्ध लेखक रोमाँ रोलाँ, हेनरी वारवूस, ब्रिटेन के उच्चकोटि के वकील डी० प्रिट इत्यादि कई लोगो ने जॉर्जी दिमित्रोव के निर्दोष होने के पक्ष मे बयान दिए, प्रचार किया तथा तथ्यपूर्ण प्रकाशन सगठित किए। यह एक अतर्राष्ट्रीय फासिस्ट विरोधी आन्दोलन बन गया।

रिहाई के बाद 7 फरवरी को मास्को पहुँचने के समय सोवियत जनता ने उनका बड़ी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।

जॉर्जी दिमित्रोव अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट सघ के कार्य का सक्रिय नेतृत्व करने के साथ-साथ बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी को भी सही सलाह और नेतृत्व प्रदान करते रहे। दूसरे महायुद्ध के काल मे बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने जब सभी फ़ासिस्ट विरोधी शक्तियों को एक मोर्चे मे लाने की अगुवाई की और इसी दिशा मे प्रगति करते-करते फादरलैण्ड फ्रन्ट की स्थापना की इस कार्यनीति को लागू करने मे जॉर्जी दिमित्रोव का मार्गदर्शन भी एक महत्वपूर्ण बात थी।

यही कारण है कि 5 नवम्बर 1945 को जब जॉर्जी दिमित्रोव वापस सोफिया पहुँचे तो न सिर्फ बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने बल्कि बल्गेरिया की आम जनता ने भी उन्हे एक पूजनीय नेता या यो कहिये कि पितामह के रूप मे स्वीकार किया।

बल्गेरिया मे योजनावद्ध समाजवाद के निर्माण का कार्य शुरू करने के कुछ ही समय बाद 2 जुलाई 1949 को जॉर्जी दिमित्रोव का देहान्त हो गया। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और समाजवाद के निर्माण मे लगी बल्गेरिया की जनता के लिए यह एक गभीर क्षति थी।

वह ऐतिहासिक वसन्त

जॉर्जी दिमित्रोव की मृत्यु के बाद कुछ वर्षों तक बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में संकीर्णतावाद, व्यक्तिपूजा और नौकरशाही की प्रवृत्तियाँ काफ़ी बढ़ गयीं। लेनिनवादी सिद्धान्त प्रजातंत्रीय केन्द्रीयवाद में से केन्द्रीयवाद बहुत उभर गया और प्रजातन्त्रवाद का काफी लोप हो गया। पार्टी में इस गलत रुझान ने भी घर कर लिया कि जैसे-जैसे समाजवाद आगे बढ़ता है वैसे-वैसे वर्ग-संघर्ष और तेज होता जाता है। इस समझ से यह नतीजा निकाला गया कि पार्टी और समाजवादी राज्य व्यवस्था को ज्यादा बड़ा खतरा उन छुपे भीतरी दुश्मनों से है जिनके पास पार्टी कार्ड हैं। यह ग़लत भावना बढ़ गई, सब ओर काल्पनिक दुश्मन नजर आने लगे और पार्टी के सामान्य कार्यकर्ताओं की कुछ भी पहल करने की भावना कुंठित होने लगी। कुछ अनावश्यक और ज्यादतीपूर्ण दमन भी हुआ। सबसे गंभीर खामी यह आई कि योजनाएँ केवल कल्पना और मनोगत भावनाओं के आधार पर बनाई जाने लगीं और सब काम धक्केशाही से होने लगा।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में ऐसी गलत प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष शुरू हुआ। पार्टी में लेनिनवादी सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करने, उसे जॉर्जी दिमित्रोव द्वारा दर्शाये मार्ग पर फिर से लाने, पार्टी और राज्य सत्ता में प्रजातन्त्र के सही सिद्धांत को प्रस्थापित करने और आलोचना तथा आत्म आलोचना के पैने हथियार को उपयोग में लाने का रास्ता अपनाने के इस संघर्ष के अगुवा थे टोडोर जिवकोव।

टोडोर जिवकोव का जन्म सोफिया से कुछ ही किलोमीटर दूर स्थित एक गाँव प्रावेत्स में हुआ था। उनके माता-पिता बहुत गरीब थे। टोडोर जिवकोव शिक्षा प्राप्त करने के लिए सोफिया आये और बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होकर धीरे-धीरे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे। 9 सितम्बर, 1944 के कुछ दिन पहले जब बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने जॉर्जी दिमित्रोव की सलाह से फौजी बगावत का आह्वान किया तब टोडोर जिवकोव सोफिया के एक महत्त्वपूर्ण ज़िले में बगावती फौजी टुकड़ी का मार्ग-दर्शन कर रहे

थे। 1948 में दिसम्बर 18 से 25 तक सम्पन्न हुए पार्टी के महाधिवेशन में टोडोर ज़िवकोव पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य चुने गये और जॉर्जी दिमित्रोव की देखरेख में कार्य करने वाले केन्द्रीय समिति के सगठन विभाग के सदस्य चुने गये।

जनवरी 1950 में वे बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव चुने गये और उसी वर्ष नवम्बर में वे केन्द्रीय समिति की पोलित ब्यूरो के कैंडिडेट सदस्य चुने गये। कुछ ही समय बाद वे पोलित ब्यूरो के पूर्ण सदस्य चुने गए।

फरवरी 1956 में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का बीसवां महाधिवेशन हुआ जिसमें व्यक्ति पूजा काल की भयंकर गलतियों, ज्यादतियों, पार्टी में और राज्यसत्ता में प्रजातंत्र का लोप होने की भूलों को उजागर किया और लेनिनवादी सिद्धान्तों को पुन. स्थापित करने के ऐतिहासिक निर्णय लिये गये। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के 20वें महाधिवेशन के बाद बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी में टोडोर ज़िवकोव ने पार्टी में उस समय के हावी नेतृत्व की कट्टरता से आलोचना शुरू की और बहुत कम समय में पार्टी की केन्द्रीय समिति के बहुमत को अपने पक्ष में कर पाये।

इसी सदर्भ में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का वह ऐतिहासिक पूर्णाधिवेशन हुआ जो 1956 में अप्रेल 2 से 6 तक चला। इस प्लीनम में टोडोर ज़िवकोव ने पार्टी की पोलित ब्यूरो की ओर से वह रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसने बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास में और जनवादी बल्गेरिया के विकास में एक ऐतिहासिक मोड़ लाया है।

आज भी पार्टी के भीतर और बाहर लोग 'अप्रेल लाइन', 'अप्रेल थीसिस' आदि शब्दों का बड़े सम्मान और आदर से उपयोग करते है। अप्रेल में वसन्त का मौसम होता है। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के अप्रेल 1956 के इस पूर्णाधिवेशन को बल्गेरिया में ऐतिहासिक वसन्त माना जाता है।

अप्रेल के केन्द्रीय समिति के इस पूर्णाधिवेशन ने व्यक्ति पूजा की तीव्र आलोचना स्वीकार की, पार्टी में सामूहिक नेतृत्व के सिद्धान्त को प्रस्थापित कर लागू करने का निर्णय लिया, पार्टी के भीतर प्रजातंत्रीय तरीकों को फिर से स्थापित किया। समाजवादी राज्य व्यवस्था में क़ानून का सही पालन किया जाय इसकी व्यवस्था करने का निर्णय लिया। और सारी पार्टी को वैचारिक और बौद्धिक तौर पर नये सिरे से शिक्षित करने का कार्यक्रम बनाया। उस समय केन्द्रीय समिति के कुछ सदस्य पुरानी लकीर पीटने पर ही कायम रहे परन्तु पार्टी के आम सदस्यों में अप्रेल निर्णयों का बहुत व्यापक स्वागत हुआ। हकीकत तो यह है कि बल्गेरिया के मज़दूर वर्ग और आम लोगों ने इस ऐतिहासिक पूर्णाधिवेशन का बड़े उत्साह से स्वागत किया।

अप्रेल की इस मीटिंग के बाद पार्टी ने समाजवादी व्यवस्था के निर्माण के लिए ठोस और सही सिद्धान्तो को लागू करना शुरू किया।

यह कार्य पूरा करने मे कुछ समय लगा तथा बहुत से सुधार लागू करने के लिए भौतिक और मनोगत स्थितियाँ तैयार करने में कई वर्ष लग गये। एक के बाद एक समस्या को पार्टी नेतृत्व ने हाथ में लिया और ठोस रूप से उसे हल किया। इस कार्य को पूरा करने मे टोडोर जिवकोव का अथक परिश्रम व धैर्य के साथ पार्टी कार्यकर्ताओं और लोगों को समझाना, आर्थिक तथा अन्य समस्याओ का ठोस अध्ययन करके उनका हल निकालना इसकी महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका रही है।

अप्रेल की इस ऐतिहासिक बैठक के बाद औद्योगिक विकास ने गति पकड़ी जिसमे महत्वपूर्ण भाग था बुनियादी उद्योग का। साथ ही वैज्ञानिक और तकनीकी तरीको में सुधार लाने के कारण ऊर्जा, रासायनिक उद्योग तथा इन्जीनियरिंग उद्योगों मे विशेष प्रगति हुई। खेती मे बड़े क्षेत्रफल वाली सहकारी खेती की यूनियन बनाने, खेती मे मशीनीकरण का विकास करने तथा वैज्ञानिक तरीकों को अपनाये जाने के कारण तेज गति से विकास हुआ। इसी प्रक्रिया के अगले चरण के रूप में एक नये प्रकार के संगठनात्मक ढांचे को खड़ा किया गया जिसे 'खेतिहर-औद्योगिक संयंत्र' के नाम से जाना जाता। खेती के क्षेत्र में यह सुधार बल्गेरिया की विशिष्टता है और इसकी कल्पना करने और इसे साकार रूप देने मे टोडोर जिवकोव की महत्वपूर्ण ही नही बल्कि निर्णायक भूमिका रही है।

इस काल में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने टोडोर जिवकोव के नेतृत्व में राष्ट्रीय अर्थतंत्र को चलाने के लिए नये तरीके और सिद्धान्त निर्धारित किये। इसकी पहली रूपरेखा बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम सचिव टोडोर जिवकोव ने 1963 में पोलित ब्यूरो को प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट मे बताया। जनवरी 1964 मे पोलित ब्यूरो और मंत्रिमंडल ने उस पर चर्चा कर उसे स्वीकार किया। प्रथम परीक्षण के तौर पर 1 अप्रेल 1964 से उन्हें लागू किया गया। अप्रेल 1966 मे बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने इस पर पूरी बहस की और इसे स्वीकृति प्रदान की। तब से यह तरीका पूरे राष्ट्रीय अर्थतंत्र में अपनाया जाने लगा है।

इस नयी देखभाल की व्यवस्था का मूल आधार है योजना के नये तरीके अपनाना, अर्थव्यवस्था में आमद-खर्च और लागत और उपलब्धि की गणना करने का सिद्धान्त ज्यादा-से-ज्यादा लागू करना, इसी प्रकार वित्त और कर्ज की नीतियो को भी इसी संदर्भ मे लागू करना, श्रमिकों को दिये जाने वाले पारिश्रमिक को उनकी अन्तिम क्रियाशीलता पर आधारित करना, उत्पादन के नये सम्बन्ध और उनमें दोनों पक्षों के समझौतों को प्राथमिकता देना, उत्पादन मे राष्ट्रीय आवश्यक-

ताओं और विदेशी व्यापार की जरूरतों का समन्वय करना इत्यादि यह सब शामिल थे। व्यवस्था के इस नये ढांचे को लागू करने के बहुत लाभकारी परिणाम हुए। औद्योगिक और खेतिहर क्षेत्र मे उत्पादन का बहुत द्रुतगति से विस्तार हुआ। इसमे यह भी संभव हो पाया कि आम जनता के जीवन स्तर मे तेजी से सुधार किया जा सके।

टोडोर जिवकोव के नेतृत्व की यह विशेषता है कि वे विभिन्न समस्याओ का सैद्धान्तिक हल भी निकालते हैं जो उन विशिष्ट स्थितियो के लिए उपयुक्त होता है तथा साथ-ही-साथ वह व्यावहारिक और ठोस तरीके भी इगित करते है जिनके लागू करने से उन समस्याओ का हल किया जा सके।

जब यह प्रश्न उठा कि पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका का सही अर्थ क्या है 1956 के बाद के काल मे यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न था, तब टोडोर जिवकोव ने इसकी सैद्धान्तिक स्थापना की जो उल्लेखनीय है। उन्होने कहा कि हम पार्टी की निर्देशात्मक भूमिका को मानते है। परन्तु यह बात कानून से या विशेष सुविधाओ को प्राप्त करके हासिल नही की जा सकती। कम्युनिस्टो को अपने काम से, अपने व्यवहार से अन्य लोगो को प्रभावित करना होगा और उनका विश्वास प्राप्त करना होगा। कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका का अर्थ विशेष सुविधाएँ प्राप्त करना नही बल्कि राष्ट्र-निर्माण कार्य मे सक्रिय होकर ऐसी स्थितियाँ पैदा करना है जिससे आम लोग कम्युनिस्टों को अपना स्वाभाविक नेता मानें।

1981 मे जब टोडोर जिवकोव ने बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी को यह मार्गदर्शन दिया जिसे बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और मंत्रि-परिषद ने स्वीकार किया कि हमारी प्रत्येक आर्थिक गतिविधि मे हमे यह ध्यान रखना चाहिए कि हम 'मुनाफा' कमा रहे हैं या घाटा खा रहे हैं। समाजवादी देश मे 'मुनाफे' शब्द का अर्थ एकदम भिन्न होता है। टोडोर जिवकोव ने समझाया कि यह मुनाफा पूँजीवादी तरीके का नही, हमे यह मूल्यांकन करना पड़ेगा कि किसी वस्तु के निर्माण मे हम कितना और कौन-सा कच्चा माल उपयोग मे ला रहे हैं और उसके उत्पादन में कितना खर्च हो रहा है, इसके निर्माण मे कितनी श्रम-शक्ति लग रही है और चाहे हमारे देश के लोग उसे उपयोग मे ला रहे हो या हम उसका निर्यात कर रहे हो उसका मूल्य हमे क्या मिल रहा है। यह सभी लोग जानते हैं कि उपयोग क्षमता मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर प्राप्त किये बिना और मूल्य मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होड़ किये बिना आप अपना माल बड़े पैमाने पर नही बेच सकते। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम वस्तु के उत्पादन में हमारा देश 'मुनाफा' कमा रहा है या नही इस पर लगातार नजर रखी जाय। खुद अपने देश की जनता मे वह माल तभी तेजी से बिकेगा

जब वह बढ़िया क़िस्म का होगा और इसका मूल्य ठीक होगा।

टोडोर जिवकोव ने बल्गेरिया के अर्थतंत्र के विभिन्न क्षेत्रों के मूल्यांकन के लिए यह मापदंड प्रस्थापित करने का यह प्रस्ताव रखा, जो स्वीकार हुआ। परन्तु पूंजीवादी देशों के कई प्रतिनिधियों और कुछ पश्चिमी देशों के उद्योगपतियों ने यह कहा कि जब आप भी 'मुनाफ़े' की बात करते हैं और हम भी मुनाफ़े की बात करते हैं तो हमारी दो व्यवस्थाओं में अन्तर क्या है। इस प्रश्न का उत्तर टोडोर जिवकोव ने सरल भाषा में दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक देश, प्रत्येक संस्थान सही तौर पर यह गणना करता है कि अपने उत्पादन में वह 'मुनाफ़ा' कमाता है या नहीं। यदि कच्चा माल कम उपयोग में न लाया जाय, यदि वस्तु के निर्माण में कम श्रम-शक्ति उपयोग में न लायी जाय और जो वस्तु निर्मित होती है वह दाम के रूप में और उत्कृष्टता के रूप में उपभोक्ता को पसन्द न हो तो वह देश या उद्योग पिछड़ जाता है।

पूंजीवादी उद्योगपतियों को उन्होंने कहा कि आपके तरीके और हमारे तरीके में बुनियादी फ़र्क यह है कि हालांकि 'मुनाफ़ा' शब्द का दोनों उपयोग करते हैं। आपकी पूंजीवादी व्यवस्था में मुनाफ़ा कुछ [illegible] परिवारों तक ही सीमित रहता है जबकि हमारी समाजवादी व्यवस्था में इसका बड़ा भाग श्रमिकों की तनख्वाह की बढ़ोतरी, सामाजिक फ़ंड की बढ़ोतरी आदि कामों में लाया जाता है और सबसे बड़ी बात यह है कि आवश्यक वस्तुओं की क़ीमतों को वह स्थिर रखता है।

टोडोर जिवकोव के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक नेतृत्व की यह विशेषता रही है कि बल्गेरिया के विकास की इस द्रुतगति में जब कभी भौतिक विकास और इसके [illegible] के कारण ढांचे में परिवर्तन या सुधार की कोई आवश्यकता आई या प्रश्न भी उपस्थित हुआ, तब बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने और विशेषकर टोडोर जिवकोव ने न सिर्फ़ उस समस्या की सैद्धान्तिक और विचारात्मक [illegible] का गहरा विश्लेषण किया और उसका सैद्धान्तिक हल प्रस्तावित किया, [illegible] उसके व्यावहारिक पहलुओं पर भी पूरा ध्यान दिया और [illegible] व्यावहारिक था। [illegible]

[illegible] बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी [illegible] बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व [illegible] टोडोर जिवकोव [illegible] के लिए [illegible]

परिपक्व होने लगी थी तभी उस कार्य विशेष की व्याख्या कर उचित मार्ग-दर्शन कर उसका हल किया।

पार्टी का सातवां महाधिवेशन जून 1958 में हुआ। अप्रैल 1956 की केन्द्रीय समिति के ऐतिहासिक पूर्णाधिवेशन के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए कार्य तो तेजी से शुरू हो गया था परन्तु पूरी पार्टी और राजसत्ता में उस दिशा में सही मोड़ लाना काफी परिश्रम का कार्य था। पार्टी के सातवें महाधिवेशन ने पार्टी और राज्य शासन में लेनिनवादी सिद्धान्तों पर तेजी से आगे बढ़ने के लिए कई समस्याओं का समाधान निकाला और नई स्थितियों में राजनैतिक मार्गदर्शक ढांचे तथा राज्य शासन के तरीकों में प्रजातन्त्रीकरण बढ़ाने के लिए कई ठोस निर्णय लिये।

जब पार्टी और राज्य शासन के ढांचे में उनके कार्य करने के तरीकों में आवश्यक और महत्वपूर्ण परिवर्तन का कार्य काफी प्रगति कर गया तब नवम्बर 1962 में हुए पार्टी के आठवें महाधिवेशन ने नये कार्य हाथ में लिये। इस महा-अधिवेशन ने समाजवादी व्यवस्था के भौतिक और तकनीकी आधार के विकास के कार्य को प्रमुख स्थान दिया और उसके अनुरूप निर्णय लिये। साथ ही उसने इस प्रश्न को भी महत्व दिया कि पार्टी के सभी सगठन राजनैतिक कार्य के नेतृत्वकारी कार्य को ज्यादा व्यापक और सही रूप से करें। इसी महाधिवेशन ने वैचारिक और सैद्धान्तिक कार्य को तथा आम जनता को कम्युनिस्ट विचारधारा से लैस करना और उन्हें इसके लिए शिक्षित करने के कार्य को भी प्राथमिकता दी।

1966 में हुए पार्टी के नौवें महाधिवेशन ने पार्टी नेतृत्व के वैज्ञानिक स्तर को बढ़ाने पर विशेष जोर दिया। इसी महाधिवेशन ने इस बात पर भी जोर दिया कि विकास और प्रगति के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अब ज्यादा जोर व्यापकता के तरीकों के बजाय मौजूदा साधनों के लगातार बेहतर उपयोग की ओर दिया जाय। इसी महाधिवेशन ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में प्रबंध के नये तरीकों को लागू करने का, तथा व्यवस्था द्वारा हर स्तर पर पूरी क्षमता से कार्य करने की आवश्यकता से सबधित महत्वपूर्ण बातों को लागू करने के निर्णय लिये।

ध्यान रहे कि इसी काल में खेतिहर, औद्योगिक सस्थानों का निर्माण, खेती के क्षेत्र में तेज गति से मशीनीकरण, उद्योगों में उत्पादकता बढ़ाने, तथा मशीनरी का पूरा उपयोग करने, कच्चे माल या अन्य रूप की फिजूलखर्ची को समाप्त करने के कदम उठाने के निर्णय लिये। यही काल था जब हर आर्थिक कार्य के मूल्यांकन में खर्च के हिसाब रखने की व्यवस्था को चालू किया गया और हर वित्तीय कार्य में—यहाँ तक कि संस्थानों को दिये जाने वाले कर्ज अथवा विस्तार के

लिए पूंजी निर्दिष्ट करने में भी—इसी प्रकार के मापदंडों से मूल्यांकन करने की प्रक्रिया चालू की गई।

यह कहा जा सकता है कि आर्थिक तथा हर क्षेत्र में द्रुतगति से प्रगति में यह काल एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था।

अप्रैल 1971 मे पार्टी का दसवाँ महाधिवेशन हुआ। इस महाधिवेशन ने पार्टी का नया कार्यक्रम स्वीकार किया। उसने विकसित समाजवादी व्यवस्था के सैद्धान्तिक आधार और पहलुओं का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। इस महाधिवेशन ने समाज व्यवस्था को वैज्ञानिक तरीके से मार्गदर्शन देने के कार्य में पार्टी का क्या स्थान है और क्या महत्व है इसे स्पष्ट किया। इसी अधिवेशन ने इस सिद्धान्त को भी उजागर किया कि सामाजिक प्रक्रियाओं और समाज में परिवर्तनों के बीच और पार्टी के कार्य करने के तरीकों में सुधार के बीच किस प्रकार का द्वंद्वात्मक सम्बन्ध है।

इस महाधिवेशन तक बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने कार्य में उच्च-स्तरीय स्थिति प्राप्त कर ली थी। अप्रेल 1956 की केन्द्रीय समिति के ऐतिहासिक पूर्णाधिवेशन की थीसिस ने सार्थक साकार रूप ले लिया। यह कार्य बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की सामूहिक सफलता थी, परन्तु यह बात भी सभी लोग स्वीकार करते हैं कि इस कठिन और पेचीदा कार्य को पूरा कराने मे केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव टोडोर जिवकोव की अग्रणी और नेतृत्वकारी भूमिका रही है। उन्होंने विभिन्न पीढ़ियों के लोगों, बुजुर्ग और नौजवान सभी पार्टी कार्यकर्ताओं को एक सूत्र में बांधा, पार्टी की एकता को बलशाली बनाया और पूरी पार्टी को विकसित समाजवादी व्यवस्था को तेज़ी से निर्मित करने के कार्य में पूरे जोश के साथ लगा दिया। उनके नेतृत्व मे पार्टी के भीतर प्रजातांत्रिक तरीके बल-शाली हुए, पार्टी मे आलोचना और आत्म आलोचना का कार्य शुरू हुआ। पार्टी मे और उसके संगठनों में पहल लेकर तथा रचनात्मक रूप से कार्य करने का वाता-वरण बन गया, सामाजिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक रूप से मार्गदर्शन करने का स्तर बढ़ा। इस महाधिवेशन में स्वीकृत पार्टी का नया कार्यक्रम बल्गेरिया मे विकसित समाजवादी व्यवस्था निर्माण करने का कार्यक्रम था। महाधिवेशन ने इस कार्य-क्रम को स्वीकार किया। आगे चलकर हम जब जनवादी बल्गेरिया के द्रुतगति से विकास की उसके अर्थतंत्र, सांस्कृतिक क्षेत्र, जनस्वास्थ्य, जन जीवन के स्तर और सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण उत्पादन में नये वैज्ञानिक आधुनिक तरीकों के उपयोग और उसमें लाभकारी परिणामों का उल्लेख करेंगे तब 1971 के पार्टी के नये कार्य-क्रम के महत्व का ठोस चित्र सामने आयेगा।

1976 मे हुए पार्टी के 11वें महाधिवेशन ने इसी दिशा मे और ज्यादा तेज़ी ... विकसित समाजवादी व्यवस्था के निर्माण के लिए भौतिक और

तकनीकी आधार को और ज्यादा मजबूत करने का कार्यक्रम बनाया।

पार्टी के 11वें महाधिवेशन और 1980 के बीच पार्टी की केन्द्रीय समिति के नौ पूर्णाधिवेशन हुए। इनमे एक के बाद एक समस्या को हाथ मे लिया गया, और उसके हल का रास्ता निर्धारित किया गया। समाजवादी व्यवस्था का ऐसा योजनाबद्ध विकास करना जिससे ज्यादा-से-ज्यादा अच्छे परिणाम मिल सकें, खेती के क्षेत्र मे व्यापकतम क्षेत्रफल के संस्थान स्थापित करना तथा विशेष इलाके या क्षेत्र के लिए विशिष्ट कार्य पर ध्यान केन्द्रित करना, राज्य तथा प्रशासनिक व्यवस्था को और चुस्त-दुरुस्त करना इत्यादि प्रश्नों को हाथ मे लेकर, चर्चा करके उनके हल का दिशा निर्देशन किया।

1976 मे ही जुलाई के महीने मे केन्द्रीय समिति का जो पूर्णाधिवेशन हुआ उसका विशेष उल्लेख आवश्यक है। वैसे इसकी रूपरेखा टोडोर जिवकोव ने केन्द्रीय समिति के पोलित ब्यूरो के समक्ष पहले ही प्रस्तुत कर दी थी परन्तु उस पर पूरी चर्चा होकर पहले पोलित ब्यूरो ने और फिर केन्द्रीय समिति ने इसे स्वीकार किया। जो प्रस्ताव इस पूर्णाधिवेशन मे स्वीकार किया गया वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह है "सामाजिक नीतियों मे लेनिनवादी सिद्धान्तो का पूर्ण रूप से पालन, जिससे कि देश की श्रम शक्ति का, भौतिक, वित्तीय और मुद्रा के साधनो के मितव्ययता से उपयोग करने और पूरा परिणाम प्राप्त करने के कार्य को ज्यादा कुशलता और असरदार ढग से लागू किया जा सके।"

1981 मे 31 मार्च से 4 अप्रैल तक बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का बारहवाँ महाधिवेशन सम्पन्न हुआ। संयोग से यह अप्रैल 1956 के केन्द्रीय समिति के ऐतिहासिक पूर्णाधिवेशन की 25वी वर्षगांठ का साल था। इस महाधिवेशन मे उस ऐतिहासिक पूर्णाधिवेशन के अभूतपूर्व महत्व का उल्लेख होना स्वाभाविक था। 1971 मे स्वीकृत पार्टी के नये कार्यक्रम के बाद के काल की उपलब्धियों और सफलताओ का इस महाधिवेशन मे मूल्याकन किया गया। इसी महाधिवेशन में 1985 तक के काल के कार्यों और योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की गई बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का तेरहवाँ महाधिवेशन संभवत. 1985 मे ही होगा और उसके बाद 1986 से नई पचवर्षीय योजना चालू हो जाएगी।

पार्टी के 1981 के महाधिवेशन को टोडोर जिवकोव ने सही रूप मे "एक ऐतिहासिक महाधिवेशन, हमारी पार्टी के महाधिवेशनों का शिखर" कहा है।

पच्चीस वर्षों के इस काल मे बल्गेरिया की द्रुतगति से प्रगति हुई है उस पर संतोष होना स्वाभाविक था। 1949 मे बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने महामंत्री के पद को कायम कर जॉर्जी दिमित्रोव को उस पद के लिए चुना। उसके बाद

ऐतिहासिक बारहवें महाधिवेशन में पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामंत्री के पद को फिर से चालू किया और इस महाधिवेशन में जिस केन्द्रीय समिति को चुना उसने स्वाभाविकतः टोडोर जिवकोव को महामंत्री चुना। यह वर्ष 1981 न सिर्फ अप्रैल पूर्णाधिवेशन की 25वीं वर्षगांठ का वर्ष था बल्कि इसी वर्ष टोडोर जिवकोव ने अपने जीवन के 70 वर्ष पूरे कर लिये।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने, उसकी केन्द्रीय समिति ने, यह निर्णय लेकर एक वास्तविकता को पार्टी के भीतर वैधानिक रूप दिया।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और उसके नेतृत्व ने किस कठिन रास्ते से गुजर कर, परन्तु कुशलता से जनवादी बल्गेरिया को एक विकसित समाजवादी देश बनाने का कार्य किया है और उसमें टोडोर जिवकोव की जो भूमिका रही है उसका एक संक्षिप्त इतिहास यहाँ दिया गया है।

परन्तु इस काल और इसकी विशेषताओं को समझने के लिए इतना ही कह देना पर्याप्त नहीं।

जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं टोडोर जिवकोव की नेतृत्वकारी भूमिका की यह विशेषता है कि जिस काल में जिस क्षेत्र में जो बात सबसे ज्यादा महत्व की हो उसका मूल्यांकन करना, उसकी सैद्धान्तिक और वैज्ञानिक ढंग से व्याख्या करना और साथ-ही-साथ उस कार्य को ठोस रूप से पूरा करने का मार्गदर्शन, यहाँ तक कि उसे पूरा करने के लिए आवश्यक संगठनात्मक ढांचे को भी उजागर कर, यह सब एक साथ करना और करते रहना। साथ ही पार्टी के सामान्य-से-सामान्य कार्यकर्ता से खुला और सीधा सम्पर्क रखना यह उनकी कार्यशैली की विशेषता है। कुछ बातों का इस संदर्भ में उल्लेख करना आवश्यक है।

अप्रैल 1956 की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में टोडोर जिवकोव द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर पूरी बहस के बाद जो समापन भाषण दिया उसमें उन्होंने कहा कि "हमारी पार्टी की एकता और उसकी सही नीति के विरुद्ध यदि कोई गलत तत्व गुमराह करने वाला प्रचार करे तो सारी पार्टी को उन्हें करारा जवाब देना चाहिए।

दिमित्र ब्लागोएव, जॉर्जी किरकोव, वसिल कोलेरोव द्वारा निर्मित और शिक्षित हमारी पार्टी और हमारी पार्टी के महान नेता व साथ-ही-साथ अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के अग्रणी नेता जॉर्जी दिमित्रोव द्वारा शिक्षित हमारी यह पार्टी चाहे थोड़े काल तक इसमें गलत रुझान उत्पन्न हो जाय परन्तु इसमें वह आन्तरिक शक्ति है कि वह इन गलत रुझानों से लड़कर उन्हें समाप्त कर सके। व्यक्ति पूजा की गंभीर गलत रुझान और उस कारण जो गंभीर नकारात्मक परिणाम हुए उनसे भी संघर्ष कर हमारी पार्टी सही रास्ते पर अग्रसर हो गयी।"

आगे आने वाले काल में ऐसी गलतियाँ न हों इसके लिए यह आवश्यक है कि

"केन्द्रीय समिति कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने के पहले ऐसे तरीके अपनाए जिनसे कि उसे पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं की राय का पहले ही आभास हो जाए।"

पार्टी में सही लेनिनवादी तरीको की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के 20वें महाधिवेशन में इस बात को स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पार्टी का नेतृत्व कोई ऐसे लोगो का ग्रुप नहीं है जो व्यक्तिगत सम्बन्धों के आधार पर या व्यक्तिगत हितो के लिए एक-दूसरे से जुड़ा हुआ हो। वह तो सक्रिय नेताओ की एक टीम है, जिनके सम्बन्ध विचारधारा और सिद्धान्तों के सही और मजबूत आधार पर बने हुए हैं। इन सम्बन्धों में न तो एक-दूसरे की कमजोरियो को बर्दाश्त करना उचित है और न ही व्यक्तिगत पसन्द या नापसन्दगी का इनमें कोई स्थान होना चाहिए। हमें चाहिए कि हमारी केन्द्रीय समिति को हम इसी आधार पर एकताबद्ध करें जिससे कि सारी पार्टी का हित आगे बढ़ाया जा सके।"

टोडोर जिवकोव ने इसी भाषण में इस बात पर जोर दिया कि हमें सोवियत संघ के प्रति और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अपना प्रगाढ़ प्रेम और आदर को सदा मजबूत करना चाहिए। "हमारी पार्टी ने सोवियत संघ की महान कम्युनिस्ट पार्टी के अनुभव और बुद्धिमानी से सदा सीख ली है और लेती रहेगी।"

हालांकि केन्द्रीय समिति के बहुत बड़े बहुमत ने उनकी रिपोर्ट का जोरदार अनुमोदन किया और व्यक्ति पूजा की लेनिनवाद विरोधी और पार्टी तथा समाजवादी व्यवस्था के लिए घातक रुझान की कठोर आलोचना की, परन्तु टोडोर जिवकोव जानते थे कि इस भूल को सुधारने और सारी पार्टी को सही दिशा मे प्रवृत्त करने तथा साथ-ही-साथ उसकी एकता को कायम रखने और मजबूत बनाने के कार्य मे धैर्य रखना आवश्यक है। इसके लिए व्यापक सैद्धान्तिक शिक्षा और समझाने का कार्य करना होगा। इसलिए उन्होंने अपने समापन भाषण में कहा कि—

"साथियो, केन्द्रीय समिति के इस पूर्णाधिवेशन को सारी पार्टी को यह महत्वपूर्ण सबक भी सिखाना होगा कि हम जो आलोचना कर रहे हैं और जो काफी सख्त है, इसका उद्देश्य किसी साथी को समाप्त करना नहीं है।

हमारी आलोचना भाईचारे और मित्रता से प्रेरित है और इसका उद्देश्य यह है कि जिन साथियों ने गम्भीर गलतियां की हैं वे उन्हें समझ पायें, अपने आप को सुधारने का प्रयत्न करें और फिर से पार्टी की सही नीति के ढांचे मे कार्य कर पायें। यदि इस बात को हम सही रूप से समझा पाये तो इसका सारी पार्टी की शिक्षा मे बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।"

टोडोर जिवकोव ने जो स्थापनाएँ की उसके अनुरूप और उपयुक्त समय पर सही कार्य किया। अप्रैल '56 की मीटिंग के बाद पार्टी का 7वाँ महाधिवेशन हुआ। तब तक सारी शक्ति इस बात पर लगायी गयी कि पार्टी के नेतृत्वकारी

साथियों में वैचारिक सैद्धान्तिक सही समझ पैदा की जाय। पार्टी के सातवें महाधिवेशन के बाद नवम्बर 1962 में हुए आठवें महाधिवेशन तक पार्टी के सामान्य कार्यकर्ताओं को शिक्षित किया गया।

इस काल में करीब चार लाख कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों और छः लाख गैर-पार्टी लोगों को सही विचारधारा के आधार पर शिक्षित किया गया। जब स्थिति परिपक्व हो गयी तब पार्टी के आठवें महाधिवेशन के तुरन्त पहले हुए केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में बुल्को चेरवेन्कोव को केन्द्रीय समिति से हटाया तथा पार्टी सदस्यता से भी हटा दिया। उनके सहयोगी अन्य प्रमुख साथियों के विरुद्ध भी अनुशासन की कार्रवाई की गयी। इतनी तैयारी, सैद्धान्तिक, वैचारिक समझ बढ़ाने की प्रक्रिया पूरी करके, पार्टी के करीब बीस हजार स्थानीय संगठनों को सक्रिय करके और साथ-ही-साथ इस बात की व्यवस्था करके कि पार्टी के ज्यादातर सदस्य खुद उत्पादन कार्य में लग जायें, यह सब करने के बाद ही अनुशासन की कार्रवाई की गयी। ध्यान रहे कि तब तक यह स्थिति पैदा हो गयी थी, कि पार्टी सदस्यों में से 67 प्रतिशत लोग उत्पादन के क्षेत्र में कार्य करने लगे थे और करीब 49 प्रतिशत तो खुद सीधा उत्पादन करने में संलग्न हो गये थे।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के इस आठवें महाधिवेशन में उन्होंने उस ऐतिहासिक अप्रेल पूर्णाधिवेशन में चर्चा की हुई बात को फिर विस्तार से बताया। उन्होंने कहा—

"बुल्को चेरवेन्कोव की व्यक्ति पूजा की गलत और गैर-लेनिनवादी नीतियों और तरीकों तथा इसी प्रकार के नेतृत्व के तरीकों का प्रभाव कुछ काल के लिए हमारी पार्टी में हावी रहा। व्यक्ति पूजा के तरीकों ने पार्टी के कार्य को एकदम कम महत्त्व के स्थान पर पहुँचा दिया। जनता के स्थान की लगभग अनदेखी की गयी। पार्टी की केन्द्रीय समिति के स्थान और महत्त्व को भी गौण बना दिया गया।

इन गैर मार्क्सवादी परिस्थितियों में समाजवादी कानून के गम्भीर उल्लंघन के कार्य किये गये। बिना वाजिब और सही कारणों के कई पार्टी के साथियों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया गया। पार्टी और राज्य शासन में कई प्रमुख साथियों पर शक करना शुरू कर दिया गया और उन पर चुपके-चुपके निगरानी रखना शुरू कर दिया गया। पार्टी में भय, गैर-विश्वास तथा शक का वातावरण बन गया। आज जब हम इन बातों का उल्लेख करते हैं तब लगता है कि यह भयावह सपना था परन्तु उन दिनों पार्टी में यह हकीकत थी थी।

पार्टी के आठवें महाधिवेशन तक पार्टी ने इस गम्भीर गलत रुझान से मुक्ति पाकर पुनः सही लेनिनवादी कार्यशैली लागू कर दी।

इसके बाद, इसकी ठोस तैयारी, पार्टी के भीतर सर्वांगीण स्थिति पूरी परिपक्व कर ही केन्द्रीय समिति ने संगठनात्मक और अनुशासनात्मक कदम उठाये। यह

।र।जवकाव के नेतृत्व की विशेषता है। इसी का परिणाम यह हुआ कि न
ो समूची पार्टी की एकता सुदृढ़ हुई बल्कि पार्टी में प्रजातंत्र, परस्पर विश्वास,
ाता, पहल कर जिम्मेवारी से निर्णय लेने का तरीका, यह सब विकसित हुआ।
खेती के क्षेत्र का ही उल्लेख करें।

खेती के क्षेत्र में सहकारिता का कार्य तो जनवादी क्रान्ति के तुरन्त बाद शुरू
या। परन्तु उसके विस्तार के लिए भौतिक और मनोगत स्थितियों का पर्याप्त
ास होने पर ही इस कार्य में गति आ सकती थी। हालांकि सहकारी खेत में
ातर किसानों को शामिल करने का कार्य 1958 में पूरा हो गया था। परन्तु
सुधार, सहकारी खेत और राजकीय खेतों की स्थापना के कई वर्षों बाद
6-70 के काल में एक नया सगठनात्मक परिवर्तन लागू किया गया। सह-
खेतों तथा राजकीय खेतों को मिलाकर उनकी यूनियनें बनाई गईं।
। प्रत्येक ऐसी यूनियन के पास औसत जमीन काफी ज्यादा हो
मशीनीकरण का पूरा उपयोग करने का मार्ग खुल गया। आगे चलकर
री खेतों तथा राजकीय खेतों को शामिल कर नये संस्थान बनाये गये। इन
ों को खेतिहर-औद्योगिक संस्थानों का रूप दिया गया। कारण यह था कि
र उत्पादन की कुछ वस्तुएँ जैसे तम्बाकू, अगूर, फल इत्यादि से अन्य वस्तुएँ भी
ात्रा में बनने लगी थीं। उत्पादन क्षमता का पूर्णरूपेण उपयोग करने के लिए
ावश्यक था।

सके बाद जब विकास और बढ़ा और इस बात की आवश्यकता उत्पन्न हुई
ं बल्गेरिया में भौगोलिक स्थिति, जमीन की किस्म, सिंचाई के साधन,
ात के साधन, सबको ध्यान में रखकर किस क्षेत्र में किस वस्तु के उत्पादन
ामिकता दी जाय, यह करना आवश्यक हो गया तब इन खेतिहर-औद्योगिक
। की एक राष्ट्रीय यूनियन बना दी गयी। मंत्रालय के कार्य भी इससे
ात कर दिये गये।

क्सवाद लेनिनवाद की यह मूल स्थापना है कि इन सिद्धान्तों पर दृढ़ रहते
साथ हर देश की कम्युनिस्ट पार्टी अपने देश की विशेष परिस्थितियों के अनुरूप
ों का हल निकालती है। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी, उसके नेतृत्व और
र उसके प्रमुख नेता टोडोर जिवकोव ने खेती के क्षेत्र में जो नये रूप
नात्मक ढाँचा बनाया है, उसके बहुत उपयोगी परिणाम मिल रहे हैं। यह
बल्गेरिया की विशिष्टता है और इसे मार्क्सवाद के क्रियात्मक विकास की
कहा जा सकता है।

सब सुधार न तो एक साथ किये गये और न ही मनोगत आधार पर किये
। दौर में उत्पादन की जो परिस्थितियाँ परिपक्व होती गयीं और उनसे
याएँ उत्पन्न होने लगीं और यह आवश्यक हो गया कि उत्पादकता और

साधनों का पूर्ण लाभ उठाने के लिए व्यवस्था के ढांचे में परिवर्तन आवश्यक और परिपक्व हो गया तब उसी प्रकार का परिवर्तन लागू किया गया।

टोडोर झिवकोव के नेतृत्व की विशेषता की यह एक और मिसाल है।

यही बात औद्योगिक क्षेत्र पर भी लागू होती है। ताप बिजलीघर को विशाल रूप दिया गया, परन्तु हल्के किस्म के कोयले के कारण खर्च ज्यादा हो रहा था। मुनाफा भले हो रहा हो परन्तु राष्ट्रीय अर्थतंत्र के लिए कुछ सुधार करना आवश्यक हो गया था तब इंजीनियरों को प्रोत्साहित कर कोयले के उपयोग का एक नया अति आधुनिक तरीका अपनाया गया जिससे लाखों लेव की बचत हुई। इस प्रकार के व्यावहारिक प्रश्नों को हल करने में टोडोर झिवकोव विशेष दिलचस्पी लेते हैं और इंजीनियरों, वैज्ञानिकों और कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

ताप बिजलीघर विकास के साथ, बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी केन्द्रीय समिति और विशेषकर टोडोर झिवकोव ने ठीक समय पर यह निर्णय लिया कि अब बल्गेरिया को आणविक बिजलीघर संयंत्र के निर्माण को हाथ में लेना चाहिए। 1974 में आणविक बिजलीघरों के निर्माण का कार्य शुरू कर दिया गया। आज बल्गेरिया के कुल बिजली उत्पादन का करीब एक-चौथाई भाग इस आणविक बिजलीघर संयत्र से प्राप्त होता है।

अब बल्गेरिया में एक नये आणविक बिजलीघर संयंत्र का कार्य चालू हो चुका है। पहले वाले संयत्र में प्रत्येक रिएक्टर 440 किलोवाट क्षमता का है जो इस नये संयंत्र में प्रत्येक रिएक्टर 1000 किलोवाट क्षमता का होगा।

उपयुक्त समय पर, परिपक्व मौके पर, सही ठोस कार्य हाथ में लेना समाजवादी योजना प्रक्रिया और किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व की गतिशीलता तथा उसकी ठोस सैद्धान्तिक परिपक्वता की निशानी है।

बिजली उत्पादन में बल्गेरिया कई देशों से आगे है और यह दूसरा आणविक बिजलीघर संयंत्र पूरा हो जाएगा तो विश्व-भर में पहले कुछ देशों की गणना में पहुँच जाएगा।

आज बल्गेरिया उच्च स्तर के समाजवाद के निर्माण कार्य में काफ़ी प्रगति कर चुका है। परन्तु बल्गेरिया का अर्थतंत्र एक खुला अर्थतंत्र है। समाजवाद की इस उच्च स्थिति पर और तेजी से प्रगति करने के लिए अब यह बात अत्यन्त आवश्यक हो गयी है कि जो भी चीज उत्पादित की जाय, उसकी किस्म, उसके गुणवत्ता में वृद्धि की जानी चाहिए। आने वाले कुछ वर्षों में द्रुतगति की प्रगति कायम रखने और उसे और आगे बढ़ाने में यह प्रश्न एक निर्णायक कुंजी बन गया है।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने इसी वर्ष की शुरुआत में [illegible] विशेष अधिवेशन किया जिसमें विचार करने का मुख्य विषय था

क्वालिटी में सुधार। उत्पादन क्षेत्र में किस्म और गुणवत्ता को कैसे बढ़ाया जाय।

टोडोर ज़िवकोव ने इस प्रश्न की सैद्धान्तिक व्याख्या की और ठोस सुझाव भी प्रस्तुत किये।

इस विशेष अधिवेशन में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में टोडोर ज़िवकोव ने कहा—

"आज तक हमने जो कामयाबियाँ प्राप्त की हैं उन पर जहाँ हम सन्तोष व्यक्त करते हैं वहीं हम अपनी कमजोरियों तथा उच्चस्तरीय समाजवादी व्यवस्था के निर्माण में आनेवाले काल में प्रगति करने के कार्य में अपने आप उत्पन्न हो रही समस्याओं की अनदेखी भी नहीं कर सकते।"

टोडोर ज़िवकोव के अनुसार जो सबसे महत्वपूर्ण समस्या हमारे सामने उठ खड़ी हुई है वह एक वस्तुगत माँग है और वह है हर क्षेत्र के कार्य में किस्म व गुणवत्ता का सुधार किया जाय। "इस समस्या का हमें कोई एक हल नहीं बल्कि इसका सर्वांगीण हल निकालना होगा।"

उन्होंने अप्रैल लाइन का उल्लेख करते हुए कहा कि उस रास्ते पर चल कर हमने पार्टी और सार्वजनिक जीवन में लेनिनवादी सिद्धान्तों को लागू किया है जिससे हमारे अर्थतंत्र ने द्रुतगति से विकास किया है, हर क्षेत्र में प्रगति प्राप्त की है तथा हमारे देश की जनता की राजनीतिक एकता मजबूत हुई है।

इस समस्या का हल निकालने को आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य इसलिए माना जाना चाहिए क्योंकि इसी के हल करने पर हम पार्टी के बारहवें महाधिवेशन में दर्शाये हुए उद्देश्यों को प्राप्त कर पाएँगे तथा साथ-ही-साथ हम अंतर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन और समाजवादी देशों के बीच आर्थिक समन्वय के कार्य में कारगर भूमिका अदा कर पाएँगे। उन्होंने यह भी कहा कि इस समस्या के हल करने से हम वर्तमान पेचीदा परिस्थिति में राष्ट्र रक्षा के कर्तव्यों को सही रूप से पूरा कर पाएँगे और हमारे देश की जनता के आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर को बढ़ा पाएँगे।

इस सन्दर्भ में टोडोर ज़िवकोव ने दुनिया में हो रही तकनीकी वैज्ञानिक क्रांति का उल्लेख करते हुए कहा कि आज यह एक वस्तुगत आवश्यकता और नियम बन गया है। उन्होंने कहा कि इसके लिए आवश्यक है कि वर्तमान मशीनरी व उत्पादन के साधनों के स्तर को और ऊँचा उठाया जाय। साथ ही उत्पादन में नयी टेक्नोलॉजी का ज्यादा-से-ज्यादा उपयोग आवश्यक है। इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने यह सुझाव दिया कि अब हम जो नया पूँजीगत खर्च करें उसमें यह तय कर दें कि उसका 70 से 75 प्रतिशत भाग मौजूदा उत्पादन तरीकों में नयी टेक्नोलॉजी के विस्तार और नयी टेक्नोलॉजी के उपयोग के लिए ही लगाया जाएगा। इससे उत्पादन में और ज्यादा प्रगति सम्भव हो पाएगी।

उन्होंने कहा—"बल्गेरिया का अर्थतंत्र एक खुला अर्थतंत्र है इसलिए बल्गेरिया का अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन में भाग लेना और खासकर समाजवादी देशों से

साधनों का पूर्ण लाभ उठाने के लिए व्यवस्था के ढांचे में परिवर्तन आवश्यक और परिपक्व हो गया तब उसी प्रकार का परिवर्तन लागू किया गया।

टोडोर जिवकोव के नेतृत्व की विशेषता की यह एक और निशान है।

यही बात औद्योगिक क्षेत्र पर भी लागू होती है। ताप बिजलीघर को विकसित किया गया, परन्तु हल्के किस्म के कोयले के कारण खर्च ज्यादा हो रहा था। मुनाफा भले हो रहा हो परन्तु राष्ट्रीय अर्थतंत्र के लिए कुछ सुधार करना आवश्यक हो गया था तब इंजीनियरों को प्रोत्साहित कर कोयले के उपयोग का एक नया अति आधुनिक तरीका अपनाया गया जिससे लाखों लेव की बचत हुई। इस प्रकार के व्यावहारिक प्रश्नों को हल करने मे टोडोर जिवकोव विशेष दिलचस्पी लेते हैं और इंजीनियरों, वैज्ञानिकों और कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

ताप बिजलीघर विकास के साथ, बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी केन्द्रीय समिति और विशेषकर टोडोर जिवकोव ने ठीक समय पर यह निर्णय लिया कि अब बल्गेरिया को आणविक बिजलीघर संयंत्र के निर्माण को हाथ में लेना चाहिए। 1974 मे आणविक बिजलीघरों के निर्माण का कार्य शुरू कर दिया गया। आज बल्गेरिया के कुल बिजली उत्पादन का करीब एक-चौथाई भाग इस आणविक बिजलीघर संयंत्र से प्राप्त होता है।

अब बल्गेरिया मे एक नये आणविक बिजलीघर संयंत्र का कार्य चालू हो चुका है। पहले वाले संयंत्र मे प्रत्येक रिएक्टर 440 किलोवाट क्षमता का है जो इस नये संयंत्र मे प्रत्येक रिएक्टर 1000 किलोवाट क्षमता का होगा।

उपयुक्त समय पर, परिपक्व मौके पर, सही ठोस कार्य हाथ में लेना समाजवादी योजना प्रक्रिया और किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व की गतिशीलता तथा उसकी ठोस सैद्धान्तिक परिपक्वता की निशानी है।

बिजली उत्पादन में बल्गेरिया कई देशों से आगे है और यह दूसरा आणविक बिजलीघर संयंत्र पूरा हो जाएगा तो विश्व-भर में पहले कुछ देशों की गणना मे पहुँच जाएगा।

आज बल्गेरिया उच्च स्तर के समाजवाद के निर्माण कार्य मे काफ़ी प्रगति कर चुका है। परन्तु बल्गेरिया का अर्थतंत्र एक खुला अर्थतंत्र है। समाजवाद की इस उच्च स्थिति पर और तेजी से प्रगति करने के लिए अब यह बात अत्यन्त आवश्यक हो गयी है कि जो भी चीज उत्पादित की जाय, उसकी किस्म, उसके गुणवत्ता मे वृद्धि की जानी चाहिए। आने वाले कुछ वर्षों मे द्रुतगति की प्रगति कायम रखने और उसे और आगे बढाने मे यह प्रश्न एक निर्णायक कुंजी बन गया। - मे

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने इसी वर्ष पार्टी का एक विशेष अधिवेशन किया जिसमें विचार

जैसाकि उल्लेख किया जा चुका है बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा यह विशेष सम्मेलन बुलाया जाना और उसमें टोडोर जिवकोव की यह रिपोर्ट प्रस्तुत होना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि द्रुतगति से आर्थिक प्रगति के मौजूदा स्तर पर किस्म और गुण के सुधार के कार्यक्रम को हाथ में लेना अब वस्तुगत तौर पर परिपक्व हो गया है।

इस रिपोर्ट में टोडोर जिवकोव ने उसके सैद्धान्तिक आधार तथा कुछ व्यावहारिक सुझावों को सामने रखा। इसमें नयी पूंजी निवेश का 70 से 75 प्रतिशत भाग मौजूदा उत्पादन क्षमता में ही टेक्नोलॉजी के विस्तार और सुधार के लिए लगाना, कार्य टीम के साथ पीस रेट तरीके को लागू करना, एक ही वस्तु के विभिन्न उत्पादकों के बीच उपभोक्ता की पसन्द का ठोस मूल्यांकन हो सके इसके लिये समाजवादी होड़ लागू करना इत्यादि कुछ मुख्य बातों का उल्लेख है। परन्तु यह निश्चित बात है कि बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी, उसकी केन्द्रीय समिति और पोलित ब्यूरो अब इस कार्यक्रम के सभी व्यावहारिक पहलुओं, इसके लिए आवश्यक संगठनात्मक परिवर्तनों को लागू करने इत्यादि ठोस बातों की गहराई में जायगी और पूरी पार्टी को क्रियाशील कर कुछ ही वर्षों में इस नये नारे को मूर्तरूप दे देगी। कुछ वर्षों में जनवादी बल्गेरिया उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ पाएगा।

इस प्रकार हर मौके पर परिपक्व, उपयुक्त और आगे विकास के ठोस नारे देना, उनका सैद्धान्तिक विवेचन करना तथा ठोस हल सुझाना टोडोर जिवकोव के नेतृत्व की यही विशेषता है।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के जीवन में, बल्गेरिया में उच्चस्तरीय समाजवादी व्यवस्था के निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने में और बल्गेरिया के सारे जन-जीवन में, अप्रैल प्लीनम की उस ऐतिहासिक वसन्त रास्ते की लाभदायक छाप अभी तक है। इसीलिए इसे ऐतिहासिक वसन्त कहा जाता है।

इसका चित्र आगे के अध्यायों में उल्लिखित बातों में और ठोस रूप से सामने आता रहेगा।

9313

समन्वय बढाना अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य में सोवियत संघ के साथ ऐसे समन्वय को प्राथमिक महत्व देना, बल्गेरिया की मुख्य अर्थनीति होनी चाहिए।"

उत्पादन में किस्म और गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए एक बड़ा महत्वपूर्ण कार्य यह है कि समाजवादी सामाजिक रिश्तों को खासकर समाजवादी सम्पत्ति के मालिक और मैनेजरों के बीच सम्बन्धों में और सुधार किया जाय।

उन्होंने यह स्थापना की कि समाजवादी सम्पत्ति का मालिक है, समाजवादी राज्य और मैनेजर है श्रमिक अथवा श्रमिकों की कार्य टीम।

उन्होंने कहा : "कार्य टीमें वास्तव में मैनेजर का कार्य खूबी से पूरा कर पाएँ इसके लिए उनके बीच और मालिक अर्थात राज्य के बीच परस्पर सम्बन्ध आर्थिक आधार पर बनाये जाने चाहिए और इसमें काम के अनुपात से भुगतान, जिसे पीस रेट तरीका कहते हैं, की प्रमुखता दी जानी चाहिए।"

टोडोर जिवकोव ने यह जो स्थापना की है उसका अर्थ है समाजवादी भौतिक प्रोत्साहन के सिद्धान्त को एक नया मूर्त रूप देना। जितना उत्पादन ज्यादा हो उसी अनुपात में उसका फल भी कार्य करने वाले या कार्य टीम को मिले।

हम किस्म या गुण में सुधार मनोगत तरीके लागू करके प्राप्त नहीं कर सकते। यह तो तभी सम्भव हो पाएगा जब हम मूल्य और वस्तु-कीमत सम्बन्धों के आर्थिक नियम के आधार पर कार्य करें।

इस सन्दर्भ में उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि उत्पादक और उपभोक्ता का भी सीधा सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। निर्मित चीजों की किस्म या गुण में सुधार का एक महत्वपूर्ण मापदण्ड है कि उपभोक्ता उसे पसन्द करे और उस वस्तु विशेष की खपत बाजार में आसानी से हो। यह नियम देश के उपभोक्ताओं के लिए ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में भी लागू होता है। उन्होंने यह भी कहा कि उपभोक्ता की पसन्द के आधार पर उसी वस्तु के विभिन्न उत्पादकों के बीच समाजवादी होड़ को प्रोत्साहित करना उपयोगी होगा।

टोडोर जिवकोव ने कहा कि हम आम जनता को इतिहास का निर्माणकर्ता मानते हैं, यह बात सही है। इसे ध्यान में रख समाजवादी प्रजातंत्र को और ज्यादा विकसित करना भी अत्यन्त आवश्यक है।

अन्त में उन्होंने कहा कि सारे माल तथा चीजों की किस्म और गुण में सुधार, यह सारे समाज के सामने एक उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। "इस कार्यक्रम को हमारे देश में उच्च कोटि के समाजवाद के निर्माण कार्य का एक अभिन्न अंग माना जाना चाहिए।"

इस तथ्य पर जोर देते हुए उन्होंने यह कहा कि इस कार्यक्रम को एक वैज्ञानिक सैद्धान्तिक स्तर पर सारी पार्टी को आत्मसात कर लागू करना चाहिए।

जैसाकि उल्लेख किया जा चुका है बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा यह विशेष सम्मेलन बुलाया जाना और उसमें टोडोर जिवकोव की यह रिपोर्ट प्रस्तुत होना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि द्रुतगति से आर्थिक प्रगति के मौजूदा स्तर पर किस्म और गुण के सुधार के कार्यक्रम को हाथ में लेना अब वस्तुगत तौर पर परिपक्व हो गया है।

इस रिपोर्ट में टोडोर जिवकोव ने उसके सैद्धान्तिक आधार तथा कुछ व्यावहारिक सुझावों को सामने रखा। इसमें नयी पूंजी निवेश का 70 से 75 प्रतिशत भाग मौजूदा उत्पादन क्षमता में ही टेक्नोलॉजी के विस्तार और सुधार के लिए लगाना, कार्य टीम के साथ पीस रेट तरीके को लागू करना, एक ही वस्तु के विभिन्न उत्पादकों के बीच उपभोक्ता की पसन्द या ठोस मूल्यांकन हो सके इसके लिये समाजवादी होड़ लागू करना इत्यादि कुछ मुख्य बातों का उल्लेख है। परन्तु यह निश्चित बात है कि बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी, उसकी केन्द्रीय समिति और पोलित ब्यूरो अब इस कार्यक्रम के सभी व्यावहारिक पहलुओं, इसके लिए आवश्यक संगठनात्मक परिवर्तनों को लागू करने इत्यादि ठोस बातों की गहराई में जायगी और पूरी पार्टी को क्रियाशील कर कुछ ही वर्षों में इस नये नारे को मूर्तरूप दे देगी। कुछ वर्षों में जनवादी बल्गेरिया उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ पाएगा।

इस प्रकार हर मौके पर परिपक्व, उपयुक्त और आगे विकास के ठोस नारे देना, उनका सैद्धांतिक विवेचन करना तथा ठोस हल सुझाना टोडोर जिवकोव के नेतृत्व की यही विशेषता है।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के जीवन में, बल्गेरिया में उच्चस्तरीय समाजवादी व्यवस्था के निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने में और बल्गेरिया के सारे जन-जीवन में, अप्रेल प्लीनम की उस ऐतिहासिक बसन्त रास्ते की लाभदायक छाप अभी तक है। इसीलिए इसे ऐतिहासिक बसन्त कहा जाता है।

इसका चित्र आगे के अध्यायों में उल्लिखित बातों में और ठोस रूप से सामने आता रहेगा।

तीन दिन बराबर एक वर्ष

बल्गेरिया की द्रुतगति से हो रही प्रगति का अंदाज इस बात से ही लग सकता है कि 1939 में पूरे वर्ष भर में बल्गेरिया के अर्थतंत्र में जितना उत्पादन होता था उतना उत्पादन आज बल्गेरिया में तीन दिनों में हो जाता है।

1939 की तुलना में कुछ क्षेत्रों में तो प्रगति प्रतिशत में नहीं बल्कि इतने गुना वृद्धि हुई इस रूप में आंकी जाती है। मशीन निर्माण और धातु उत्पादन कार्य में इस काल में 1278 गुना वृद्धि हुई है। रासायनिक और रबर उद्योगों में यह वृद्धि 562 गुना हुई है, लौह निर्माण और खदानों के उत्पादन में यह वृद्धि 957 गुना हुई है। बिजली ऊर्जा के क्षेत्र में यह वृद्धि 124 गुना हुई है।

द्रुतगति की इस प्रगति का एक चित्र इस बात से भी मिल जाएगा जब हम यह देखें कि विशेष वस्तुओं के उत्पादन में किस तेज गति से वृद्धि हुई है और उस वस्तु का पूरे वर्ष में हो रहा उत्पादन आज कितने दिनों में पूरा कर लिया जाता है।

1956 में निम्न वस्तुओं का पूरे वर्ष में जितना उत्पादन होता था अब वह कुछ ही दिनों में पूरा हो जाता है। आँकड़े इस प्रकार हैं :

बिजली	20 दिन
खनिज लोहा तथा लोह मिश्रित धातु	2 दिन
इस्पात	18 दिन
पेट्रोल व डीजल मोटर इंजन	25 दिन
बिजली से चलने वाले मोटर इंजन	30 दिन
मोटर कार की बैटरियाँ	7 दिन
रासायनिक खाद (नाइट्रोजन)	29 दिन
सोडा एश	20 दिन
गंधक का तेजाब	12 दिन
सीमेंट	60 दिन

1952 की तुलना में बल्गेरिया की राष्ट्रीय आय में 9.38 गुनी वृद्धि हुई है।

पूरा सामाजिक उत्पादन 12 गुना ज्यादा हो गया है।

औद्योगिक उत्पादन आज राष्ट्रीय आय का 55.9 प्रतिशत है जब कि 19
में यह केवल 28.5 प्रतिशत था।

उत्पादन के क्षेत्र मे बुनियादी उद्योगो मे 1952 की तुलना मे 29 गुना वृ
हुई है। लोगों के काम आने वाली वस्तुओ के उत्पादन मे उसी काल मे 13 गु
वृद्धि हुई है। सब मिलाकर औसत वृद्धि 20 गुना हुई है। यह प्रगति उद्योग अ
खेती के विस्तार तथा नए संयंत्र और कार्य शुरू करने के अलावा प्रति व्यक्ति
उत्पादन स्तर मे वृद्धि के कारण हुई है जो एक बहुत महत्वपूर्ण बात है। प्र
व्यक्ति श्रमिक उत्पादकता की वृद्धि इस काल मे करीब 9.5 गुना हुई है।

इस प्रगति के विभिन्न पहलुओ के आँकड़े भी इतने ही रोमांचक हैं। बिज
उत्पादन जो 1952 मे 352 किलोवाट प्रति घंटे था वह 1983 मे बढ़कर 426
किलोवाट प्रति घंटे हो गया है। प्रति व्यक्ति बिजली उत्पादन मे बल्गेरिया
पोलैण्ड, ग्रीक इटली इत्यादि को भी पीछे रख दिया है। वह फ्रांस के स्तर पर प
रहा है।

इस्पात का उत्पादन जो 1952 मे 6 हजार टन था वह 1983 मे बढ़
28 लाख टन से भी ज्यादा हो गया है। सूती वस्त्र उत्पादन जो 1952
10 करोड़ मीटर था वह 1983 मे 36.5 करोड़ मीटर हो गया है। पीला पत्
जिसका उत्पादन 1952 मे 3600 टन था वह 1983 मे ? 27300 टन
ज्यादा हो गया है। मांस का उत्पादन भी 66 हजार टन से बढ़कर 5 ल
10 हजार टन हो गया है।

गेहूँ का कुल उत्पादन जो 1952 मे 10 लाख टन था वह 1983 मे बढ़
36 लाख टन हो गया है। सूरजमुखी का उत्पादन इसी काल मे 1 ला
84 हजार टन से बढ़कर 4 लाख 48 हजार टन हो गया है। प्रति गाय
सालाना दूध दोहन जो 1952 मे 438 लिटर था वह 1983 मे बढ़कर 302
लिटर हो गया है।

इसका प्रभाव जनजीवन पर भी पड़ा है।

1952 के स्तर को यदि आधार (1952=100) माना जाए तो 198
मे तनख्वाहें 376 हो गई है। प्रति व्यक्ति आय भी इसी मापदंड से 1983
बढ़कर 509 हो गई है। परन्तु एक समाजवादी देश मे वास्तविक जीवन स्तर
सही मूल्यांकन केवल तनख्वाह या प्रति व्यक्ति आय से ही करना सही नहीं होग
तनख्वाह या आय के अलावा समाजवादी राज्य-व्यवस्था मे निःशुल्
शिक्षा चिकित्सा और जन स्वास्थ्य सुविधायें सबको उपलब्ध है। बूढ़े औ
अपंगों को पेंशन दी जाती है। सांस्कृतिक केन्द्र हर स्थान पर उपल
है। छोटे बच्चों की देखभाल के लिए बहुत कम दर पर किंडरगार्टन

सुविधा उपलब्ध है। कारखानों और कार्यालयों में शिशु-गृहों की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है। सरकार आम लोगों के लिए बड़े पैमाने पर रिहायशी मकान बनाती है उनका किराया बहुत कम है। परिवार के एक सदस्य की कमाई का लगभग 8 प्रतिशत किराये के रूप मे परिवार को देना पड़ता है जिसमे गैस और पानी की सुविधा शामिल है। यह किराया औसतन 8 से 12 लेव प्रतिमास है। ये सब सुविधाएँ सामाजिक फण्ड से प्रदान की जाती हैं। तनख्वाहों और प्रति व्यक्ति आय की इस लगभग पांच गुना वृद्धि के अलावा सामाजिक फण्ड में भी इसी स्तर की वृद्धि हुई है। 1952 को यदि आधार वर्ष माना जाय तो सामाजिक फण्ड का आँकडा 1983 मे 517 हो गया था।

लोगो के जीवन मे इस प्रगति का क्या ठोस प्रभाव पड़ा है इसके भी आँकडे बहुत प्रभावशाली हैं।

1952 में प्रति व्यक्ति मांस की खपत जो 21.3 किलो थी वह 1970 में बढ़कर 41.4 किलो हो गई और 1983 मे यह आँकड़ा 69.5 किलो हो गया। दूध की खपत प्रति व्यक्ति 1952 मे 80 लिटर से बढ़कर 1970 में 116 लिटर और 1983 मे 183 लिटर हो गई। सब्जियो की भी खपत 1952 मे 80 किलो प्रति व्यक्ति से बढ़कर 1983 में 108 किलो हो गई। फलो के लिए यह आँकड़ा 91 किलो से बढ़कर 150 किलो हो गया।

खाद्य पदार्थो के अलावा अन्य आवश्यक वस्तुओं के प्रति व्यक्ति खपत के आँकडे भी यही चित्र प्रस्तुत करते हैं। सूती वस्त्रों के उपयोग का आँकड़ा 1952 में 8.6 वर्गमीटर प्रति व्यक्ति से बढ़कर 1970 में 22.2 वर्गमीटर और 1983 में 27.3 वर्गमीटर हो गया।

यह प्रगति आर्थिक क्षेत्र मे ही नही हुई अपितु हर क्षेत्र में हुई है। शिक्षा, जन स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा और तकनीकी अन्वेषण मे लगे लोगो के आँकड़ो मे भी यही चित्र सामने आता है।

किंडरगार्टन मे शिशुओ की सख्या जो 1952 मे 2.5 लाख थी वह 1970 मे 3.3 लाख हो गई और 1983 मे बढ़कर करीब 4 लाख हो गई।

प्रति हजार व्यक्ति के हिसाब मे अस्पतालों में बिस्तरो की सख्या जो 1952 मे 28 थी वह 1983 में बढ़कर करीब 75 हो गई। प्रति हजार जनसंख्या के पीछे नर्सों की सख्या जो 1952 मे 6.4 थी वह 1970 मे बढ़कर 25 3 हो गई और 1983 मे वह 48 2 हो गई। इसी प्रकार प्रति हजार आबादी के पीछे डाक्टरों की सख्या 1952 मे 4.6 से बढ़कर 1983 मे 24 हो गई।

जीवन स्तर मे यह निरन्तर वृद्धि का एक सूचक यह है कि प्रत्येक घर मे आधुनिक सुविधाएँ कितनी हैं।

आज बल्गारिया मे प्रति 100 मकानों में 92 के पास रेडियो है, 87 के पास

1950 से तीन दशक तक के काल में बल्गेरिया की प्रगति की गति इतनी तेज रही है कि उसका दुनिया के अग्रणी देशों में स्थान हो गया है। पिछले 25 वर्षों में बल्गेरिया की राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर लगातार ऊँचे स्तर पर रही। इन 25 वर्षों में प्रगति का औसत सालाना आंकड़ा 8.5 प्रतिशत रहा है। बल्गेरिया को उन नौ देशों में चौथा स्थान प्राप्त है, जिनकी इस काल में श्रमिक उत्पादकता की वृद्धि की दर प्रति वर्ष 5 प्रतिशत से ज्यादा रही है।

दुनिया के जो तीन देश तीव्र गति से औद्योगिक और राष्ट्रीय आय की प्रगति करते रहे हैं। उनमें बल्गेरिया का स्थान तीसरे नम्बर पर है।

आबादी की दृष्टि से बल्गेरिया की आबादी दुनिया की आबादी का केवल पांच सौवां भाग है। परन्तु बल्गेरिया का औद्योगिक उत्पादन दुनिया के कुल औद्योगिक उत्पादन का करीब एक प्रतिशत है।

इस छोटे से देश ने 40 वर्षों के इस काल में जितनी द्रुत गति से प्रगति की है यह न सिर्फ इस बात को प्रमाणित करता है कि समाजवादी व्यवस्था एक उच्चकोटि की व्यवस्था है परन्तु साथ ही साथ बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की प्रशंसनीय और सही मार्गदर्शक भूमिका को भी दर्शाता है।

द्रुतगति से प्रगति की कुछ झांकियां

1946 में जब हज़ारों जोशीले लोग सोफिया स्थित यूनाव स्टेडियम में जमा हुए थे तब बल्गेरिया के उप-प्रधान मंत्री ट्राइचो कोस्टोव ने कहा था—

"मैं देख रहा हूँ कि हमारे देश में हर जगह निर्माण के काम में आने वाली लकड़ी और बाँसों का बना ढांचा खड़ा है। कुछ समय बाद जब हम निर्माण पूरा कर इन लकड़ी और बाँस के ढांचों को हटा देंगे तब हम एक नये बल्गेरिया को देख पायेंगे।"

यह ढांचे और ऊँचे उठते रहे, निर्माणाधीन संस्थानें और ज्यादा पेचीदा और तकनीकी तौर पर उच्चस्तर की होती गईं। आज स्थिति यह है कि बल्गेरिया में 2000 से ज्यादा औद्योगिक संस्थान निर्माण कार्य में लगे हैं। इन संस्थानों में लगी जमा पूंजी 9000 करोड़ डालर की है। इस काल में 105 नये शहरों का निर्माण पूरा कर लिया गया है, सभी गांवों का नये सिरे से निर्माण पूरा कर लिया गया है। काले समुद्र के रमणीक समतल तट पर तथा ऊँची पहाड़ियों पर सैंकड़ों होटल और आधुनिकतम आवास स्थान बनाये जा चुके हैं जहाँ लाखों लोग प्रतिवर्ष विश्राम और मनोरंजन के लिए आते हैं। देश में हज़ारों हज़ार स्कूलों, अस्पतालों, सांस्कृतिक केन्द्रों का निर्माण कर दिया गया है। बल्गेरिया का कायापलट हो गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नवनिर्माण की यह गति जारी है।

राडोमीर में विशालकाय मशीन निर्माण का कारखाना इसकी मिसाल है।

यहाँ प्रति माह क़रीब एक करोड़ डालर से सवा करोड़ डालर का सामान बन रहा है। इसकी दो कार्यशालाएँ चालू हो गई हैं जिनमे प्रतिवर्ष 70 हजार टन धातु से मशीन व अन्य सामान का निर्माण कार्य किया जा रहा है। एक लाख तीस हजार टन की क्षमता वाली फ़ाउण्ड्री और इस्पात का सामान बनाने वाली कार्यशाला शीघ्र ही चालू होने जा रही है।

1990 मे जब इस विशाल संस्थान का निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा तब पूरे बल्कान क्षेत्र मे यह सबसे बड़ा ऐसा कारखाना होगा जिसकी कुल उत्पादन क्षमता होगी 13 लाख टन से भी ज्यादा। ऊर्जा उत्पादन मशीनें, खदान और धातु पर कार्य करने वाली मशीनें यहाँ निर्मित होंगी।

यही स्थिति अर्थतन्त्र के हर क्षेत्र मे नजर आ रही है। महान लेनिन ने कहा था कि समाजवाद का आधार है सोवियत राज्य व्यवस्था और बिजली ऊर्जा। दूसरे महायुद्ध के पहले बल्गेरिया मे प्रति व्यक्ति बिजली ऊर्जा की उपलब्धि केवल 45 किलोवाट घंटे थी। आज यह आँकड़ा 4560 किलोवाट घंटे अर्थात 100 गुने से भी अधिक हो गया है। यह उत्पादन कोयले के उपयोग पर आधारित विशाल बिजलीघरो से भी होता है और साथ ही अतिआधुनिक परमाणु बिजलीघरो से भी।

मरीत्सा पूर्व ऊर्जा निर्माण संस्थान इनमें एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। यह बिजलीघर कोयले का उपयोग करता है। जिस कोयला खदान से यह कोयला प्राप्त करता है वह इसके एकदम पड़ोस मे स्थित है। इस खदान मे कोयले का भण्डार करीब 300 करोड़ टन है।

इसमें से 25 करोड़ टन कोयला उपयोग में लाया जा चुका है। यह कोयला बहुत निम्न स्तर का है। इसमे राख और वाष्प की तादाद करीब 60 प्रतिशत है। हालाँकि इतने निम्न स्तर के कोयले का उपयोग करने के बावजूद यह बिजलीघर मुनाफा देता था। परन्तु कुछ वर्ष पहले अन्वेषण संस्थान के निदेशक निकोला टोडोरोव, जो आज विज्ञान और तकनीक समिति के अध्यक्ष है, इस प्रश्न पर ध्यान दिया। उन्होंने कोयले खनन में ऐसे नये यत्रो का उपयोग शुरू किया जिसमे कोयला बिजलीघर की भट्टी में जाने के पहले ही उसमे से वाष्प और राख की मात्रा हटा दी जाती है। इस नये तरीके का उपयोग मरीत्सा पूर्व के तीसरे नम्बर के बिजलीघर में पहले शुरू किया गया। इससे प्रति किलोवाट घंटे बिजली निर्माण मे 35 ग्राम कोयले की बचत हुई। 35 ग्राम तो बहुत कम मात्रा है परन्तु जब यह ध्यान मे रखा जाय कि यह एक बिजलीघर यूनिट ही एक वर्ष मे 260 करोड़ किलोवाट घंटे बिजली उत्पादन करता था। तब इस नये तरीके से कितने करोड़ डालरो की बचत होती है इसका अंदाज लगाया जा सकता है। 1990 तक मरीत्सा पूर्व के हर बिजलीघर मे नया तरीका लागू कर दिया जाएगा। मरीत्सा पूर्व का यह बिजलीघर यूनिटो का समूह 3360 मेगावाट बिजली उत्पादन दे।

क्षमता रखता है। बल्गेरिया के कुल बिजली उत्पादन का पाँचवाँ भाग इस बिजलीघर के सयंत्र से तैयार हो रहा है।

इस नये तकनीकी तरीके के उपयोग के लिए इन्जीनियरों को टोडोर ज़िवकोव ने व्यक्तिगत तौर पर प्रोत्साहित किया। टोडोर ज़िवकोव ने इसीलिए कहा है कि "कोई भी व्यक्ति नये बल्गेरिया, उसकी शक्ति और कामयाबियों को जानने का दावा नही कर सकता जब तक वह मरीत्सापूर्व के इस सयंत्र को न देखे।"

परन्तु कोयले का भण्डार तो अथाह नही होता। बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने अभी से इसकी कल्पना कर भविष्य को ध्यान मे रखकर कार्य शुरू कर दिया है।

मरीत्सापूर्व तो बल्गेरिया के दक्षिण मे स्थित है। परन्तु बल्गेरिया की उत्तरी सरहद के नजदीक डेन्यूब नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है कोज़लोडोई शहर। अपने मुक्ति दिवस की तीसवी वर्षगाँठ के वर्ष 1974 मे इस शहर मे आणविक बिजलीघर का निर्माण शुरू किया गया। पहला रिएक्टर फिर दूसरा रिएक्टर दोनो प्रत्येक 440 मेगावाट क्षमता के शीघ्र चालू हो गये। सातवी योजना काल (1976-80) मे तीसरा इतनी ही क्षमता वाला रिएक्टर चालू हो गया। 1981 मे चौथा रिएक्टर भी चालू कर दिया गया है। इस आणविक बिजलीघर संयंत्र से सारे बल्गेरिया के बिजली उत्पादन का 26 प्रतिशत भाग तैयार होता है। इस आणविक बिजलीघर का यह रिकार्ड है कि 1980 मे इसने 7000 घंटे कार्य क्षमता का उपयोग करना शुरू कर दिया जो विश्व में एक उच्चकोटि का रिकार्ड है। चौथे रिएक्टर के चालू होने के बाद इस संयंत्र की क्षमता 1760 मेगावाट हो गई। परन्तु कहानी का अभी अन्त कहाँ। इंजीनियर, तकनीकी लोग और कारीगर यह योजना बना चुके हैं कि कोज़लोडोई की बिजली उत्पादन क्षमता 3760 मेगावाट की जाएगी।

इधर डेन्यूब नदी के किनारे पर स्थित बेलेन शहर मे एक नये आणविक बिजलीघर सयन्त्र की आधार शिला रखी जा चुकी है। यहाँ प्रत्येक 1000 मेगावाट क्षमता के चार रिएक्टर चालू किये जायेंगे। यह कल्पना की उड़ान ही कही जा सकती है परन्तु सम्भवतः 1985-1990 की नवी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक यह सब कार्य जब पूरा हो जायगा तब प्रति व्यक्ति बिजली उत्पादन मे बल्गेरिया शायद दुनिया के पहले तीन या चार देशों की श्रेणी मे पहुँच जाएगा।

बल्गेरिया मे मजदूरवर्ग और उसकी कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय और सक्षम नेतृत्व और ठोस मार्गदर्शन मे चलने वाला शासन जिसकी बागडोर पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव और राष्ट्रपति टोडोर ज़िवकोव के पक्के हाथों मे है वह ऐसा शासन है जो इतनी बहुतायत मे बिजली का उत्पादन कर सोवियत राज्य के शुरू के दिनों मे कही गई लेनिन की उस उक्ति को बल्गेरिया मे सार्थक रूप दे रहा है

कि "कम्युनिज्म का अर्थ है सोवियत शासन व्यवस्था और बड़े पैमाने पर बिजली का उत्पादन।"

इस्पात निर्माण क्षेत्र में भी प्रगति की यही कहानी है। बल्गेरिया का क्रेमिकोवस्की इस्पात कारखाना बल्गेरिया का सबसे बड़ा भीमकाय संयंत्र है। यहाँ 22 हजार से ज्यादा मजदूर, इंजीनियर और तकनीकी विशेषज्ञ कार्यरत हैं। इसमे लगी पूँजी करीब 150 करोड़ डालर है। बल्गेरिया का 85 प्रतिशत खनिज लोहा, 80 प्रतिशत इस्पात तथा इस्पात से बनी चादरो का 81 प्रतिशत भाग इस कारखाने मे बनता है। हालाँकि बल्गेरिया मे खनिज लोह खदान बहुत कम है और वह भी उच्चकोटि की नही परन्तु इस्पात उत्पादन के स्तर मे बल्गेरिया ने अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया है।

बल्गेरिया का इस्पात उद्योग अब तकनीकी तरक्की के बड़े डग भर रहा है। 1990 तक बल्गेरिया के कुल इस्पात उत्पादन का दसवाँ भाग उच्चकोटि के इस्पात का होगा अर्थात जग न लगने वाला इस्पात तथा आणविक बिजलीघरों के निर्माण कार्य मे लगने वाला ऊँचे तापमान को सह सकने वाला इस्पात।

कुछ ही समय पहले परनिक के पास बिजली से इस्पात निर्माण की विधि का उपयोग करने वाले एक नये इस्पात संयंत्र का निर्माण चालू कर दिया गया है। इस बात का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है कि 1985 तक बल्गेरिया के कुल इस्पात उत्पादन का 45 प्रतिशत इस्पात उत्पादन बिजली भट्टी के उपयोग से किया जाय। तकनीकी दृष्टि से यह प्रगति अत्यधिक महत्व की है। बल्गेरिया का इस्पात उद्योग दुनिया के तकनीकी मापदण्डो तक पहुँच रहा है।

बिजली भट्टी से इस्पात का उत्पादन दुनिया मे तकनीकी दृष्टि से बहुत उच्चतम प्रणाली है। इतनी ही महत्वपूर्ण या यह कहना चाहिए कि इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण उपलब्धि है अलौह धातुओ के निर्माण कार्य मे। बल्गेरिया मे अलौह धातुओ के खनिज काफी मात्रा मे उपलब्ध हैं। उनका खनन और उससे अलौह धातुओ के निर्माण कार्य मे बल्गेरिया ने आशातीत प्रगति की है।

क्रेमीकोवस्ती खदान से खनिज लोहे के अलावा और धातुएँ भी मिलती हैं। उनमे प्रमुख है सीसा और जस्ता। इन धातुओं को पहले मिट्टी व अन्य चीजों से अलग किया जाता है, अर्थात् उनके कन्सेन्ट्रेट बनाये जाते हैं और उनसे मूल धातु। इस प्रक्रिया में चाँदी मोलिब्डियम इत्यादि धातुएँ भी निकलती हैं।

बल्गेरिया का जस्ता 99.99 प्रतिशत खरा होता है। लदन के स्टॉक एक्सचेंज पर इसे आँख मूद कर स्वीकार किया जाता है।

यही स्थिति ताँबे की है। पिछले कुछ वर्षो से ताँबे के खनिज से खरा ताँबा निकालने की एक नई तकनीकी विधि का उपयोग शुरू किया गया है। इसमे खनिज ताँबे को एक विशेष तरीके से गलाकर उसमे से ताँबा धातु, गंधक का तेजाब

तथा अन्य धातुएँ प्राप्त की जा सकती है। इस विधि से 1985 तक तांबे के उच्च-कोटि के परिष्कृत चूरे का उत्पादन करीब 50 हजार टन बढ़ जाएगा। इसके परिणामस्वरूप बल्गेरिया के अर्थतन्त्र को 2000 टन अतिरिक्त तांबा, 600 टन जस्ता और 10 हजार टन गंधक का भंडार व अन्य मूल्यवान धातुएँ मिलने लगेंगी। ध्यान रहे कि अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में एक टन तांबे का भाव सैकड़ों डालर है। कभी तो वह एक हजार डालर प्रति टन से भी बढ़ जाता है। उत्पादन में यह वृद्धि बल्गेरिया के अर्थतन्त्र को कितना बल देगी इसका अंदाज उपरोक्त बात से लगाया जा सकता है। ये सब धातुएँ ऐसी हैं जिनका उपयोग नये उच्चकोटि के सामान बनाने के लिए इस्पात में मिश्रण करना पड़ता है। उनका बना बनाया अन्तर्राष्ट्रीय बाजार है। यह उपलब्धि बल्गेरिया के उत्पादन में बड़ा योगदान देने के साथ-साथ उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बहुत बड़ा लाभ देगी।

पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने एक सर्वेक्षण कराया था। उसने यह परिणाम निकला कि सीसा, जस्ता, तांबा टंगस्टन, मोलिब्डियम इत्यादि धातुओं की उपलब्धि में यदि 5 प्रतिशत की भी कमी हो जाय तो सारे अर्थतंत्र पर इसका बुरा प्रभाव करीब 25 प्रतिशत होता है। इस विशिष्ट क्षेत्र में जनवादी बल्गेरिया की यह प्रगति अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक क्षेत्र में उसके महत्व को और बढ़ा देती है।

मानव निर्मित क्वार्ट्ज

क्वार्ट्ज एक ऐसा धातु है जो हजारों वर्षों तक प्राकृतिक गर्मी और दबाव इत्यादि के परिणामस्वरूप एकदम स्वच्छ रूप धारण कर लेता है। यह एक ऐसा धातु है जिसमें उसकी बनावट में ही उसके भीतर एक आणविक क्रिया होती है जो नियमित समय की गति से अंदर-ही-अंदर हिलने का कम्पन पैदा करता है। इसका उपयोग हर प्रकार की इलेक्ट्रोनिक वस्तु के निर्माण में किया जाता है। इलेक्ट्रोनिक घड़ी से लगाकर कम्प्यूटर, केलकुलेटर, टेलीविज़न की ट्यूब इत्यादि सैकड़ों ऐसी वस्तुओं में आधारभूत वस्तु है क्वार्ट्ज।

परन्तु प्राकृतिक रूप से जो क्वार्ट्ज मिलता है उसकी मात्रा बहुत कम है। इस थोड़ी सी मात्रा में भी क्वार्ट्ज बनने में हजारों वर्ष लगते हैं।

विज्ञान की तरक्की के इस युग ने मानव द्वारा कम समय में और बड़ी मात्रा में एकदम उच्चकोटि का क्वार्ट्ज निर्माण करने की विधि ईजाद कर ली। इसके फलस्वरूप इलेक्ट्रोनिक वस्तुओं के निर्माण की गति बहुत तेज हो गई है। आज का युग इलेक्ट्रोनिक युग है जिसमें स्वचालित मनुष्यरूपी रोबोट भी निर्मित होने लग गए हैं जो दूर बैठे थोड़े से संचालन मात्र से इंसान जैसा कार्य कर सकते हैं।

दुनिया में बहुत कम ऐसे देश हैं जहाँ मानव निर्मित क्वार्ट्ज का उत्पादन किया जाता है। इन देशों में बल्गेरिया भी एक ऐसा देश है। सोफ़िया में स्थित एक

संयंत्र है जहाँ क्वार्ट्ज का रासायनिक तथा भौतिक विधियों का उपयोग कर क्वार्ट्ज को तैयार किया जाता है। प्रकृति में क्वार्ट्ज खनिज का इसके लिए उपयोग किया जाता है। परन्तु यह खनिज ऐसा है कि इसका तो बिना उच्चकोटि और स्वच्छ क्वार्ट्ज बनाए बगैर औद्योगिक रूप मे कोई उपयोग नही। सोक्रिया स्थित इस संयंत्र मे प्राकृतिक क्वार्ट्ज के खनिज को लेकर भूमिगत निर्मित एक विशाल कर्मशाला मे डाला जाता है। वहाँ वह स्वचालित यत्रो से साफ किया जाता है और उसे ऊँचे तापमान तथा दबाव की स्थितियों मे रखकर कुछ ही सप्ताहों मे उससे स्वच्छ और उच्चकोटि की क्वार्ट्ज की छडें बना ली जाती हैं।

इस संयंत्र को देखने का मुझे सुअवसर मिला। भूमिगत कर्मशाला की पूरी प्रक्रिया मे से गुजर कर स्वच्छ क्वार्ट्ज की करीब आठ बडी छडें जब निकाली गयी उस समय मैं वहाँ मौजूद था। यह एक रोमाचकारी अनुभव था।

इस अनमोल धातु की छडो को फिर संयंत्र के दूसरे भागो में भेजा जाता है। हीरे के टुकडो से जडी मशीनों से इसे काटा जाता है। फिर बहुत छोटे-छोटे और पतले टुकडो के रूप मे इसे तैयार किया जाता है। यह टुकड़े जितने छोटे हो और उसकी सतहे जितनी समतल हो उतना ही ज्यादा यह टुकडा अन्य इलेक्ट्रोनिक सामान के निर्माण मे उपयोगी होता है।

इन छोटे टुकड़ो को जग न लगने वाले इस्पात के बने छोटे-छोटे पुर्जों में लगा दिया जाता है। अब ये टुकडे अन्य सयत्रों को भेजने के लिए तैयार हो गये माने जाते हैं। सैंकडों लोग इस बारीक काम को करते हैं जिनमे ज्यादातर महिलाएँ हैं।

ये टुकडे प्रति सेकण्ड 32768 बार अदरुनी रूप से गोल कंपन करते रहते हैं।

इस सयत्र का निर्माण 14 वर्ष पहले शुरू हुआ था। यह सयत्र तीनों पारियों मे काम करता है। इसमें काम करने वाले लोगों की कुल तादाद 2000 है जिनमें 82 प्रतिशत महिलाएँ हैं। इनमे से प्रति चार कर्मचारियों मे एक इंजीनियर या तकनीकी शिक्षा प्राप्त किया हुआ व्यक्ति है।

खनिज क्वार्ट्ज को हवा के दबाव से 2000 गुना ज्यादा दबाव मे और 500° सेल्सियस तापमान मे रखा जाता है। उसके सुधारने में नाइट्रोजन का भी उपयोग होता है। इस सयत्र की उत्पादन क्षमता प्रतिवर्ष करीब 40 टन क्वार्ट्ज की है।

इस सयत्र का जितना उत्पादन होता है उसका 65 प्रतिशत तो सीधा निर्यात कर दिया जाता है। दुनिया के बाजारों मे बल्गेरिया के बने इस क्वार्ट्ज की काफी साख है। बाकी के सामान मे से भी 25 प्रतिशत अन्य इलेक्ट्रोनिक सामान मे लगा कर फिर उस सामान का निर्यात होता है। टेलीविजन ट्यूबो, कम्प्यूटरो सबमे इसका उपयोग होता है।

इस संयंत्र में काम करने वालों में ज्यादातर नौजवान हैं। संयंत्र के मुख्य इंजीनियर जो विज्ञान के डाक्टर हैं। उन्होंने हँसते हुए मुझे बताया कि लगभग प्रति रविवार हमें किसी-न-किसी कर्मचारी की शादी का समारोह आयोजित करना पड़ता है। इसके काम करने वालों की औसतन तनख्वाह 250 लेव है।

इस संयंत्र के पास ही दोनों ओर आवास-गृह बने हुए हैं। ज्यादातर कर्मचारी इन्हीं आवास-गृहों में रहते हैं। दो शयनकक्ष वाले फ्लैट का मासिक किराया मात्र 8 से 10 लेव है।

इस संयंत्र से जुड़े एक शिशु-गृह और दो किंडरगार्टन हैं। महिलाओं को शिशु जन्म से पहले और बाद में कुल तीन महीने की तनख्वाह सहित छुट्टी मिलती है। इस संयंत्र का खुद का काले समुद्र पर स्थित एक आवास-गृह है। संयंत्र के लगभग एक-तिहाई कर्मचारी प्रतिवर्ष इस आवास में या अन्य आवास-गृहों में या पहाड़ों पर बने आवास-गृह में तीन सप्ताह की तनख्वाह सहित छुट्टियाँ मनाने जाते हैं। छुट्टी की इस यात्रा का सारे खर्च का लगभग दो-तिहाई भाग संस्थान के सामाजिक फंड से तथा ट्रेड यूनियनों द्वारा वहन किया जाता है।

इस संयंत्र से एक किलोमीटर दूरी पर एक प्राथमिक स्कूल है जहाँ इस संयंत्र के तथा अन्य संयंत्रों में काम करने वाले कर्मचारियों के बालक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते हैं। तकनीकी तौर पर उच्च स्तर का उत्पादन करने में बल्गेरिया का जिन चीजों के लिए नाम है उनमें क्वार्ट्ज निर्माण करने वाला यह संयंत्र भी है। इस संयंत्र का विस्तार कार्य चालू था। विस्तार के इस निर्माणकार्य को चलते मैंने देखा। विस्तार कार्य में दोनों रूप की प्रगति का ध्यान रखा जा रहा है। उत्पादन में संख्यात्मक वृद्धि और साथ-ही-साथ जो सामान बनाया जाए वह और ज्यादा उच्च स्तर का हो। संख्यात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि से यह संयंत्र बल्गेरिया के अर्थतंत्र में तथा उसके विदेशी व्यापार में और महत्वपूर्ण योगदान देने लगेगा।

इलेक्ट्रोनिक उद्योग के अन्य क्षेत्रों में भी बल्गेरिया की प्रगति इतनी ही महत्वपूर्ण है। बल्गेरिया ने दो स्वचालित मशीनी पुरुष रोबोट निर्मित किये हैं तथा चार तरह के कम्प्यूटर निर्माण किये हैं जिनका अंतर्राष्ट्रीय हल्कों में माँग का स्थान है। कई प्रकार के नये इलेक्ट्रोनिक सामान का निर्माण भी हो रहा है। क्वार्ट्ज निर्माण संयंत्र तो इस पूरी प्रगति का एक सूचक मात्र है। वैसे अब इस संयंत्र ने सीधे उपयोग में आने वाला सामान भी बनाना शुरू कर दिया है। हाल ही में इस संयंत्र ने सुनने का यंत्र बनाया है। रेडियो, माइक या रिकार्ड बजाने के यंत्र से इसे जोड़ देने से इसे कानों पर लगाने वाले को बिना पड़ौस में किसी प्रकार का शोर हुए पहनने वाला सुन सकता है। इस यंत्र का इस संयंत्र ने पेटेन्ट भी करा लिया है। यह यंत्र ऐसा उच्चकोटि का है कि कई देशों में इसका निर्यात हो रहा है। पश्चिमी जर्मनी में भी इस यंत्र का आयात किया जा रहा है।

इस संयंत्र से कुछ दूरी पर स्थित है सोफिया प्रेस कार्यालय।

बिजली चालित माल लादने वाला विशेष ट्रक

बल्गेरिया का दुनिया मे जिन वस्तुओं के उत्पादन में अग्रणी स्थान है उसमें एक है बिजली चालित माल लादने वाला छोटा ट्रक। यह इतने उच्चकोटि का है कि कई देशों को, जिनमे पश्चिमी पूँजीवादी देश भी हैं, को इस ट्रक का निर्यात किया जा रहा है।

इस ट्रक के निर्माण के लिए डीजल इंजन बनाने का एक कारखाना वार्ना मे स्थित है। नवम्बर 1980 मे मुझे यह कारखाना देखने का सुअवसर मिला था। इस कारखाने में कम हॉर्स पावर और अधिक हॉर्स पावर के डीजल के इंजन बनाए जाते हैं। इन इंजनों मे लगने वाले पिस्टन, रिंगें इत्यादि जो उच्च कोटि का सामान चाहिए उसका निर्माण यहीं होता है और उनकी बारीक घिसाई यहाँ की जाती है। ऐसी उच्चकोटि की अंतर्राष्ट्रीय मापदंड किस्म की घिसाई का कार्य जहाँ होता है उस कार्यशाला को भी मैंने देखा। सब सामान को इकट्ठा कर इंजन मे लगाकर उसका परीक्षण किया जाता है। डीज़ल का खर्च इंजन के अन्दर का तापमान इत्यादि सब मापदंडों की जाँच की जाती है। इस कारखाने में बड़े डीजल इंजन भी बनते हैं जिनका उपयोग माल ढोने वाली तीन टन क्षमता के ट्रकों के निर्माण के लिए किया जाता है।

बल्गेरिया की जनवादी सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने अर्थव्यवस्था की तेजी से प्रगति के लिए एक नये प्रकार का संगठन शुरू किया है। इसे कहते हैं औद्योगिक-खेतिहर मिला-जुला संस्थान। इस प्रकार कई सहकारी खेतों को मिलाकर एक यूनियन बनायी जाती है। इस क्षेत्र में यह यूनियन खेती और पशु-पालन, मुर्गीखाना इत्यादि कार्य की देखभाल के अलावा तम्बाकू, अंगूर, फल या सब्जी उत्पादन की देखभाल भी करती है। साथ ही इस क्षेत्र में जिस प्रकार के मोटे और मध्यम उद्योग जिनका कि खेती की पैदावार से सम्बन्ध होता है उस कार्य की देखभाल यह यूनियन करती है। इस प्रकार की संगठन व्यवस्था और उसके लाभकारी परिणामों का जिक्र बाद में किया जाएगा। परन्तु इसी नीति के अंतर्गत हर औद्योगिक संस्थान को भी खेती के लिए जमीन दी जाती है। इस जमीन पर खेती उत्पादन की पूरी व्यवस्था यह औद्योगिक संस्थान करता है। उस खेत में उगाई गई चीजों का उपयोग, उस संस्थान के परिवारों को कम भाव पर बेचने के लिए किया जाता है तथा कारखाने की कैन्टीन में भी उसका उपयोग होता है। वार्ना स्थित डीज़ल इंजन बनाने का जो यह संस्थान मैंने देखा उसे भी एक खेत दिया हुआ है। इस खेत से उत्पन्न आलू, टमाटर अन्य सब्जियाँ, अंडे इत्यादि कारखाने में काम करने वाले परिवारों को सस्ते भाव पर बेचे जाते हैं।

कारखाने के केन्टीन में भी इन्हें काम में लाया जाता है।

जब हम लोग कारखाना पूरी तरह देखकर बाहर निकले और कारखाने की केन्टीन में गए तब दोपहर के भोजन का समय हो रहा था। बड़े-बड़े बरतनों में मांस, सब्जियां और सूप इत्यादि लाया जा रहा था। यह सब भोजन वहीं रसोईघर में पकाया जाता है जिसमें सफाई की उच्चकोटि की व्यवस्था है।

उत्सुकता के मारे मैंने कहा कि क्या मैं दोपहर में कर्मचारी केन्टीन में जो भोजन करते हैं वह चख सकता हूं। तत्काल खाना आ गया। मांस का बना पुलाव, फूल गोभी और टमाटर की बनी सब्जी, बहुत स्वादिष्ट सूप, डबल रोटी सब आ गये। खाना वास्तव में बहुत स्वादिष्ट था और पौष्टिक भी। कारखाने में काम करने वालों को इस खाने के लिए आधा लेव या उससे कम देना पड़ता है। यह सब इसलिए संभव हो सका है क्योंकि कारखाने के सामाजिक फंड से केन्टीन को सहायता दी जाती है और इस कारखाने को दिए गए खेत में जो उत्पादन होता है उस कारण भी भोजन स्वादिष्ट और सस्ता हो जाता है।

इस कारखाने का भी एक आवास-गृह इसी शहर वार्ना के रमणीक समुद्रतट पर स्थित है और एक अन्य आवास-गृह पहाड़ों पर स्थित है। इस कारखाने के करीब तीन-चौथाई कर्मचारी हर वर्ष तीन सप्ताह की तनख्वाह सहित छुट्टी मनाने जाते हैं जिसका दो-तिहाई से ज्यादा खर्च कारखाने के सामाजिक फंड और ट्रेड यूनियनों से दिया जाता है।

केन्टीन के पास ही एक सांस्कृतिक केन्द्र भी स्थित था। उसमें ड्रामा और नाच के लिए एक बड़ा हॉल भी था। हमें बताया गया कि प्रति सप्ताह वहाँ किसी-न-किसी प्रकार का सांस्कृतिक कार्यक्रम संगठित किया जाता है जिसमें कारखाने में काम करने वाले पुरुष और महिलाएँ तथा उनके परिवार के सदस्य भाग लेते हैं। बालक-बालिकाओं के लिए भी इसी प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम की व्यवस्था है।

वस्त्र बुनाई का संयंत्र

बल्गेरिया का विदेशी व्यापार बहुत बढ़ा-चढ़ा है इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि बल्गेरिया ने चुन-चुनकर ऐसी वस्तुओं का निर्माण कार्य सफलतापूर्वक हाथ में लिया है जो सामान अंतर्राष्ट्रीय स्तर का है और उसका लागत खर्च भी काफी कम है। इस कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बल्गेरिया अपना यह सामान आसानी से बेच सकता है। ऐसा एक वस्त्र बुनाई का संयंत्र है। उसे देखने का अवसर भी मुझे नवम्बर 1980 में मिला। बुनाई की ये विशेष मशीनें करीब 8 रंग के धागों की एक साथ मिश्रित बुनाई करती हैं। वस्त्र का डिज़ाइन इसी संयंत्र के लोग विशेषकर महिला कर्मचारियों का एक दल करता है। डिज़ाइन के अनुसार कार्डबोर्ड में सूराख कर दिए जाते हैं। यह कार्डबोर्ड बुनाई की

मशीन मे लगा दिया जाता है। अलग-अलग रंग के धागों के बोबिन इस मशीन के पीछे की तरफ परन्तु इससे जुड़े लगे रहते हैं।

बुनाई की यह मशीनें ऐसे आधुनिकतम तकनीक से कार्य करती हैं कि विभिन्न रंगों से युक्त और बीच-बीच में विभिन्न डिजाइनों के अनुसार वे कार्डबोर्ड मे इंगित डिजाइन के अनुसार अपने-आप बुनाई का कार्य करती रहती हैं।

इन मशीनो मे रंग-बिरंगे डिजाइनो वाले पुल ओवर, बनियाननुमा फैशन वाले वस्त्र, यहाँ तक कि महिलाओ के लिए फ्रॉक यह सब बुनकर तैयार किये जाते हैं। कुछ ही घंटो मे प्रति मशीन पर ऐसा एक वस्त्र तैयार हो जाता है। इसके अलावा रंग-बिरंगे डिजाइनो के कपड़े भी बनाये जाते हैं।

संयत्र के मुख्यालय मे कांच से ढँका एक बड़ा लंबा अलमारीनुमा केस है जहाँ इस संयत्र मे बने वस्त्र नुमाइशी तौर पर टाँग कर रखे हुए हैं। उन्हे देखकर तो ऐसा लगता है जैसे किसी फैशन परेड मे आ गये हो।

संयत्र मे काम करने वाले कर्मचारियो मे 75 प्रतिशत महिलाएँ हैं। डिजाइन की मुखिया यहाँ तक कि संयत्र की मुख्य इंजीनियर भी एक महिला है।

इस संयत्र का बना सामान इतना उच्चकोटि का है और डिजाइनें इतनी आकर्षक हैं कि कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत से भी ज्यादा सामान सीधा निर्यात होता है। संयत्र के व्यवस्थापक ने बड़े गर्व से बताया कि इस संयत्र के लिए जिन मशीनों का आयात किया गया उससे ज्यादा डालर तो इस संयत्र ने तीन वर्ष में अपने निर्यात से प्राप्त कर लिये। यह संयंत्र मुनाफे मे चल रहा है। इसमे काम करने वाले कर्मचारियो की औसत तनख्वाह 275 लेव थी।

जहाज निर्माण अन्वेषण संस्थान

जनवादी बल्गेरिया की सरकार और वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी ने यह ठोस और उपयोगी नीति अपनाई है कि अन्वेषण कार्य का सीधा सम्बन्ध उत्पादकता तथा नवनिर्माण में उठने वाली समस्याओ से रहे और अन्वेषण और उच्चकोटि की उत्पादकता का सीधा सम्बन्ध रहे। इसी नीति के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप मे सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने यह व्यवस्था लागू की है कि जिस प्रदेश या क्षेत्र में जिस वस्तु का उत्पादन ज्यादा होता है उस सम्बन्धीय अन्वेषण संस्थान का केन्द्र भी उसी प्रदेश या क्षत्र में स्थित होना चाहिए। इसी नीति सम्बन्धी व्यवस्था के फलस्वरूप तम्बाकू उत्पादन तथा सिगरेट आदि के उत्पादन से सम्बन्धित अन्वेषण संस्थान का केन्द्र ब्लागोयेवग्राड मे स्थित किया गया है। अंगूर उत्पादन तथा अंगूर से बनी शराब और ब्राडी आदि से सम्बन्धित अन्वेषण संस्थान का मुख्य केन्द्र वार्ना मे रखा गया है।

वार्ना बल्गेरिया का न सिर्फ समतल समुद्रतट और सुनहरी मिट्टी से भरा एक

बड़ा रमणीक स्थान है। बल्कि यह बल्गेरिया का सबसे बड़ा बंदरगाह भी है वार्ना के निकट कुछ किलोमीटर दूरी पर बल्गेरिया का जहाज निर्माण संयत्र भी स्थित है। हकीकत तो यह है कि वार्ना के निकट के क्षेत्र मे कुछ किलोमीटर दूरी पर एक बड़ा ताप बिजलीघर, बल्गेरिया का सोडा-एश निर्माण करने वाला विशाल कारखाना जो अपने किस्म का यूरोप के बड़े कारखानो में एक है तथा अन्य कई औद्योगिक संयत्रो का समूह स्थित है। वार्ना के अधिकारियों ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि वार्ना के पास रमणीक समतल समुद्रतट के वातावरण में प्रदूषण बिलकुल न हो। इसलिए ये सब कारखाने और औद्योगिक सयंत्र वार्ना से कई किलोमीटर दूर स्थित किए गए हैं। इन कारखानो के लिए कच्चा माल ले जाने के लिए काले समुद्र को काटकर एक चौड़ी और गहरी नहर का निर्माण किया गया है जिसमें बड़े जहाज भी आ-जा सकते हैं। जहाजों के आवागमन मे कोई बाधा उत्पन्न न हो, इसलिए इस नहर पर एक ऊँचा पुल भी बनाया गया है। यह पुल अपने आप मे इंजीनियरिंग कार्य की एक प्रमुख सफलता है परन्तु विशेष बात यह है कि इस पुल पर खड़े होकर पानी की सतह से लगकर आने वाली ठंडी हवा के झोकों का आनन्द लेने के साथ-साथ सारे वार्ना शहर का एक विहंगम दृश्य भी यहाँ से देखने को मिलता है।

बल्गेरिया का समुद्री जहाज निर्माण का विशाल सयन्त्र वार्ना में स्थित है। इसी कारण जहाज निर्माण, उसके काम मे आने वाले पुर्जों और सामान तथा उन पर समुद्री लहरो का प्रभाव इत्यादि बातो से सम्बन्धित अन्वेषण संस्थान भी वार्ना में ही स्थित है।

बल्गेरिया के इस जहाज तथा समुद्री पानी की हिलोरों से सम्बन्धित अन्वेषण संस्थान को देखने का सुअवसर मुझे पिछले वर्ष जुलाई मे मिला। इस संस्थान के पार्टी संगठन के सचिव साजारोव जॉर्ज ने मेरी अगवानी की तथा संस्थान के इतिहास और प्रगति से मुझे अवगत कराया। सैकड़ो वर्ग मीटर क्षेत्र में फैले इस संस्थान के सब भागों को और उनमे हो रहे कार्य को मुझे दिखाया। उनके सहयोगी भी साथ थे।

अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की सहायता और सहयोग से इस संस्थान की शुरुआत 10 अक्टूबर 1976 में की गई। 1979 से इस संस्थान के कार्य का द्वितीय चरण शुरू हो गया है। इस सयन्त्र की डिजाइन इत्यादि का कार्य तो मार्च 1972 में ही पूरा हो गया था। उस समय राष्ट्र संघ की संस्था यू॰एन॰डी॰ पी॰ तथा सदन की जहाज निर्माण संस्था से बल्गेरिया ने तकनीकी सहयोग और सहायता का एक समझौता किया जो 1986 तक कारगर रहेगा। इस समझौते के अनुसार इस संस्थान को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता मिली है। यहाँ करीब 300 लोग

कार्य कर रहे हैं जिनमे आधे से ज्यादा विशेषज्ञ हैं। इस सस्थान ने ब्रिटेन, जापान, सयुक्त राज्य अमरीका, स्वीडन इत्यादि देशो मे विशेष ट्रेनिंग, जिसकी अवधि 2 महीने से एक वर्ष की होती है उसमे करीब 50 विशेषज्ञो को भेजकर उन्हे इस विशेष ट्रेनिंग से युक्त कराया है।

इस सस्थान की सहायता से बल्गेरिया के जहाज निर्माण सयत्र ने एक लाख टन माल ढोने वाले टैंकर का भी निर्माण किया है। 25 और 35 हजार टन के जहाज तो प्रतिवर्ष बल्गेरिया के जहाज निर्माण सस्थान मे बन रहे हैं। पिछले कुछ ही वर्षो से कार्य कर रहे इस संस्थान की सफलता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज बल्गेरिया मे बन रहे जहाजो मे जो सामान और यत्र लगते हैं उनमें से 45 प्रतिशत खुद बल्गेरिया मे ही निर्मित होते हैं। योजना यह है कि आने वाले कुछ ही वर्षो मे यह अनुपात बढाकर 90 प्रतिशत कर दिया जाए।

जहाज निर्माण मे काम आने वाला एक महत्वपूर्ण भाग है प्रोपेलर। पंखेनुमा यह यंत्र समुद्र के भीतर जब तेजगति से चक्कर काटने लगता है तब यह समुद्र के पानी को तेज कृत्रिम लहरो के रूप मे धकेलता है। इससे ही जहाज समुद्र मे चलना है और वेग प्राप्त करता है। परन्तु इस प्रोपेलर पर हवाई पट्टी बन जाती है तथा समुद्री पानी मे मिश्रित रसायनो का प्रोपेलर की धातुओं पर रासायनिक प्रभाव पड़ता रहता है और कुछ ही महीनो बाद इस प्रोपेलर को बदलना पड़ता है।

इस संस्थान मे जो अन्वेषण का कार्य हो रहा है उसमे एक महत्वपूर्ण कार्य यह है कि प्रोपेलर के निर्माण मे धातुओ का उपयोग और मिश्रण मे तथा उसके पखो के आकार मे ऐसा सुधार किया जाए जिससे प्रोपेलर ज्यादा कारगर और लबी अवधि तक उपयोगी कार्य कर सकें। इसके लिए प्रोपेलर के पखो को कृत्रिम रूप से तेज जल प्रवाह की स्थितियो मे रखकर उन पर रासायनिक तथा अन्य रूप के प्रवाह का अध्ययन किया जाता है। लबी नलियो से तेज गति से आने वाले पानी की धार और यत्र मे लगे प्रोपेलर के पखों का घुमाव यह सब किया काँच के बने ठोस आवरण के भीतर देखी जा सकती है। इस सस्थान ने ताँबा और जस्ते से मिश्रित धातु मे कुछ परिवर्तन कर तथा प्रोपेलर के पखों की बनावट मे परिवर्तन कर ऐसे प्रोपेलरों की निर्माण विधि ईजाद की है जो एक वर्ष या अठारह महीने तक बिना नुकसान के काम करते रहें।

इस सस्थान ने एक नए किस्म का प्रोपेलर भी बनाया है। इसमे बिना जग लगने वाले इस्पात का उपयोग किया जाता है। इसके पंख भी सामान्य हवा फेंकने वाले पखों के आकार के नही बल्कि एक टेढी घुमावदार कुदाली के रूप के हैं। यह बहुत तेज गति की नावों मे काम मे आ सकता है। सोवियत सघ मे 80 किलोमीटर प्रति घटा गति से चलने वाले नावों मे ऐसे ही प्रोपेलरो का उपयोग होता है। ऐसे

र्य कर रहे हैं जिनमें आधे से ज्यादा विशेषज्ञ हैं। इस सस्थान ने ब्रिटेन, जापान, युक्त राज्य अमरीका, स्वीडन इत्यादि देशो मे विशेष ट्रेनिंग, जिसकी अवधि महीने से एक वर्ष की होती है उसमे करीब 50 विशेषज्ञो को भेजकर उन्हें इस शेष ट्रेनिंग से युक्त कराया है।

इस संस्थान की सहायता से बल्गेरिया के जहाज निर्माण सयत्र ने एक लाख टन ढोने वाले टैंकर का भी निर्माण किया है। 25 और 35 हजार टन के जहाज प्रतिवर्ष बल्गेरिया के जहाज निर्माण सस्थान मे बन रहे हैं। पिछले कुछ ही वर्षों र्य कर रहे इस संस्थान की सफलता का अदाज इसी बात से लगाया जा ता है कि आज बल्गेरिया मे बन रहे जहाज़ो मे जो सामान और यत्र लगते हैं ों से 45 प्रतिशत खुद बल्गेरिया मे ही निर्मित होते हैं। योजना यह है कि आने कुछ ही वर्षों मे यह अनुपात बढाकर 90 प्रतिशत कर दिया जाए।

जहाज निर्माण मे काम आने वाला एक महत्वपूर्ण भाग है प्रोपेलर। पंखेनुमा त्र समुद्र के भीतर जब तेजगति से चक्कर काटने लगता है तब यह समुद्र नी को तेज कृत्रिम लहरो के रूप मे धकेलता है। इससे ही जहाज समुद्र मे ा है और वेग प्राप्त करता है। परन्तु इस प्रोपेलर पर हवाई पट्टी बन है तथा समुद्री पानी मे मिश्रित रसायनो का प्रोपेलर की धातुओ पर सनिक प्रभाव पडता रहता है और कुछ ही महीनो बाद इस प्रोपलर को ा पडता है।

इस सस्थान मे जो अन्वेषण का कार्य हो रहा है उसमे एक महत्वपूर्ण कार्य यह है पेलर के निर्माण मे धातुओ का उपयोग और मिश्रण मे तथा उसके पखों के र मे ऐसा सुधार किया जाए जिससे प्रोपेलर ज्यादा कारगर और लबी अवधि पयोगी कार्य कर सकें। इसके लिए प्रोपेलर के पखो को कृत्रिम रूप से न प्रवाह की स्थितियो मे रखकर उन पर रासायनिक तथा अन्य रूप के प्रवाह ययन किया जाता है। लबी नलियों से तेज गति से आने वाले पानी की धार त्र मे लगे प्रोपेलर के पखो का घुमाव यह सब किया कांच के बने ठोस आवरण र देखी जा सकती है। इस सस्थान ने तांबा और जस्ते से मिश्रित धातु मे रिवर्तन कर तथा प्रोपेलर के पखों की बनावट मे परिवर्तन कर ऐसे प्रोपेलरों र्माण विधि ईजाद की है जो एक वर्ष या अठारह महीने तक बिना नुकसान के रते रहें।

बड़ा रमणीक स्थान है। बल्कि यह बल्गेरिया का सबसे बड़ा बंदरगाह भी है। वार्ना के निकट कुछ किलोमीटर दूरी पर बल्गेरिया का जहाज निर्माण संयंत्र भी स्थित है। हकीकत तो यह है कि वार्ना के निकट के क्षेत्र में कुछ किलोमीटर दूरी पर एक बड़ा ताप बिजलीघर, बल्गेरिया का सोडा-ऐश निर्माण करने वाला विशाल कारखाना जो अपने किस्म का यूरोप के बड़े कारखानों में एक है तथा अन्य कई औद्योगिक संयंत्रों का समूह स्थित है। वार्ना के अधिकारियों ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि वार्ना के पास रमणीक समतल समुद्रतट के वातावरण में प्रदूषण बिलकुल न हो। इसलिए ये सब कारखाने और औद्योगिक संयंत्र वार्ना से कई किलोमीटर दूर स्थित किए गए हैं। इन कारखानों के लिए कच्चा माल ले जाने के लिए काले समुद्र को काटकर एक चौड़ी और गहरी नहर का निर्माण किया गया है जिसमें बड़े जहाज भी आ-जा सकते हैं। जहाजों के आवागमन में कोई बाधा उत्पन्न न हो, इसलिए इस नहर पर एक ऊँचा पुल भी बनाया गया है। यह पुल अपने आप में इंजीनियरिंग कार्य की एक प्रमुख सफलता है परन्तु विशेष बात यह है कि इस पुल पर खड़े होकर पानी की सतह से लगकर आने वाली ठंडी हवा के झोंकों का आनन्द लेने के साथ-साथ सारे वार्ना शहर का एक विहंगम दृश्य भी यहाँ से देखने को मिलता है।

बल्गेरिया का समुद्री जहाज निर्माण का विशाल संयंत्र वार्ना में स्थित है। इसी कारण जहाज निर्माण, उसके काम में आने वाले पुर्जों और सामान तथा उन पर समुद्री लहरों का प्रभाव इत्यादि बातों से सम्बन्धित अन्वेषण संस्थान भी वार्ना में ही स्थित है।

बल्गेरिया के इस जहाज तथा समुद्री पानी की हिलोरों से सम्बन्धित अन्वेषण संस्थान को देखने का सुअवसर मुझे पिछले वर्ष जुलाई में मिला। इस संस्थान के पार्टी संगठन के सचिव लाजारोव जॉर्ज ने मेरी अगवानी की तथा संस्थान के इतिहास और प्रगति से मुझे अवगत कराया। सैकड़ों वर्ग मीटर क्षेत्र में फैले इस संस्थान के सब भागों को और उनमें हो रहे कार्य को मुझे दिखाया। उनके सहयोगी भी साथ थे।

अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की सहायता और सहयोग से इस संस्थान की शुरुआत 10 अक्टूबर 1976 में की गई। 1979 से इस संस्थान के कार्य का द्वितीय चरण शुरू हो गया है। इस संयंत्र की डिज़ाइन इत्यादि का कार्य तो मार्च 1972 में ही पूरा हो गया था। उस समय राष्ट्र संघ की संस्था यू०एन०डी० पी० तथा लंदन की एक जहाज निर्माण संस्था से बल्गेरिया ने तकनीकी सहयोग और सहायता का एक समझौता किया जो 1986 तक कारगर रहेगा। इस समझौते के अनुसार इस संस्थान को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता मिली है। यहाँ क़रीब 300 लोग

टन या वाले जहाजों के निर्माण का दोनों डॉकों पर कार्य चल रहा था। जहाजों के ढांचे यहां खड़े थे। सैकड़ों कारीगर जहाजों के ढांचों के चारों ओर इस्पात की चादरों का ढांचा लगा रहे थे। रिवेट करने वाली मशीनों की खटखट सुनाई दे रही थी। आर्गन एसीटलीन से निर्मित तेज और गर्म आग उगलती हुई मशीनें प्लेटों को पूरी तरह जोड़ रही थी। हमारे साथ जो मुख्य इंजीनियर थे उन्होंने गर्व से कहा कि अगले माह हम इन डॉकों के किनारों के फाटक खोल देंगे और डॉकों में पानी भर जाएगा। यह पानी समुद्र की सतह तक ऊंचा आ जाएगा तब हम डॉकों के दरवाजे जो स्वचालित मशीनों से चलते हैं उन्हें उठा लेंगे और यह दोनों जहाज समुद्र में उतर जाएंगे तथा माल ढोने के कार्य में लग जाएंगे।

इस संयंत्र में अभी 5500 श्रमिक, इंजीनियर इत्यादि कार्य कर रहे हैं। *इनकी औसत तनख्वाह 280 लेव है। जो विशेष कार्यकुशलता या क्षमता रखते हैं उनकी तनख्वाह 380 से 500 लेव भी है। इस संयंत्र में करीब 2500 ऐसे श्रमिक हैं जिनकी सेवाएँ आवश्यक सेवाएँ मानी गई हैं। उन्हें दोपहर का खाना या रात का खाना मुफ्त दिया जाता है। ये लोग दो पारियों में काम करते हैं।*

इस संयंत्र के मजदूरों को अन्य कई सुविधाएँ मिलती हैं। बीमारी के काल में उन्हें उनकी तनख्वाह का 80 प्रतिशत मिलता रहता है। कुछ बीमारियों में उन्हें सेनेटोरियम भेजा जाता है तब बीमारी के काल में निःशुल्क इलाज के अलावा उन्हें पूरी तनख्वाह मिलती रहती है।

प्रतिवर्ष करीब 1200 श्रमिक सालाना दो से तीन सप्ताह की तनख्वाह सहित छुट्टी पर जाते हैं। ये छुट्टियाँ वे समुद्र तट पर या पहाड़ों पर बने विश्राम-गृहों में बिताते हैं। इसके खर्च का करीब दो-तिहाई सामाजिक फण्ड और ट्रेड यूनियनों द्वारा वहन किया जाता है।

इस संयंत्र ने अपने यहाँ काम करने वाले श्रमिकों के लिए मकान बनाए हैं। संयंत्र के खुद के 2500 ऐसे मकान हैं। मकानों का किराया 8 लेव से 12 लेव मात्र है। इसके अलावा नौजवानों के रहने के लिए दो होस्टल भी हैं।

इस संयंत्र का अपना खुद का विश्राम-गृह है जिसमें 60 बिस्तरों की व्यवस्था है संयंत्र का अपना खुद का खेल-कूद का स्टेडियम है तथा एक विशाल सांस्कृतिक केन्द्र भी। इस संयंत्र को भी खेती के लिए ज़मीन दी गई है। वहाँ प्रतिवर्ष करीब एक सौ टन सब्जियाँ उगाई जाती हैं। खेती के साथ सूअर भी पाले जाते हैं। जिनका माँस इस संयंत्र में कार्य करने वाले परिवारों को दिया जाता है। प्रति वर्ष करीब 800 सूअर पाले जाते हैं।

इस संयंत्र के अपने खुद के नौजवानों के लिए दो क्लब हैं। श्रमिकों के लिए संयंत्र का खुद का अस्पताल है जहाँ दस डाक्टर हैं। इसमें अन्य विशेषज्ञों के अलावा चार दाँत विशेषज्ञ भी हैं।

वहाँ से माल लाने के लिए दोनों ओर से आने-जाने वाले जहाजों की एक क्रमबद्ध कड़ी की विशेष व्यवस्था की गई है। यह मालवाहक जहाज बल्गेरिया के वार्ना और सोवियत संघ के बंदरगाह ओडेसा के बीच लगातार चलते हैं। इस पूरी योजना की विशेषता यह है कि स्वीडन, युगोस्लाविया, ब्रिटेन आदि से तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर वार्ना के इस स्थान पर एक ऐसा प्लेटफार्म बनाया गया है जो अपने आप ऊपर उठता तथा नीचे आ जाता है। इस प्लेटफार्म पर रेलवे के माल डिब्बों में भरकर सामान रख दिया जाता है। यहाँ काम आने वाले मालवाहक जहाजों को इस प्रकार से निर्मित किया गया है कि उनकी तीन मंजिलें हैं। हर मंजिल में माल से लदे रेल के डिब्बे वैसे के वैसे लाद दिए जाते हैं। एक मालवाहक जहाज करीब 100 रेल के वैगनों को लेकर चल सकता है।

इससे बड़ा लाभ यह है कि जहाजों से यह माल भरे रेलवे वैगन उतारते ही रेलों के जरिये उन्हें निर्दिष्ट स्थान पर रवाना किया जा सकता है।

जुलाई 1983 में इस विशेष बंदरगाह को मैंने देखा। एक जहाज में ओडेसा भेजे जाने के लिए रेलवे वैगनों में भरा माल लादा जा रहा था। इस छोटे से बंदरगाह के बाहर एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा था जिसमें यह नारा लिखा हुआ था "बल्गेरिया सोवियत संघ की मैत्री अमर है" साथ ही 12 और 26 यह अंक बड़े-बड़े आकार के लिखे हुए थे। आशय था बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का बारहवाँ महाधिवेशन और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का 26वाँ महाधिवेशन। नई तकनीक के इस्तेमाल का यह तरीका भी बल्गेरिया की प्रगति का एक महत्वपूर्ण सूचक है।

वार्ना स्थित सोडा-एश संयंत्र

वार्ना के संयत्रों का उल्लेख तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि वार्ना से कुछ किलोमीटर दूर स्थित विशालतम सोडा-एश संयंत्र का उल्लेख नहीं हो। वार्ना के नजदीक कुछ किलोमीटर दूरी पर प्राकृतिक चूने का बड़ा भंडार है। जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने यह उपयोगी समझा कि प्राकृतिक चूने के भंडार और समुद्र के नमकयुक्त पानी का उपयोग कर एक सोडा-एश संयंत्र का निर्माण किया जाए। परन्तु इसके लिए स्थान ऐसा चुनना था जिसमें वार्ना के समुद्रतट क्षेत्र में प्रदूषण का कोई प्रभाव न पड़े। इसलिए जैसा पहले उल्लेख किया जा चुका है काले समुद्र का एक किनारा काटकर बहुत चौड़ी और गहरी नहर का निर्माण किया गया। यह नहर वार्ना से कुछ दूर स्थित ताप बिजली-घर तथा अन्य औद्योगिक संयंत्रों को कच्चा माल जहाजों से पहुँचाने के काम तो आती ही है। साथ ही इस नहर से जो समुद्र का नमकयुक्त पानी दूर अंदर तक पहुँच सका वही सोडा-एश कारखाने का एक कच्चा माल बन गया है। बिजली के उत्पादन

से समुद्र के पानी में मिले नमक से खार पदार्थ निर्मित किया जाता है और प्राकृतिक चूने का उपयोग कर उसे सोडा-एश के रूप में परिणत कर दिया जाता है। आक्सीजन तथा अन्य चीज़ें जो बनती हैं वे इसके अलावा।

बल्गेरिया का यह सोडा-एश कारखाना यूरोप के सबसे बड़े कारखानों में एक है। बल्गेरिया बड़ी मात्रा में सोडा-एश का निर्यात करता है। करीब साठ देशों को इस सोडा-एश का निर्यात किया गया है।

कुछ वर्षों पहले भारत ने भी बल्गेरिया से बहुत लाभकारी कीमत पर सोडा-एश का आयात किया था।

औद्योगिक क्षेत्र में जिन वस्तुओं के उत्पादन में जनवादी बल्गेरिया का अग्रणी स्थान है उनमें सोडा-एश एक है। प्राकृतिक संपदा का सही उपयोग कर औद्योगिक विस्तार करना और सामान ऐसा तैयार करना जो अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के हिसाब से खरा उतरे यह जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी की कार्य-नीति रही है जिसकी यह सोडा-एश संयंत्र एक जीती-जागती मिसाल है।

यह सोडा-एश संयंत्र वास्तव में बल्गेरिया के रासायनिक उद्योग में हुई प्रगति का प्रतीक है।

1970 की तुलना में 1979 में सोडा-एश का उत्पादन पाँच गुना बढ़ गया। इसी काल में रासायनिक धागों का उत्पादन 5 गुना, कास्टिक सोडा का उत्पादन 2.3 गुना, प्लास्टिक से बने सामान का उत्पादन 180 गुना, गंधक के तेजाब का उत्पादन तथा फॉसफोरस से बनी रासायनिक खाद का उत्पादन दुगुना हो गया है।

यदि प्रति व्यक्ति उत्पादन को आधार मानकर तुलना की जाए तो सोडा-एश उत्पादन में बल्गेरिया का स्थान दुनिया भर में पहला है। रासायनिक खाद के उत्पादन में 9वाँ, रासायनिक धागों के निर्माण में 9वाँ तथा गंधक के तेजाब के निर्माण में उसका स्थान दसवाँ है।

बल्गेरिया के इस तेज़ गति के विकास का आधार है बल्गेरिया और सोवियत संघ की मैत्री और सोवियत संघ द्वारा बल्गेरिया के विकास के लिए दी गई व्यापक सहायता। छठी पंचवर्षीय योजना काल (1971-1975) के दौरान सोवियत संघ ने बल्गेरिया को करीब 150 नये संयंत्र निर्माण में मशीनरी और तकनीकी ज्ञान की सहायता प्रदान की। इनमें उल्लेखनीय है कोज़लोदुई का आणविक बिजलीघर संयंत्र, देवन्या औद्योगिक संयंत्र, क्रेमीकोवत्सी इस्पात कारखाना तथा बोरगस के पास स्थित पेट्रोल रासायनिक संयंत्र का आमूल चूल विकास। इसके पूर्व के पाँच वर्षों के काल में सोवियत संघ ने बल्गेरिया को नये संयंत्र और कारखाने लगाने के लिए मदद करने वाले 6000 नक्शे तथा तकनीकी जानकारी की स्कीम दी। इसी सहायता का उपयोग कर बल्गेरिया समाजवादी जगत के एक महत्वपूर्ण देश के रूप में तेज़ गति से प्रगति कर पाया है।

बल्गेरिया में सोवियत संघ की सहायता से जो संयंत्र लगे हैं उनसे आज बल्गेरिया के कुल लौह और इस्पात धातु के उत्पादन का 95 प्रतिशत निर्मित हो रहा है। तेल साफ करने तथा रासायनिक उद्योग के कुल उत्पादन का 80 प्रतिशत, बिजली उत्पादन का 80 प्रतिशत यह सब उन संयंत्रों से निर्मित हो रहा है जो सोवियत सहायता से बनाए गए हैं।

समाजवादी देशों की परस्पर सहयोग काउंसिल के सदस्य के रूप में बल्गेरिया अपनी भूमिका पूरी तरह निभा रहा है। इन वर्षों में बल्गेरिया ने जर्मन जनवादी गणतन्त्र, चेकोस्लोवाकिया समाजवादी गणतन्त्र तथा अन्य समाजवादी देशों से भी कई आर्थिक और वैज्ञानिक समझौते किए हैं।

यहाँ इस बात को दोहराना अनुपयुक्त नहीं होगा कि बल्गेरिया के द्रुतगति से विकास का सीधा सम्बन्ध अप्रेल 1956 की केन्द्रीय समिति की उस विस्तृत बैठक से भी है जिसमें पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव और आज बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामंत्री तथा बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर ज़िवकोव ने अपनी ऐतिहासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी जिसने उस समय व्यक्त संकीर्णवादी तथा योजना कार्य में मनोगत तरीकों को समाप्त कर एक नई दिशा में आगे बढ़ने का आधारपूर्ण मार्गदर्शन दिया था। इस ऐतिहासिक वसन्त की अमिट छाप बल्गेरिया के इस काल के विकास पर लगातार नजर आती रही है। लगभग पाँच वर्ष तक पार्टी के कार्य के तरीकों में सुधार, प्रशासनिक ढाँचे में सुधार और निर्माण कार्य की यह नई दिशा को आत्मसात करने तथा ठोस कदम उठाने का आधार बनाने में लग गए हालाँकि उस काल में भी विकास की गति में तेज़ी आने लगी। परन्तु 1970 के बाद खासकर 1971-75 की छठी पंचवर्षीय योजना काल से ही बल्गेरिया की प्रगति ने ऐसी तेज रफ़्तार प्राप्त कर ली और लगातार सुधार के कदमों के आधार पर ऐसी द्रुतगति से निरंतर प्रगति की कि आज कई क्षेत्रों में न सिर्फ औद्योगिक उत्पादन क्षेत्र में बल्कि खेती, खाद्यपदार्थ, आदि आम लोगों के उपयोग की वस्तुओं के निर्माण में तथा साथ ही संस्कृति, शिक्षा, जन-स्वास्थ्य हर क्षेत्र में ऐसी ही प्रगति हुई है। इसके फलस्वरूप आम लोगों का जीवन स्तर बहुत बढ़ गया है। देहात का कायापलट हो गया है और बल्गेरिया दुनिया की तेज गति से प्रगति करने वाले तथा कई क्षेत्रों में नये कीर्तिमान स्थापित करने वाले देशों में अपना सम्मान का स्थान प्राप्त कर पाया है।

जन उपयोगी वस्तु-निर्माण क्षेत्र की तेज प्रगति

बुनियादी और महत्वपूर्ण उद्योगों के अलावा आम जनता के काम में आने वाली वस्तुओं के निर्माण में भी बहुत तेज़ प्रगति हुई है।

एक तो सोवियत संघ से गैस मिलना शुरू होने के कारण पेट्रो-रसायन उद्योग

में काफी वृद्धि हुई है। इसका प्रभाव वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग तथा हर प्रकार के घरेलू उपयोग में आने वाले वस्तुओं के उत्पादन में परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टियों से पड़ा है। वई चीजें अच्छी और सस्ती बनने लगी हैं।

परन्तु सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की अप्रैल 1956 की विस्तृत मीटिंग में टोडोर जिवकोव की ऐतिहासिक रिपोर्ट में इस सही और बुनियादी स्थापना को पुनः स्थापित किया गया कि समाजवादी व्यवस्था के निर्माण का अर्थ है न सिर्फ द्रुतगति से उद्योगों और बुनियादी उद्योगों का विकास बल्कि साथ-ही-साथ लोगों के जीवन स्तर में भी लगातार उन्नति प्राप्त करना और इसके लिए उनकी माली हालत को लगातार सुधारना तथा उनके दैनिक जीवन की आवश्यकता की वस्तुओं को और बड़ी मात्रा में बनाना और अनेक किस्म की वस्तुएँ उन्हें उपलब्ध कराना।

इसी बुनियादी मार्ग-दर्शन के अनुसार दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं के उत्पादन उद्योगों में बड़ी ज्यादा मात्रा में पूँजी लगाई गई तथा मशीनों का नवीनीकरण और आधुनिकीकरण किया गया। 1971 से 1979 के काल में ऐसे उद्योगों में जो पूँजी लगाई जाती रही थी उसमें चार गुना वृद्धि की गई।

इसका प्रभाव भी पड़ा। 1970 में वस्त्र उद्योग में केवल 36 प्रतिशत पोलिस्टर धागे का उपयोग होता था। यह 1979 में बढ़कर 54 प्रतिशत हो गया। 1966 से 1973 के बीच में पोलिस्टर, नाइलोन, पोलेमाइड इत्यादि के निर्माण के लिए चार नये कारखाने स्थापित किये गये जिनकी उत्पादन क्षमता 70 हजार टन है।

साथ ही कारखानों का आधुनिकीकरण किया गया। बिना स्पिंडल के धागे बनाने वाली मशीनें, बिना शटल के कपड़ा बुनने वाली मशीनें, गोलाकार बुनाई वाली मशीनें तथा जूता निर्माण उद्योग में स्वचालित तथा अर्धस्वचालित तरीकों का उपयोग शुरू किया गया। इससे उत्पादन बहुत बढ़ा। साथ ही सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी नेतृत्व ने इस बात पर भी जोर दिया कि कपड़े, जूते इत्यादि सब नवीनतम फ़ैशन के अनुरूप और अच्छे लगने वाले बनाये जाने चाहिए।

साथ ही दस्तकारी, कसीदे इत्यादि के काम से जो परंपरागत रंगीन सुहावने वस्त्र या कालीन इत्यादि बनते थे उन्हें देहातों में छोटे-छोटे औद्योगिक केन्द्रों में तैयार करवाने का कदम भी उठाया गया।

इसका प्रभाव यह हुआ कि बल्गेरिया के कुल औद्योगिक उत्पादन का 12.5 प्रतिशत भाग इन दैनिक उपयोग की सामान्य वस्तुओं के उत्पादन का है।

1939 की तुलना में 1979 में वस्त्र उद्योग तथा सिलाई कार्य में 39 गुना वृद्धि हुई। चमड़े की रँगाई, चमड़ा उद्योग, जूतों के निर्माण इत्यादि कार्यों में इस

अवधि में 48 गुना वृद्धि हुई। काँच तथा विशेष मिट्टी के बने चीनी सामान उत्पादन में 304 गुना वृद्धि हुई।

इस अवधि में वस्त्र उद्योग का उत्पादन प्रतिवर्ष 3.6 करोड़ मीटर से बढ़कर 34.7 करोड़ मीटर हो गया अर्थात् लगभग दस गुना वृद्धि हुई। ऊनी वस्त्रों का उत्पादन 50 लाख मीटर प्रतिवर्ष से बढ़कर 3.6 करोड़ मीटर हो गया। रेशम वस्त्र उत्पादन प्रतिवर्ष 10 लाख से बढ़कर 3 करोड़ मीटर से भी ज्यादा हो गया। जूतों का उत्पादन 1956 में 40 लाख जोड़ों से बढ़कर 1979 में 1 करोड़ 70 लाख जोड़े हो गया। घर में उपयोग आने वाली बाल्टी, बर्तन इत्यादि ज्यादातर प्लास्टिक के या चीनी मिट्टी के बने सस्ते भावों पर उपलब्ध होने लगे। बिजली से चलने वाली घरेलू वस्तुएँ जैसे केतली, इस्त्री, पंखे, टोस्टर इत्यादि की भी उपलब्धता बहुत बढ़ गई। कालीन का स्थान प्लास्टिक के बने मोटे गद्देदार गत्ते ने ले लिया।

इस कार्य में प्रगति का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी रहा है कि लगभग 1970 से इन उद्योगों में काम करने वाले कर्मचारियों और विशेषज्ञों को लगातार नई और आधुनिक ट्रेनिंग की व्यवस्था की जाती रही है। इस ट्रेनिंग का एक प्रमुख भाग है उपभोक्ता की पसन्द का अध्ययन करना। डिज़ाइन, बनावट आदि में क्या परिवर्तन किया जाय कि वस्तु उपभोक्ता को आकर्षित कर सके। मुख्य उद्देश्य यह बन गया कि इस उद्योग को न सिर्फ उपभोक्ता की आवश्यकता को पूरा करना है बल्कि साथ ही उसकी रुचि, उसकी फ़रमाइश, उसकी पसन्द के अनुरूप सामान उसे मिलना चाहिए।

ये आँकड़े उस कहानी को पूरी तरह नहीं कहते जो इन्सान आँखों से देखकर अनुभव करता है। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है मुझे नवम्बर 1980 और फिर जून 1983 में बल्गेरिया जाने का तथा वहाँ के कस्बे, संस्थानों, सहकारी फ़ार्म, आम लोगों के मकान इत्यादि देखने का अवसर मिला था। विशेषकर जुलाई 1983 में तो मैंने कई दिन वार्ना में पार्टी के विश्रामगृह में बिताये। वहाँ के रहने वाले, विभिन्न देशों से आये हुए लोगों का प्रति शुक्रवार दोपहर बाद क़रीब चार घंटे का कार्यक्रम यह रहता था कि वार्ना के बाज़ार—जिसे सेन्ट्रम कहते हैं—वहाँ जाकर जो चाहें सामान ख़रीदें। मैं उन दिनों बाज़ार में घूमता था, ग़ौर से लोगों की वेश-भूषा खासकर बच्चों और महिलाओं के कपड़ों के फैशन और डिज़ाइन देखता रहता था। दुकानों में खड़े होकर देखता था कि लोग कौनसी और कैसी वस्तु ख़रीदते हैं। दुकान में माल बेचने वाली महिला (इस कार्य में ज़्यादातर महिलाएँ ही लगी थीं) अपने ग्राहक को कितने प्रकार के और डिज़ाइनों के माल दिखाती है। यही बातें जब भी मौका मिला मैंने सोफ़िया में भी किया।

मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि सूती और ऊनी वस्त्र, जूते, घरेलू काम

मे आने वाली वस्तुओ की सख्या, डिज़ाइन, फ़ैशन इत्यादि में इन तीन वर्षों के भीतर विस्मयकारी और बड़े परिवर्तन हुए है।

मैंने भी अपनी पुत्री और खासकर उसके शिशु और मेरे नाती के लिए कपड़े, खिलौने, चॉकलेट और गुलाब का इत्र खरीदे। सोफिया से मैं कुछ दिनो के लिए अपने लड़के से मिलने लदन चला गया। जब मैंने यह सामान (कीमतो सहित) अपने लड़के और उसके मित्रो को दिखाया तो वे विस्मय करने लगे। उनके दिमाग में वही पुरानी कल्पना थी कि समाजवादी देशो मे दैनिक जीवन के लिए आवश्यक सामान नई डिज़ाइनो और नए फ़ैशन का नहीं मिलता। यह पुरानी कल्पना गलत साबित होती जा रही है।

परन्तु बल्गेरिया ने दैनिक जीवन मे उपयोग मे आने वाली वस्तुओ के उत्पादन मे जितनी प्रगति की है और यह प्रगति केवल सख्यात्मक ही नही बल्कि सामान की श्रेष्ठता, नई-नई डिज़ाइन और मनपसंद वस्तुएँ निर्माण करने के क्षेत्र मे भी जितनी प्रगति हुई है उससे वास्तव मे उसके उच्च स्तर के समाजवाद के निर्माण की ओर बढने की एक महत्वपूर्ण मिसाल है।

जन जीवन मे एक महत्वपूर्ण बात है आवास। इस क्षेत्र में भी बल्गेरिया की प्रगति इन वर्षों मे बडी तेज़ गति से हुई है। जैसाकि अब उल्लेख किया जाएगा खेती के क्षेत्र मे एकदम तेज़ प्रगति का यह परिणाम हुआ है कि सहकारी खेत मे काम करने वाले और गाँवो मे रहने वाले (हालाँकि अब बल्गेरिया के किसी गाँव को परपरागत गाँव नही कहा जा सकता क्योंकि वहाँ, बिजली सड़कें और अनेकों सार्वजनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं) काश्तकार ने अपने मकान की पूरी कायापलट कर उसे आधुनिकतम मकान बना दिया है या फिर एकदम नया मकान बना लिया है।

परन्तु शहरो और कस्बों मे रहनेवालो की आवास समस्या हल करने के लिए जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने बडा व्यापक कार्यक्रम चालू किया है। तीसरी योजना काल (1958-60) में जहाँ करीब 1.47 लाख नये फ्लैटो का निर्माण किया गया था वहाँ पाँचवी योजनाकाल (1966-1970) मे यह सख्या बढकर 2.21 लाख फ्लैट हो गई और छठवी योजना काल (1971-1975) मे यह सख्या और बढ़कर 2.5 लाख फ्लैट हो गई। आठवी योजना काल मे फ्लैटो की निर्माण सख्या और तेजी से बढी और यह क़रीब 4.5 लाख फ्लैट तक पहुंच गई। 1979 मे नये बनाये गये फ्लैटों का क्षेत्रफल कुल 13 करोड वर्ग मीटर हो गया। इस तेज़ गति से मकानो और फ्लैटो के निर्माण कार्य के परिणामस्वरूप बहुत बड़ी संख्या मे परिवारो को नये फ्लैटो मे रहने की सुविधा मिल गई। प्रतिव्यक्ति आवास स्थान का क्षेत्रफल का जो आँकडा 1965 मे 10.5 वर्ग मीटर था वह 1983 मे बढकर 15 वर्ग मीटर से ज्यादा हो गया है।

जनजीवन के सुधार मे, अच्छी और आधुनिक सुविधाओ से लैस आवास

करीब 1170 किलो होता था। एक गाय प्रतिवर्ष औसतन 450 लिटर दूध देती थी और मुर्गी प्रतिवर्ष औसतन 70 अंडे देती थी।

बल्गेरिया की जन क्रान्ति के बाद जॉर्जी दिमित्रोव ने खेती मे सहकारी पद्धति को अपनाने का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि खेती के क्षेत्र मे किसानो को समझाकर, उनके अनुभव से उन्हे उत्साहित कर, अन्ततः समाजवादी अर्थ सम्बन्ध स्थापित करने का यही लेनिनवादी तरीका है।

बल्गेरिया मे शुरू मे जो सहकारी खेतो का निर्माण किया गया उसमे सोवियत सघ के सामूहिक फार्म तथा बल्गेरिया की परम्परागत सहकारिता की मान्यताओं को मिश्रित किया गया। शुरू के काल मे स्थापित सहकारी खेतो मे खेत की जमीन पर स्वामित्व किसान का ही रहता था। उपज के बँटवारे का कुछ भाग उस किसान के खेत की जमीन के अनुपात मे और बाकी भाग खेती मे कार्य करने के अनुपात मे किया जाता था। यह बहुत ही शुरुआती किस्म के सहकारी फार्म थे।

यह इसलिए किया गया कि सारी दुनिया के समान बल्गेरिया के किसानो को भी जमीन से बहुत मोह था। 1946 मे जो भूमि सुधार किये गये उनके अनुसार खेती की ज्यादातर जमीन को व्यक्तिगत रूप से गरीब किसानो और खेत मजदूरो को बाँट दिया गया। बाँटी गयी भूमि मे खुद खेती करने वाले किसानो के लिए उच्चतम सीमा 20 हेक्टेयर रखी गयी थी। बाद मे कम वर्षा वाले क्षेत्र दोब्रोजा के लिये इस उच्चतम सीमा को बढ़ाकर 30 हेक्टेयर कर दिया गया। कुछ जमीन राज्य के पास रखी गयी जहाँ राजकीय फार्म बनाये गये।

कुछ वर्षों बाद 1948 मे सरकार ने धनी किसानो से खेती मे काम आने वाली मशीनें—करीब 3000 ट्रैक्टर और 3700 थ्रेशर मशीनें—खरीद कर विभिन्न क्षेत्रो मे राजकीय ट्रैक्टर और मशीन स्टेशनो का निर्माण किया।

1948 मे बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का 5वाँ महाधिवेशन हुआ जहाँ यह कार्यक्रम बनाया गया कि पार्टी किसानों को समझाकर तथा खेती की उन्नत विधियो से अधिक उत्पादन की मिसाल उनके सामने रखकर उन्हे स्वेच्छा से सहकारी खेतो मे शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया जाय। साथ ही इस बात का व्यापक कार्यक्रम बनाया गया कि सरकार ऐसे सहकारी खेतो के लिए खेती की मशीनें, रासायनिक खाद, कृषि वैज्ञानिको द्वारा मार्ग दर्शन, सिंचाई इत्यादि सुविधाओं की भी बड़े पैमाने पर व्यवस्था करे।

जॉर्जी दिमित्रोव ने फरवरी 1947 मे हुए सहकारी खेतो के राष्ट्रीय सम्मेलन मे इस बात पर जोर दिया था कि किसानों को सहकारी क्षेत्र मे शामिल करने का कार्य पूरी तरह स्वेच्छा से किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया था कि यह कार्य बड़ी कुशलता से, व्यावहारिकता से व धैर्य के साथ

व्यवस्था का अपना विशेष महत्व है। पिछले 15 वर्षों में यह कार्य जिस तेज गति से किया गया है उसने बल्गेरिया के नागरिकों के जीवन में उभार लाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

खेती के क्षेत्र में कायापलट

औद्योगिक क्षेत्र की इस द्रुतगति की प्रगति के साथ जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने खेती के क्षेत्र में भी अत्यन्त आशाप्रद प्रगति की है और सारे देहाती क्षेत्र का एकदम कायापलट कर दिया है।

जनवादी बल्गेरिया ने देहाती क्षेत्र में भी समाजवादी सम्बन्ध स्थापित कर एक ऐतिहासिक कार्य पूरा किया। आज करीब 93 प्रतिशत खेती योग्य जमीन पर सहकारी पद्धति से खेती हो रही है। सहकारी खेतों को मिलाकर यूनियनें बनाई गईं। बाद में सरकारी फार्मों को भी शामिल कर बड़े खेतिहर-औद्योगिक संयंत्र क़ायम किये गये। खेती के हर कार्य का तेज़ी से मशीनीकरण किया गया; प्रयोगशालाओं में तैयार किये गये उन्नत बीज, रसायनिक खाद का उपयोग, सिंचाई व्यवस्था का विस्तार तथा खेती विशेषज्ञों को इस कार्य में बड़े पैमाने पर लगाकर समूची खेती एवं पशुपालन का कायापलट कर दिया गया है। आज जनवादी बल्गेरिया में खेती और देहाती क्षेत्र की सब प्रकार के आर्थिक कार्यों की देखभाल के लिए एक नये रूप की संस्था का निर्माण किया गया है जिसका नाम है राष्ट्रीय खेती उद्योग यूनियन। इस काल में खेती की पैदावार में 2.5 गुना वृद्धि हुई है। मशीनीकरण और वैज्ञानिक तरीकों के उपयोग से खेती के क्षेत्र में उत्पादकता में 7 गुना वृद्धि हुई है। बल्गेरिया की राष्ट्रीय आय में बिना तैयार किये खेती के माल का भाग 2.5 प्रतिशत है। खेतिहर उत्पादन को तैयार करने (टिन भरने, सिगरेट बनाने, शराब बनाने इत्यादि तरीकों से उसे तैयार करने) के बाद उसे बाज़ार में भेजे जाने की क्रिया से राष्ट्रीय आय का 25 प्रतिशत भाग बनता है। विदेशी व्यापार में इस प्रकार तैयार किये गये माल का भाग करीब 30 प्रतिशत है।

1944 के पहले खेती के क्षेत्र में भी बल्गेरिया एक बहुत पिछड़ा देश था। क़रीब 11 लाख निजी फ़ार्मों में लगभग 1.2 करोड़ प्लाटों पर खेती की जाती थी। प्रति प्लाट का औसत आकार 0.3 से 0.4 हेक्टेयर था। खेती के लिए लकड़ी के बने हल मुख्य रूप से काम में आते थे। माल ढोने का कार्य बैलगाड़ियों से होता था। उस समय पूरे बल्गेरिया में केवल 3000 ट्रैक्टर थे।

उस समय प्रति हेक्टेयर जमीन पर औसत रूप से आधा किलो रासायनिक खाद का उपयोग किया जाता था।

खेतिहर उत्पादकता भी बहुत कम थी। गेहूं की पैदावार प्रति हेक्टेयर क़रीब 1250 किलोग्राम अर्थात 50 किलो प्रति एकड़ थी। मक्के का उत्पादन प्रति हेक्टेयर

करीब 1170 किलो होता था। एक गाय प्रतिवर्ष औसतन 450 लिटर दूध देती थी और मुर्गी प्रतिवर्ष औसतन 70 अंडे देती थी।

बल्गेरिया की जन क्रान्ति के बाद जॉर्जी दिमित्रोव ने खेती में सहकारी पद्धति को अपनाने का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि खेती के क्षेत्र में किसानों को समझाकर, उनके अनुभव से उन्हें उत्साहित कर, अन्ततः समाजवादी अर्थ सम्बन्ध स्थापित करने का यही लेनिनवादी तरीका है।

बल्गेरिया में शुरू में जो सहकारी खेतों का निर्माण किया गया उसमें सोवियत संघ के सामूहिक फार्म तथा बल्गेरिया की परम्परागत सहकारिता की मान्यताओं को मिश्रित किया गया। शुरू के काल में स्थापित सहकारी खेतों में खेत की जमीन पर स्वामित्व किसान का ही रहता था। उपज के बँटवारे का कुछ भाग उस किसान के खेत की जमीन के अनुपात में और बाकी भाग खेती में कार्य करने के अनुपात में किया जाता था। यह बहुत ही शुरुआती किस्म के सहकारी फार्म थे।

यह इसलिए किया गया कि सारी दुनिया के समान बल्गेरिया के किसानों को भी जमीन से बहुत मोह था। 1946 में जो भूमि सुधार किये गये उनके अनुसार खेती की ज्यादातर जमीन को व्यक्तिगत रूप से गरीब किसानों और खेत मजदूरों को बाँट दिया गया। बाँटी गयी भूमि में खुद खेती करने वाले किसानों के लिए उच्चतम सीमा 20 हेक्टेयर रखी गयी थी। बाद में कम वर्षा वाले क्षेत्र दोब्रोजा के लिये इस उच्चतम सीमा को बढ़ाकर 30 हेक्टेयर कर दिया गया। कुछ जमीन राज्य के पास रखी गयी जहाँ राजकीय फार्म बनाये गये।

कुछ वर्षों बाद 1948 में सरकार ने धनी किसानों से खेती में काम आने वाली मशीनें—करीब 3000 ट्रैक्टर और 3700 थ्रैशर मशीनें—खरीद कर विभिन्न क्षेत्रों में राजकीय ट्रैक्टर और मशीन स्टेशनों का निर्माण किया।

1948 में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का 5वाँ महाधिवेशन हुआ जहाँ यह कार्यक्रम बनाया गया कि पार्टी किसानों को समझाकर तथा खेती की उन्नत विधियों से अधिक उत्पादन की मिसाल उनके सामने रखकर उन्हें स्वेच्छा से सहकारी खेतों में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया जाय। साथ ही इस बात का व्यापक कार्यक्रम बनाया गया कि सरकार ऐसे सहकारी खेतों के लिए खेती की मशीनें, रासायनिक खाद, कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मार्ग दर्शन, सिंचाई इत्यादि सुविधाओं की भी बड़े पैमाने पर व्यवस्था करे।

जॉर्जी दिमित्रोव ने फरवरी 1947 में हुए सहकारी खेतों के राष्ट्रीय सम्मेलन में इस बात पर जोर दिया था कि किसानों को सहकारी क्षेत्र में शामिल करने का कार्य पूरी तरह स्वेच्छा से किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया था कि यह कार्य बड़ी कुशलता से, व्यावहारिकता से व धैर्य के साथ

धीरे-धीरे किया जाना चाहिए। इसमें किसी प्रकार के दबाव का उपयोग नही किया जाना चाहिए और न ही अनावश्यक तेजी लाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी मार्गदर्शन किया था कि सहकारी खेतों की व्यवस्था मे पूरी तरह प्रजातांत्रिक तरीक़ों का अपनाया जाना आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

इस काल मे जब खेती के क्षेत्र मे धीरे-धीरे सहकारी खेती की व्यवस्था का विस्तार किया जा रहा था अर्थात 1944 से 1958 के काल में उसमें सोवियत संघ द्वारा दी गयी सहायता ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। सोवियत संघ ने हज़ारों ट्रैक्टर, मशीनें, अच्छी नस्ल के पशु, नये उन्नत बीज, रासायनिक खाद तथा खेती के कार्य मे हज़ारो विशेषज्ञ बल्गेरिया को दिये जिनने खेती के क्षेत्र मे सहकारिता को लगातार आगे बढ़ाने मे बहुत बड़ा योगदान किया।

1958 तक बल्गेरिया मे 3290 सहकारी फार्म स्थापित हो गये जिनमें क़रीब 12.5 लाख परिवार शामिल थे। इन सरकारी खेतों के पास क़रीब 42 लाख हेक्टेयर भूमि थी। इस प्रकार खेती की निजी स्वामित्व की ज़मीन में से 93 प्रतिशत सहकारी क्षेत्र में आ गयी। प्रति सहकारी फ़ार्म के पास औसतन 1260 हेक्टेयर ज़मीन थी।

इसके अलावा कई राजकीय फ़ार्म भी स्थापित किये गये। राजकीय फ़ार्मों के पास क़रीब 1.6 लाख हेक्टेयर भूमि थी।

सारे खेतिहर क्षेत्र के लिये बल्गेरिया में क़रीब 209 मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन स्थापित किये गये जिनके पास हज़ारों ट्रैक्टर तथा अन्य प्रकार की खेती की मशीनें थी।

यह कार्य आसान नही था। कई प्रकार की कठिनाइयाँ सामने आयी थी। निजी स्वामित्व की ज़मीन वाले मध्यम किसान को सहकारी क्षेत्र मे शामिल होने के लिए समझाने का कार्य बहुत पेचीदा और कठिन था। सरकार तथा पार्टी के कार्य मे इस काल में कुछ त्रुटियाँ भी सामने आयीं।

इस कार्य में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की अप्रैल 1956 की ऐतिहासिक विस्तृत बैठक ने बहुत महत्वपूर्ण मार्गदर्शन किया। उस मीटिंग ने खेती के कार्य में तकनीकी सुधार, मशीनीकरण, सहकारी खेती में काम करने वाले को कार्य के मापदंड के आधार पर मुआवज़ा तथा अच्छा और ज्यादा कार्य करने के लिए ठोस लाभ तथा पैदावार के सामान के रूप मे अधिक मुआवज़ा तथा सारे कार्य मे व्यापक प्रजातंत्रीय तरीके अपनाने पर ज़ोर दिया। वास्तव मे 1947 मे जॉर्जी दिमित्रोव ने खेती के सहकारीकरण के लिए जो बुनियादी मार्ग-दर्शन किया था, अप्रैल 1956 की केन्द्रीय समिति की इस ऐतिहासिक बैठक ने बल्गेरिया के सभी क्षेत्रों की तरह खेती के क्षेत्र मे भी उसे पुनः पुष्ट कर दिया।

यही कारण है कि 1957 में टोडोर ज़िवकोव यह घोषणा कर पाये कि "अब हम अपने देशवासियों को, अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा आन्दोलन को तथा दुनिया की प्रगतिशील शक्तियों और जनता को यह गर्व के साथ बता सकते हैं कि बल्गेरिया के किसानों ने दृढ़ता दिखाकर अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर खेती के क्षेत्र में समाजवादी व्यवस्था को विजयी बना दिया है और इस प्रकार इस महान परिवर्तन में यूरोप के देशों में बल्गेरिया ने दूसरे नम्बर का गौरवशाली स्थान प्राप्त किया है।"

अप्रैल 1956 की केन्द्रीय समिति की विस्तृत बैठक के निर्णयों के परिणाम-स्वरूप बल्गेरिया के खेतिहर क्षेत्र में न सिर्फ यह ऐतिहासिक सफलता सम्भव हो पायी बल्कि खेती के क्षेत्र में नये सुधार करने के लिए भी अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाने का रास्ता भी खोल दिया।

ऐसा एक महत्वपूर्ण और दूरगामी परिणाम देने वाला परिवर्तन 1970 में लगभग पूरा किया गया। उसके पहले जो सहकारी क्षेत्र थे उनके पास भूमि उतनी ज्यादा नहीं थी। इस कारण मशीनीकरण का पूरा उपयोग करना सम्भव नहीं हो पा रहा था। इसके अलावा विभिन्न इलाकों की ज़मीन, आबोहवा, प्राकृतिक स्थितियों को देखकर खेती के विभिन्न पहलुओं अर्थात पशुपालन, मुर्गीपालन, बाज़ार के लिए पैदावार की वस्तुओं के उत्पादन जैसे तम्बाकू, अंगूर, अन्य फलों इत्यादि के बारे में भी निर्णय लेना या उसे लागू करना सम्भव नहीं था।

इसलिए जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने खेती के क्षेत्र में इस काल में एक नया महत्वपूर्ण सुधार पूरा किया। इसके अनुसार बल्गेरिया के करीब 800 सहकारी फार्मों को तथा 150 राजकीय फार्मों को मिलाकर उनकी यूनियनें बना दी गयी और इस प्रकार उन्हें बड़े रूप के खेतिहर संस्थानों में परिणत कर दिया गया। इस सुधार के फलस्वरूप प्रत्येक सहकारी फार्म के पास औसत ज़मीन करीब 4100 हेक्टेयर हो गयी और उस पर पूरे वर्ष कार्य करने वालों की संख्या 1120 हो गयी। प्रत्येक यूनियन में लगी पूंजी बढ़कर औसतन 30 लाख लेव हो गयी।

खेती में समाजवादी तरीके का यह उच्च स्तर का रूप अपनाने का लाभ यह हुआ कि मशीनीकरण, नये वैज्ञानिक तरीके अपनाने, व्यवस्था की दृष्टि से ज्यादा लाभकारी कार्यों पर विशेष ध्यान देने इत्यादि मामलों में बहुत सुधार हो पाया। उत्पादन भी बढ़ा, प्रति किसान उत्पादकता भी बढ़ी और देहाती क्षेत्र में सहकारी और सरकारी फार्मों पर काम करने वाले किसानों के जीवन स्तर में भी तेज़ी से सुधार होने लगा।

ध्यान रहे कि 1970 में यदि 15 हॉर्स पावर के हिसाब से गणना की जाय तो

सोवियत संघ में बने करीब 10 हजार ट्रैक्टर उस समय बल्गेरिया में कार्य कर रहे थे।

इस सुधार से खेती की उत्पादकता में जो सुधार और प्रगति हुई उसका एक चित्र निम्नलिखित आँकड़ों से मिल पाएगा :

चौथी पंचवर्षीय योजना काल (1960-1965) में खेती से करीब 269 करोड़ लेव उत्पादन होता था वह पाँचवीं योजना काल में (1965-1970) में बढ़कर 345 करोड़ लेव हो गया।

यदि 1952-1956 काल की कृषि पैदावार को 100 मान लिया जाय तो उसके बाद के 11 वर्षों में अर्थात 1967 तक सारी दुनिया में खेती के उत्पादन में 43 प्रतिशत वृद्धि हुई। इसी दर की वृद्धि पश्चिमी यूरोपीय देशों में हुई है। अमरीका में इस काल में यह वृद्धि 25 प्रतिशत रही है जब कि इसी काल में बल्गेरिया में खेती उत्पादन की वृद्धि 92 प्रतिशत हुई।

जनवादी बल्गेरिया में खेती के क्षेत्र में सांगठनिक सुधार और उत्पादन में तेज गति से एक नया महत्वपूर्ण दौर 1971 से शुरू हुआ। उस समय तक मशीनीकरण, वैज्ञानिकीकरण इत्यादि हर प्रकार से खेतिहर क्षेत्र में बहुत बड़ा स्तर पहुँच चुका था। इस आधार पर जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने एक नया महत्वपूर्ण कदम उठाया। इस परिवर्तन को चालू करने और लागू करने में टोडोर जिवकोव की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इस काल में सहकारी खेतों और राजकीय खेतों को मिलाकर काफ़ी बड़े खेतिहर-औद्योगिक संयंत्रों का निर्माण किया गया। इस प्रकार सारे बल्गेरिया में कुल 170 खेतिहर-औद्योगिक संयंत्र स्थापित हो गये। इन संयंत्रों के पास औसत जमीन करीब 25 हजार हेक्टेयर हो गयी।

इस कारण उत्पादन में विशेषता पैदा करने का तथा बड़े पैमाने पर हर कार्य-क्रम को हाथ में लेने का आधार बन गया। 1970 के पहले गेहूँ, धान, दालें इत्यादि का उत्पादन 40 हेक्टेयर क्षेत्रफल वाले करीब 45 हजार खेतों में अलग-अलग बँटा था। इस नये संगठन के निर्माण के परिणामस्वरूप यह कार्य 200 हेक्टेयर से 500 हेक्टेयर क्षेत्रफल की जमीन में संगठित करना सम्भव हो गया। इससे मशीनों का पूरा उपयोग, मशीनीकरण का विस्तार तथा अन्य वैज्ञानिक तरीकों का व्यापक रूप से उपयोग सम्भव हो पाया। पशुपालन के लिए बड़े-बड़े अहाते, बाड़े तथा पशुघर बनाये जा सके। ऐसे पशुघरों में पशुओं को विशेष प्रकार का पौष्टिक आहार देने का, ऐसे यंत्र लगाने का जिस कारण गायें अपने आप मुँह लगाने पर स्वच्छ पानी पी पायें इत्यादि यह सब नये वैज्ञानिक तरीके अपनाना सम्भव हो पाया। इतना ही नहीं, जमीन, जलवायु इत्यादि को ध्यान में रख इस

प्रकार का संगठन भी सभव हो पाया कि किन सयत्रो को धान की खेती अथवा अंगूर उगाने अथवा तम्बाकू उत्पादन के लिए या फलों के उत्पादन देने के लिए चुना जाय। इस प्रकार जिस भूमि या क्षेत्र से जिस वस्तु का ज्यादा और लाभकारी उत्पादन संभव था वही उसे केन्द्रित कर दिया गया। खेती से जो चीजें पैदा होती हैं उन से कई वस्तुओं को तैयार कर रखने से या उसमे अन्य चीजें बनाने मे ज्यादा लाभ होता है। तम्बाकू से सिगरेट बनाकर वेचना ज्यादा लाभकारी होता है। अगूर से शराव, ब्राडी आदि बनाना, फलों को टीनो मे बन्द करना, जगली लकडी से फर्नीचर और बाँस लकडी और घास इत्यादि से कागज बनाना, ये सब उद्योग खेती की पैदावार से सीधे रूप से सम्बन्धित हैं। इन नये खेतिहर औद्योगिक सयत्रो के बनाये जाने से खेती के साथ-साथ उसकी पैदावार से सम्बन्धित यह सब उद्योग जहाँ उनके लिए खेती का कच्चा माल उगाया जाता है उसके नजदीक ही स्थित किया जाना सम्भव हो पाया।

इस प्रकार के संगठन से यह सम्भव हो पाया कि सूअरो को मोटा बनाने का कार्य 39 ऐसे स्थानों पर केन्द्रित कर दिया गया जहाँ प्रत्येक में 15 हजार से 50 हजार शूअरो की देखभाल की जा सकती हो। मुर्गी पालन का कार्य 33 केन्द्रो पर किया जाने लगा जहाँ एक लाख से तीन लाख तक अडे देने वाली मुर्गियाँ या 30 लाख से 70 लाख तक के मुर्गी के माँस देने वाली मुर्गियो को पाला जाने लगा। गायो के लिए भी 5 हजार से 10 हजार तक शिशु गायो को रखने और उन्हें पाल कर दूध देने योग्य बनाये जाने के केन्द्र बनाये गये। इस प्रकार के स्थानीय केन्द्रीय-करण से नस्ल सुधारने का कार्य भी सुचारु रूप से करने और कृत्रिम गर्भाधान की ठीक व्यवस्था की जा सके यह सभव हो पाया। इसी प्रकार मुर्गी पालन केन्द्रो मे इन्कूवेटरो का बडे पैमाने पर प्रयोग किया जाने लगा। जहाँ बड़े पैमाने पर सूअर पालन और उन्हे मोटा करने के बाडे हैं उनके नजदीक ही उनकी कटाई कर मांस तैयार करने, विशेषकर सोसेजेस बनाने, के केन्द्र भी बनाना सभव हो पाया। जहाँ गेहूँ और धान इत्यादि की खेती होती है वहाँ यह कार्य 2500 हेक्टेयर से 5000 हेक्टेयर तक जमीन मे किया जाने लगा। ऐसे प्रत्येक क्षेत्र के पास सैकडो ट्रैक्टर और कटाई मशीनें हैं। एक मशीन चलाने वाला व्यक्ति करीब 100 हेक्टेयर से 150 हेक्टेयर तक के क्षेत्र मे काम करता है।

खेतिहर-औद्योगिक संस्थान का यह सागठनिक ढाँचा बल्गेरिया की विशेषता है। इस कार्य प्रणाली का विकास करते-करते इन सस्थानो का क्षेत्रफल स्थानीय राजकीय इकाइयो, (जैसे नगरपालिका, जिला, तहसील) से मेल खाने वाले बना दिया गया। इससे आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रशासनिक सभी कार्यों की सुचारु रूप से समन्वित निगरानी सम्भव हो पायी।

1979 मे इस प्रकार की व्यवस्था लागू करने के बाद अब बल्गेरिया मे 274

खेतिहर-औद्योगिक संस्थान हैं, 10 औद्योगिक-खेतिहर संस्थान हैं तथा आठ अन्वेषण कार्य के संयंत्र हैं। इनके पास औसतन 15 हजार हेक्टेयर जमीन है और इनकी सम्पत्तियों का मूल्य लगभग 2.5 करोड़ लेव है।

इन सब सुधारों का ही यह परिणाम है कि बल्गेरिया में खेती में मशीनीकरण का स्तर तथा प्रति व्यक्ति उत्पादकता का स्तर दुनिया के अग्रणी देशों के समकक्ष पहुँच गया है।

खेती के क्षेत्र में हर दिशा में बड़ी तेज़ गति से प्रगति हो रही है। यदि 15 हॉर्स पावर के हिसाब से गणना की जाय तो बल्गेरिया के पास 15 लाख से ज्यादा ट्रैक्टर हैं, करीब 23 हजार सम्मिलित कार्य करने वाली कटाई तथा थ्रेशर मशीनें हैं। खेती में बिजली का भी बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाने लगा है। *आज खेती उत्पादन में काम में आने वाली बिजली ऊर्जा 100 करोड़ किलोवाट* घंटे के स्तर पर पहुँच गई है। सिंचाई व्यवस्था का भी व्यापक पैमाने पर विस्तार हुआ है। आज यह स्थिति है कि बल्गेरिया की कुल खेती योग्य जमीन का 25 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग सिंचाई सुविधाओं से युक्त है।

1980 में बल्गेरिया में पशुपालन में इतना विकास हो गया कि पशुओं की संख्या 18 लाख हो गई जिनमें 7 लाख से ज्यादा गायें थीं। सूअरों की संख्या 38 लाख, भेड़ों की संख्या एक करोड़ और मुर्गियों की संख्या चार करोड़ से ज्यादा हो गई। 1 लाख 50 हजार हेक्टेयर भूमि में फलों के बाग और 2 लाख हेक्टेयर भूमि पर अंगूर की बेलें लगी हैं।

1979 में खेती के कार्य में 8 लाख 25 हजार टन रासायनिक खाद का उपयोग हुआ। 1956 में रासायनिक खाद का उपयोग केवल 50 हजार टन था।

इस तेज गति के विकास का यह परिणाम है कि 1978 में यह योजना चालू की गई है कि उत्पादकता में इतनी वृद्धि की जाय कि प्रति हेक्टेयर जमीन से 6000 किलो मक्के का उत्पादन किया जाय।

योजना ही नहीं बल्कि जो कुछ प्राप्त किया जा सका है वह अपने आप में उत्साहवर्धक ही नहीं प्रेरणादायक भी है।

आज बल्गेरिया में खेती में कार्य करने वाले प्रति व्यक्ति की औसत आय करीब 2000 लेव प्रति वर्ष है। ध्यान रहे कि खेती में कार्य करने वाले प्रत्येक परिवार के पास 0.2 से 0 5 हेक्टेयर जमीन उसकी निजी जमीन के रूप में है। इस जमीन को वह परिवार अंगूर लगाने, फल फूल लगाने, सूअर पालने इत्यादि के लिए काम में लाता है। इस जमीन से जो पैदावार होती है वह उसे स्वतन्त्र रूप में बेच सकता है। इस निजी जमीन के उत्पादन से भी उसे सैकड़ों लेव की आमदनी होती है।

बल्गेरिया मे देहाती क्षेत्र में स्कूल, सिनेमा, थियेटर, अस्पताल इत्यादि हर प्रकार के विशाल भवन नजर आते है। हर गाँव मे बिजली पहुँच गई है। खेती मे काम करने वाले परिवार न सिर्फ रेडियो, टी० वी०, कपडे धुलाई की मशीनें अपने घरों मे स्थापित कर रहे हैं—80 से 90 प्रतिशत परिवारो के घरो मे यह सब उपलब्ध हैं—बल्कि कई लोग तो मोटर गाड़ी भी खरीदने लगे हैं। लगभग हर परिवार ने अपने मकान का पूरी तरह आधुनिकीकरण पूरा कर लिया है या एकदम नया मकान बना लिया है।

जनवादी बल्गेरिया में अब शहरी और देहाती क्षेत्र का फर्क काफी हद तक समाप्त हो गया है।

आँकड़ो की यह कहानी अपने आप मे बहुत ही उत्साहवर्धक और प्रेरणादायक है। परन्तु जीवन मे इसकी झाँकियाँ देखना और भी ज्यादा प्रेरणादायक होता है।

नवम्बर 1980 मे जब मुझे बल्गेरिया जाने का अवसर मिला तब मैं कई खेतिहर-औद्योगिक सस्थानो मे गया। सबसे पहले यह कार्य देखने का सुअवसर प्रावेत्ज मे मिला। प्रावेत्ज एक छोटा-सा गाँव था। यहीं बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामत्री और बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर झिवकोव का जन्म हुआ था। उनके माता-पिता बहुत गरीब कारीगर थे। उनका पुश्तैनी मकान जैसे वह था वैसा मैंने देखा है। एक कमरा, एक छोटा-सा बरामदा कमरे के एक कोने मे ही खाना पकाने की व्यवस्था, मकान के नीचे के भाग मे पशु रखने का स्थान, एक बहुत ही गरीब घराने का वह मकान था। उसे आज उस काल के हालात का चित्र दिखाने के लिए तथा टोडोर झिवकोव के जन्म स्थान होने के कारण इसके ऐतिहासिक महत्व के कारण वैसे ही रखा गया है। परन्तु पिछले कई वर्षों मे प्रावेत्ज गाँव का कायापलट हो गया है। सोफिया से कुल 80-100 किलोमीटर दूर स्थित यह एक आधुनिक कस्बा बन गया है। बडा आधुनिक स्कूल का भवन, अस्पताल एक बहुत आकर्षक सग्रहालय यह सब मैंने वहाँ देखा। दोपहर का खाना भी वही के एक रेस्तरां में खाया। ये सब प्रावेत्ज की कायापलट का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

सहकारी खेत मे कार्य करने वाले एक परिवार के घर में हम गये। यह दम्पति, पति के माता-पिता के साथ रहते हैं। माता-पिता रिटायर हो चुके हैं और 80 से 100 लेव पेंशन प्राप्त करते हैं। परिवार का वास्तविक मुखिया, बूढे माता-पिता का मध्य आयु वाला लड़का कटाई, थ्रेशर मशीन चलाने का कार्य करता है। तनख्वाह तो वैसे 380 लेव है परन्तु अतिरिक्त कार्य कर तथा सालाना बोनस प्राप्त कर उसकी कुल आमदनी 500 लेव पहुँच जाती है। उसकी पत्नी सहकारी खेत द्वारा चलाये जाने वाले स्टोर मे हिसाब-किताब का काम करती है। उसकी तनख्वाह

क़रीब 230 लेव है। उनकी एक छोटी-सी 5 वर्ष की पुत्री भी है। इस परिवार ने गर्व से हमे दिखाया। उनके माता-पिता द्वारा निर्मित मकान का उन्होंने पहले आधुनिकीकरण किया। फिर बैंक से क़र्ज़ लेकर उसी मकान के पास उन्होंने दो-मंजिला एक नया आधुनिक मकान बना लिया है। यह मकान दक्षिण दिल्ली मे बनाये गये मकानो के स्तर का है।

दम्पति घर में ही थे। वह छुट्टी का दिन था। उन्होंने बड़ी आवभगत की कुछ तोहफे भी दिये। मैंने पूछा का क्या बैंक के क़र्ज़ के कारण उनके जीवन स्तर पर कुछ दबाव तो नही पड़ रहा है। दम्पति ने हँसकर कहा कि वे अपनी कमाई से कर्ज़ लगातार अदा कर रहे हैं और तीन वर्ष मे वह पूरा हो जाएगा। पत्नी ने गर्व से कहा, देखिये यदि बोझ होता तो हम यह कपड़े धोने की मशीन कैसे ख़रीद सकते थे। रंगीन दूरदर्शन सेट तो उनके पास चार वर्ष से है। वे यह योजना बना रहे थे कि बैंक का कर्ज पूरा होते ही एक मोटरकार ख़रीद लें।

अपनी उत्सुकता न दबा पाने के कारण मैंने महिला से पूछा कि क्या मैं उनकी कपड़ो की अलमारी खोलकर देख सकता हूँ। उन्हें यह बात अजीब-सी लगी परन्तु उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। मैंने देखा कि उस अलमारी मे दो दर्जन से ज्यादा नये-नये फ़ैशन युक्त लिबास रखे हुए थे। एक परिवार के आर्थिक और सांस्कृतिक तौर पर समृद्ध होने का यह एक महत्वपूर्ण संकेत है।

1980 में ही वार्ना के पास स्थित एक सहकारी फ़ार्म देखने का भी मुझे अवसर मिला। यह फार्म अंगूर की बेलें उगाने मे विशेष स्थान रखता है। सहकारी फ़ार्म का मुख्यालय एक भीमकाय भवन था। इस फार्म ने बिजली के लेम्पों के लिए विशेष आकर्षक ढक्कन लगाने का एक छोटा सा औद्योगिक संयंत्र भी चालू किया है। बड़े सुहावने और आकर्षक ऐसे सैकड़ो बिजली लेम्पो के ढक्कन वहाँ थे। फार्म का मुख्यालय जहाँ स्थित था उसके ठीक सामने एक बड़ा थिएटर था। पड़ौस में ही एक स्कूल था। कुछ ही दूरी पर 30 बिस्तरों का एक अस्पताल भी था। नये जीवन के यह चित्र आज भी स्मरणीय है।

1983 मे भी मुझे इन खेतिहर-औद्योगिक संस्थानों मे जाने का अवसर मिला। वार्ना के पास ही एक ऐसा फ़ार्म है जिसका नामकरण किया गया है प्रसिद्ध सोवियत जनरल सुवोरोव के नाम पर। इस फार्म की प्रगति की कहानी मैं जब सुन रहा था उस दिन मुझ पर कुछ ठंड का प्रभाव पड़ चुका था, नाक बह रही थी और बार-बार रूमाल से उसे साफ करना पड़ता था। सहकारी फार्म के व्यवस्थापक और पार्टी की सचिव ने जब यह देखा तो उन्होंने चुपके से फ़ोन कर दिया। बीस मिनट के अंदर एक महिला डाक्टर आ गई। उन्होंने मेरी जाँच की और दवाई दे दी।

परन्तु इस फार्म पर मेरा कार्यक्रम पूरा करने पर मैं दृढ़ था। चलते-चलते हम

परिवार के घर मे घुस गए। उस समय घर में एक प्रौढ महिला ही थी।

इस फ़ार्म के 70 प्रतिशत मकानों मे टेलीफोन हैं। हमारे घर पहुँचते ही प्रौढ
ला ने अपने पुत्र और पुत्रवधू को फोन कर दिया। वह हमारी आवभगत मे
गई। मैंने कहा कि मैं मकान देखना चाहता हूँ। वह बहुत बार क्षमा माँगते
दिखाने लगी और कहने लगी यह उस स्तर का नहीं है जितना दो वर्ष बाद
देख पायेंगे। तीन शयनगृह का वह अति आधुनिक मकान था। वहाँ रेडियो,
न दूरदर्शन, कपडे धोने की मशीन, गलीचो से मिट्टी हटाने की विजली से चालित
न सब कुछ था। रसोईघर मे एक वड़ा रेफ्रिजरेटर था जिसमे तरह-तरह का
, पनीर, मक्खन इत्यादि रखा था।

प्रौढ महिला चाहती थी कि हमारे लिए मछलियां भून कर हमारी आवभगत
बडी मुश्किल से हमने उन्हे ऐसा न करने के लिए राजी किया। इसी बीच
ी पुत्रवधू आ गई। वह उन्हें डाँटकर चाय-बिस्कुट इत्यादि से हमारी
भगत करने का आदेश देकर उनके निजी जमीन के बगीचे मे चली गई। जब
ाय बनी तब तक वह प्रौढ महिला बडे सुस्वादु आलूबुखारे लेकर आ गई।
ह करने लगी कि हम खाये। हमने खाया भी। वडे मीठे और स्वादिष्ट थे।
बातें चल रही थी कि प्रौढ महिला का पुत्र भी अपनी लाडा 1300 मोटरकार
कर आ गया। बडी माफी माँगने लगा। मैंने पूछकर यह जानकारी प्राप्त की
ह सहकारी खेती मे खेती विशेषज्ञ का कार्य करता है। तनख्वाह 410 लेव है।
मिलाकर वह करीब 600 लेव महीने हो जाती है। पत्नी स्कूल मे अध्या-
थी। तनख्वाह 280 लेव थी। प्रौढ महिला पेंशनयाफ्ता थी। करीब 90 लेव
मिलती थी।

रन्तु जब इस बात का जिक्र हुआ तो प्रौढ महिला उलाहना देती हुई बोली
रिवार को जो निजी जमीन दी गई है उसमे, सूअर पालने, अंगूर और
गाने का काम तो वे ही मुख्य रूप से देखती है और उस निजी जमीन की
र से जो आमदनी होती है बल्कि वह प्रौढ महिला जोर देकर कह रही थी
जो आमदनी इस निजी जमीन से करती हूँ वह पुत्रवधू की तनख्वाह से भी
है। बात सच भी थी और सारा परिवार खिलखिलाकर हँस पडा।

ल्गेरिया के देहाती क्षेत्र के परिवारों को नजदीक मे जैसा मैंने देखा है उसका
क छोटा-सा चित्र है, परन्तु यह निजी अनुभव सांख्यिकीय चित्र को हाड़-माँस
करता है।

ल्गेरिया के खेतिहर क्षेत्र की प्रगति की यह कहानी और आगे बढ रही है।
व जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने खेतिहर क्षेत्र
बल्कि सारी अर्थव्यवस्था मे एक नया महत्वपूर्ण सुधार किया है।
तिहर औद्योगिक-संस्थानो के निर्माण के बाद अब ऐसे सब संस्थानो की एक

राष्ट्रव्यापी यूनियन का निर्माण कर दिया गया है। इसका नाम है राष्ट्रीय खेतिहर औद्योगिक यूनियन. इस संस्था का निर्माण 1979 में किया गया है। अब यह यूनियन देश के सभी खेतिहर औद्योगिक संस्थानों के कार्यों का मार्गदर्शन ही नहीं करती है बल्कि यह राज्य के साथ उद्योग, खेती के लिए मशीन निर्माण, अन्य सम्बन्धित निर्माण इत्यादि की संस्थाओं का भी निरीक्षण और समन्वय यह यूनियन करती है।

इस रूप में यह यूनियन विभिन्न मंत्रालयों के काम से सम्बन्धित है।

वैज्ञानिक कार्य, प्रशासनिक व्यवस्था, उत्पादन तथा अन्वेषण इन्हें सबको एक माला में पिरोना आवश्यक है। इस सिद्धान्त को लागू करने के लिए जनवादी बल्गेरिया की सरकार, वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व और विशेषकर टोडोर जिवकोव ने जो सैद्धान्तिक तथा साथ ही व्यावहारिक और ठोस मार्गदर्शन दिया है और आवश्यकता के अनुरूप सांगठनिक संस्थाओं का निर्माण और कार्य के तरीकों को लागू करने में जो पहल उन्होंने की है वह कई अन्य क्षेत्रों की तरह बल्गेरिया की खेतिहर क्षेत्र में इस प्रेरणादायक प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण अंग रहा है।

निरंतर बढ़ता विदेशी व्यापार

द्रुत गति से आर्थिक प्रगति का यह चित्र बल्गेरिया के विदेशी व्यापार से भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। 1980 में बल्गेरिया का विदेशी व्यापार 1700 करोड़ लेव का हो गया। यह आँकड़ा 1960 की तुलना में 9 गुना ज्यादा है। प्रति व्यक्ति के हिसाब से विदेशी व्यापार के आँकड़ों की गणना की जाय तो बल्गेरिया का स्थान दुनिया के पहले 15 देशों में आता है। बल्गेरिया का विदेशी व्यापार मुख्यतया सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों तथा विकासशील देशों से है। परन्तु पश्चिमी पूंजीवादी देशों को भी बल्गेरिया काफी मात्रा में मशीनें और अन्य उपकरण निर्यात करता है। गैर समाजवादी देशों से बल्गेरिया के व्यापार अर्थात आयात-निर्यात में बल्गेरिया की विदेशी मुद्रा की स्थिति मुनाफे की है।

इस समय बल्गेरिया के व्यापारिक सम्बन्ध 112 देशों से हैं। 1971 में ये सम्बन्ध केवल 71 देशों से थे। इन 112 देशों में से 80 देशों में बल्गेरिया के व्यापारिक मिशन कार्य कर रहे हैं।

बल्गेरिया के विदेशी व्यापार का 75 प्रतिशत भाग समाजवादी देशों की आर्थिक सहयोग कौंसिल के सदस्य देशों से है। इसमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भाग अर्थात कुल विदेशी व्यापार का 50 प्रतिशत भाग सोवियत संघ से होता है।

विकासशील देशों से भी बल्गेरिया का व्यापार लगातार बढ़ा है। 1970 में यह कुल विदेशी व्यापार का केवल 5.6 प्रतिशत था। 1980 में यह बढ़कर क़रीब-क़रीब दुगुना अर्थात 9 प्रतिशत हो गया।

बल्गेरिया का व्यापार पश्चिमी विकसित पूँजीवादी देशों से भी बहुत बढ़ा है। पश्चिमी यूरोप की विश्वविख्यात फ़र्मों और सरकारों से भी कई आर्थिक समझौते किए गए हैं। बल्गेरिया पश्चिमी जर्मनी, ग्रीस, स्विट्ज़रलैण्ड, इटली, फ्रांस, ब्रिटेन, आस्ट्रिया आदि से भी काफ़ी व्यापार करता है। कुल विदेशी व्यापार का क़रीब 16 प्रतिशत इन विकसित पूँजीवादी देशों से हो रहा है।

बल्गेरिया के विदेशी व्यापार में पिछले दो दशकों में गुणात्मक परिवर्तन भी हुआ है। बल्गेरिया के द्रुत गति से औद्योगीकरण और आधुनिक तकनीक के उपयोग का परिणाम यह हुआ कि 1980 में बल्गेरिया के कुल निर्यात का 90 प्रतिशत भाग औद्योगिक उत्पादन था। इसमें 75 प्रतिशत उन वस्तुओं का था जिनका आधार खेतिहर उत्पादन नहीं है (अर्थात अंगूर की शराब, सिगरेट इत्यादि के अलावा) बल्गेरिया के विदेशी व्यापार में मशीनरी का निर्यात 13 प्रतिशत से बढ़कर 45 प्रतिशत हो गया है।

सारे विदेशी व्यापार का करीब आधा भाग रासायनिक उद्योग द्वारा निर्मित सामान है। इसमें सोडा एश तथा नये विशेष प्रकार की दवाइयाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

इसके अलावा बल्गेरिया बिजली-चालित माल ढोने की ट्रकों, इलेक्ट्रोनिक मशीनों तथा अंगूर की शराब व सिगरेट इत्यादि के निर्यात में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

समाजवादी देशों के पारस्परिक आर्थिक सहयोग कौंसिल के निर्णय के अनुसार छोटे टाइपराइटर बनाने का कार्य बल्गेरिया को सौंपा गया। बल्गेरिया हाथ में उठाकर ले जाने काबिल छोटे टाइपराइटर ऐसे बढ़िया और सस्ते बना रहा है कि उसके उत्पादन का 60 प्रतिशत से ज्यादा भाग तो निर्यात हो जाता है। मैंने वार्ना में ऐसा एक लघु टाइपराइटर देखा। यह इटली की बनी ओलिवेटी बेबी टाइपराइटर का मुकाबला करने वाली परन्तु उससे सस्ती मशीन है। इसके दाम हैं करीब 70 से 80 डालर। जापान की बनी सिल्वर रीड से यह ज़रा मँहगी है परन्तु काम करने में ज्यादा मज़बूत किस्म की मशीन है।

बल्गेरिया के विदेशी व्यापार की दूसरी विशेषता यह है कि वह जो आयात करता है उसमें से 86 प्रतिशत भाग उत्पादन के साधन अर्थात मशीनरी, टेक्नोलॉजी इत्यादि का होता है। केवल 14 प्रतिशत आयात उन वस्तुओं का होता है जो सीधे उपभोक्ता के काम में आती हैं।

बल्गेरिया में उपभोक्ता उद्योग से बने माल का भी निर्यात तेज़ी से बढ़ रहा है और वह भी पश्चिमी यूरोप के विकसित पूँजीवादी देशों में विशेष तौर पर कुल निर्यात का करीब 24 प्रतिशत भाग ग़ैर समाजवादी देशों को हो रहा है।

बल्गेरिया के बने चीनी मिट्टी के पानिशदार बर्तन, मशीनों से बने कालीन, सूती और ऊनी तैयार शुदा कपड़े, जर्मी, जूते आदि वस्तुओं का व्यापार कई देशों

से बढ़ रहा है। पश्चिमी जर्मनी, कनाडा, स्वीडन, फ़िनलैण्ड, आस्ट्रिया, अमरीका, बेल्जियम, ब्रिटेन, डेनमार्क, फ्रांस, लिबिया, ईराक, लेबनान, कुवैत, जापान इत्यादि देशों की फर्में ऐसा सामान बल्गेरिया से आयात करती हैं। बुने हुए स्वेटर तथा अन्य वस्त्र पश्चिमी जर्मनी, ऑस्ट्रिया, स्वीडन फिनलैण्ड इत्यादि में बहुत लोकप्रिय हैं।

बल्गेरिया के विदेशी व्यापार की इस मीमांसा से यह चित्र उभर कर सामने आ जाता है कि औद्योगीकरण तथा आधुनिक तकनीक का उपयोग करने में बल्गेरिया *विश्व के विकसित देशों के स्तर तक पहुँच गया है। साथ ही सामान्य उपभोक्ता के* काम आने वाली वस्तुओं के उत्पादन में भी बल्गेरिया ने ऐसा स्तर प्राप्त कर लिया है कि उसका बनाया सामान पश्चिमी विकसित पूँजीवादी देशों में भी लोकप्रिय हो रहा है और बिक रहा है।

बल्गेरिया और सोवियत संघ के व्यापार सम्बन्धों का बहुत ही सुदृढ़ आधार बना हुआ है। 1971 से 1975 के बीच सोवियत संघ ने बल्गेरिया को 5 करोड़ टन खनिज तेल, 400 करोड़ घनमीटर गैस, 3 करोड़ टन कोयला और 14 लाख *टन कोक कोयला दिया। इस प्रकार सोवियत संघ ने बल्गेरिया की खनिज तेल की* आवश्यकताओं का 99 प्रतिशत, खनिज लोहे का 50 प्रतिशत और कोयले की आवश्यकता का एक-तिहाई भाग पूरा किया।

दूसरी ओर बल्गेरिया की मशीनरी और सामान के निर्यात का 65 प्रतिशत सोवियत संघ को जाता है। सोवियत संघ की मशीनों से माल ढोने और लादने के लिए आवश्यक उपकरण की आवश्यकता की पूर्ति पूरी तरह बल्गेरिया से होती है। सोवियत संघ की सिगरेट की आवश्यकता 92 प्रतिशत, सोडा एश की 82 प्रतिशत, *तम्बाकू की 52 प्रतिशत और सब्जियों की 50 प्रतिशत* बल्गेरिया पूरी करता है। बल्गेरिया सोवियत संघ को सामान देता है उसका आधा भाग इंजीनियरिंग सामान का है।

बल्गेरिया के अन्य समाजवादी देशों के साथ भी इतने ही निकट व्यापारिक सम्बन्ध हैं।

इतना ही नहीं विकासशील देशों के साथ बल्गेरिया के आर्थिक सम्बन्ध बहुत गहरे और विस्तृत हुए हैं।

बल्गेरिया ने बहुत थोड़े समय में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के देशों में कई महत्त्वपूर्ण निर्माण-कार्य पूरे किये हैं। त्रिपोली का अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, बगदाद के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई-अड्डे का उच्चस्तरीय टेक्नोलॉजी भवन का निर्माण, ट्यूनिस, त्रिपोली और बेनगाजी में खेल-कूद के भवन, मोरक्को का डू बाँध, *सीरिया के रस्तन बाँध, लागोस में एक राष्ट्रीय थियेटर जिसमें 10 हजार सीटें हैं* और जो अफ्रीका का सबसे बड़ा थियेटर है, ईरान की कुर्दिस्तानिया सड़क, सीरिया

की औरतो बनाकिया रेलवे लाइन, अल्जीरिया का सिकदा ताप बिज
का बल्गेरिया द्वारा निर्माण यह सब इस बात की जीवंत मिसालें हैं
बल्गेरिया ने इन देशो के नव निर्माण मे कितनी और उच्चकोटि की त
यता दी है। साथ ही साथ यह खुद बल्गेरिया के उच्चस्तरीय इंजी
टेक्नोलॉजी के स्तर का द्योतक है।

यही नही जनवादी बल्गेरिया ने अल्जीरिया मे एक सूती क
सीरिया में एक बिजली के इजन निर्माण का सयत्र, अगूर की शर
सयत्र और तम्बाकू को पकाने का सयत्र, ईक्वेडोर मे एक फलो से र
बोतल मे भरने वाला सयत्र, सिगापुर मे बिजली और डीजल से चल
के निर्माण का सयत्र आदि स्थापित किये है।

भारत के साथ भी बल्गेरिया के आर्थिक सम्बन्ध बहुत ही मि
और इनमे लगातार वृद्धि हुई है। बल्गेरिया के सहयोग से भारत मे
तेजाब का कारखाना, गामा ग्लोबूलीन औषध कारखाना, और कई
सयत्र बने हैं जो फलो को काटकर डब्बा बद करने का कार्य कर रहे हैं
जनवादी बल्गेरिया का यह आर्थिक सम्बन्ध और विकसित हो रहा है

बल्गेरिया जिस तेज गति से विश्व व्यापार के क्षितिज पर ए
सितारे के रूप मे आया है और उसने जो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त क
न सिर्फ उसके द्रुत गति से हो रहे औद्योगिक और आर्थिक विकास
बल्कि वह इस बात का भी प्रमाण है कि तकनीकी स्तर मे जो स्थान
किया है और खासकर उपभोक्ता सामान उत्पादन मे जो कुशलता अ
स्तर बल्गेरिया के उद्योगों ने प्राप्त कर लिया है उसने विश्व के उ
श्रेणी मे उसे लाकर खड़ा कर दिया है।

जन-जीवन और संस्कृति

जनवादी बल्गेरिया के सर्वांगीण विकास के चित्र का एक महत्व
औद्योगिक, खेतिहर और हर आर्थिक क्षेत्र मे हुई प्रगति के साथ
जीवन अर्थात् जीवनस्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य, सस्कृति हर क्षेत्र मे हु
महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का दसवां महाधिवेशन 1971
पार्टी ने एक नया कार्यक्रम स्वीकार किया। इस कार्यक्रम मे अन्य बा
लोगो के जनजीवन मे हर क्षेत्र मे लगातार सुधार के कार्यक्रम
रूपरेखा बनाई गई और उस पर विशेष महत्व दिया गया।

इस सम्बन्ध मे टोडोर ज़िवकोव ने कहा है :

है और रहेगी। पार्टी की विभिन्न क्रम के कार्यों में उसका अंतिम उद्देश्य यही रहा है। फासिज्म के विरुद्ध और पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष के समय भी पार्टी के उद्देश्यों की यही मूल दिशा थी, यही बात 9 सितम्बर के राष्ट्रीय जन विद्रोह को संगठित करने के काम के लिए लागू होती है। यही उद्देश्य है, जो पार्टी ने राष्ट्रीय मुक्ति के बाद लागू किये गये लोकतांत्रिक तथा गुणात्मक क्रान्तिकारी परिवर्तनों को लागू करने समय और हमारे देश में समाजवादी व्यवस्था के सफल निर्माण के काम में अपने सामने मूल उद्देश्य रखे हैं। अब जब हम एक उन्नतशील रूप की समाजवादी व्यवस्था निर्माण करने के कार्य में लगे हैं तब भी पार्टी के सामने जो सर्वप्रमुख उद्देश्य है वह इंसान के जीवन का पूरा ध्यान रखना। समाजवादी व्यवस्था में यह बात अपने आप में निहित है। आम लोगों की लगातार बढ़ती हुई आर्थिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को ज्यादा-से-ज्यादा पूरा करना यह समाजवादी व्यवस्था का और इस नई समाज व्यवस्था के विकास का बुनियादी नियम है और उसका उद्देश्य है।"

1971 में पार्टी के नये कार्यक्रम स्वीकार को करने के बाद के काल में इस उद्देश्य को पूरा करने की ओर विशेष ध्यान दिया गया और बड़े महत्वपूर्ण और व्यापक कदम उठाये गये। यह इसलिए भी संभव हो पाया कि राष्ट्रीय आय में लगातार वृद्धि हुई है। यदि 1939 की राष्ट्रीय आय को 100 मान लिया जाय तो 1979 में इसमें दस गुनी से ज्यादा वृद्धि हुई है।

यदि 1952 की राष्ट्रीय आय को 100 माना जाए तो 1983 में यह 938 हो गई।

रोजगार में लगे लोगों की सालाना आमदनी में लगातार वृद्धि हुई है। 1956 में यह प्रतिवर्ष 778 लेव थी जो 1970 में बढ़कर 1486 लेव हो गई। 1979 में यह आँकड़ा 1972 लेव पहुँच गया। 1983 में प्रति व्यक्ति सालाना आमदनी बढ़कर करीब 2400 लेव हो गई है। ध्यान रहे कि हर परिवार में कम-से-कम दो व्यक्ति कमाने वाले होते हैं और कम-से-कम एक वृद्ध माता या पिता या दोनों पेंशन पाने वाले होते हैं। पेंशन की रकम भी इस काल में लगातार बढ़ाई गई है और यह 60 से 80 लेव हो गई है। इस प्रकार प्रति परिवार औसत आमदनी कम-से-कम 500 लेव तो हो ही जाती है। कुशल कारीगरों, इंजीनियरों, लेखकों, चित्रकारों, सांस्कृतिक क्षेत्र में काम करने वालों और विशेष परिश्रम का कार्य करने वाले व्यक्तियों को तनख्वाह इससे ज्यादा दी जाती है।

ध्यान रहे एक लेव का विनिमय मूल्य एक डालर से कुछ ज्यादा है। लगभग यही स्थिति खेती में कार्य करने वाले लोगों की है। उन्हें अपने निजी प्लाट से जो कमाई होती है और जो घरेलू उपयोग के लिए मिलने वाली चीजों—फल, सब्जी, . . . की शराब इत्यादि उससे स्वाभाविक लाभ मिलता है वह कभी-कभी

तनख्वाह पाने वाले व्यक्ति के परिवार से कही ज्यादा होता है।

जनवादी बल्गेरिया के नागरिको के जीवन स्तर का सही चित्र मात्र मुद्रा मे मिलने वाली तनख्वाह के आंकडे से नही किया जा सकता। हर समाजवादी देश की तरह सरकार द्वारा सभी नागरिको को अनेको सुविधाएँ निःशुल्क दी जाती है। माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्रत्येक बालक बालिका के लिए अनिवार्य ही नही बल्कि नि शुल्क है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा मे तकनीकी हुनर की या पॉलिटेक्नीक की शिक्षा भी शामिल है। उच्च शिक्षा के लिए बहुत लोगो को यह सुविधा प्राप्त है कि उनकी विशेष रुचि तथा क्षमता के अनुसार उन्हे उच्च शिक्षा, डाक्टरी, इजीनियरी, अन्वेषण इत्यादि शिक्षा का अवसर ही नही मिलता परन्तु ज्यादातर ऐसे छात्रो को सरकार की ओर से वजीफा भी मिलता है। यह वजीफा प्रति विद्यार्थी करीब 80 लेव होता है। यह लगभग 40 से 50 प्रतिशत छात्रो को मिलता है। बहुत कम शुल्क पर उनको रहने के लिए हॉस्टल और सस्ते दर पर हॉस्टलो मे स्थित केन्टीन से भोजन मिलता है।

शिक्षा की इस नि शुल्क सुविधा व्यवस्था तथा उच्च शिक्षा के लिए वजीफो के कारण बल्गेरिया के नागरिको को कितना लाभ होता है इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि करीब 90 लाख की कुल जनसख्या के इस देश मे सामान्य माध्यमिक स्कूलो से शिक्षा पाने वाले विद्यार्थियो के अलावा 1976-1980 काल में पॉलिटेक्नीकल स्कूलो से करीब 2 लाख विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर निकले। इसी काल मे टेक्नीकल स्कूलो से और कला स्कूलो से विशेष शिक्षा प्राप्त करने वालो की सख्या करीब 1.6 लाख थी। उच्च शिक्षा के लिए देश के 14 शहरो मे करीब 28 उच्च शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालय तथा इजीनियरिंग, डाक्टरी इत्यादि देने वाली संस्थाएँ हैं। पिछले पाँच वर्षों मे ऐसी सस्थाओ से शिक्षा पूरी करने वालो की सख्या करीब एक लाख थी। इनमे ज्यादातर छात्र ऐसे थे जिन्होंने इजीनियरिंग और अन्य प्रकार की टेक्नीकल शिक्षा पूरी की थी। 1980-81 वर्ष मे जिन छात्रो को सरकार की ओर से शिक्षा के लिए वजीफ़े दिये गये उनकी सख्या 34 हजार थी।

हर उम्र के बालक-बालिका के लिए शिक्षा तथा उसके देखभाल की व्यवस्था है। 1980 के अत तक 3 से 6 वर्ष की आयु वाले शिशुओं की देखभाल के लिए 6184 सस्थाएँ थी जिनमे 4 लाख 20 हजार शिशुओं को रखने की व्यवस्था थी।

इसके अलावा किंडरगार्टनो की भी बडी व्यापक व्यवस्था है। 1983 मे करीब 4 लाख शिशुओं की देखभाल किंडरगार्टनों मे की जा रही थी।

जिस तेज गति से इन सुविधाओ मे विस्तार हो रहा है उसके कारण इस योजना पर कार्य चालू है कि 1985 तक 5 वर्ष तक की उम्र के प्रत्येक शिशु को शिशु-गृह में रखा जा सके और 3 से 6 वर्ष की आयु के शिशुओ मे से 90 प्रतिशत को

किंडरगार्टन में रखा जाय।

माता को 3 महीने से 8 महीने तक की तनख्वाह वाली छुट्टी मिलती है। इसके अलावा प्रति बालक के जन्म पर एक विशेष भत्ता दिया जाता है। पहले शिशु के लिए 100 लेव, दूसरे शिशु के जन्म पर 250 लेव और तीसरे शिशु के जन्म पर 500 लेव विशेष भत्ता मिलता है।

शिशुओं की संख्या के आधार पर परिवार को उनकी तनख्वाह में विशेष भत्ता दिया जाता है। एक बच्चे पर 5 से 15 लेव, दो बच्चों पर 20 से 40 लेव, तीन बच्चों पर 55 से 85 लेव, भत्ता दिया जाता है। सैनिक सेवा करने वालों या शिक्षा प्राप्त करने वालों को प्रति बच्चे के लिए 30 लेव का भत्ता दिया जाता है।

जनवादी बल्गेरिया में बुढ़ापे या किसी कारण अशक्त होने पर पेंशन की सुविधा बहुत व्यापक और प्रजातांत्रिक है। पुरुष 60 वर्ष की आयु पर और महिला 55 वर्ष आयु पर पेंशन के हकदार बन जाते हैं। वे यदि इसके बाद भी कुछ कार्य करें तो उनकी तनख्वाह के अलावा उन्हें पेंशन भी मिलती रहती है। जनवादी बल्गेरिया में खेती में कार्य करने वालों को भी पेंशन की सुविधा उपलब्ध है।

पेंशनों में लगातार वृद्धि की जा रही है।

1979 में औद्योगिक मजदूरों, ऑफिस में कार्य करने वालों और खेतिहर मजदूरों, जिनको पेंशन मिल रही थी उनकी संख्या 20 लाख थी। इसके अलावा बीमारी के समय तथा दुर्घटनाग्रस्त लोगों को जो सहायता दी गई वह अलग थी। ऐसी सहायता करीब 65 करोड़ लेव थी।

जनवादी बल्गेरिया में प्रत्येक नागरिक को रोजगार का अधिकार है। बेकारी तो कई वर्षों पुरानी बात हो गई है। आज जनवादी बल्गेरिया में श्रमिक को पाँच दिन और 42.5 घंटे प्रति सप्ताह कार्य करना पड़ता है।

इसके अलावा प्रत्येक श्रमिक और दफ्तर में कार्य करने वाले को 14 दिन से 21 दिन तक की तनख्वाह सहित सालाना छुट्टी मिलती है। छुट्टियों के इस काल में वह अपने परिवार सहित विश्राम करने के लिए समुद्र तट पर स्थित या पहाड़ों पर स्थित विश्राम-गृहों में जा सकता है। ऐसे कार्यक्रम के खर्च का दो-तिहाई भाग राज्य द्वारा सामाजिक धन से दिया जाता है। बच्चों के लिए ऐसे विश्राम कार्यक्रम के लिए अलग से भत्ता दिया जाता है। ये सब सुविधाएँ सामाजिक फंड से प्रदान की जाती हैं। सामाजिक फंड जन जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए जितना महत्वपूर्ण योगदान देता है यदि इसकी गणना कर तथा उन उपलब्ध सुविधाओं को ध्यान में रखा जाए तभी हम जनवादी बल्गेरिया के नागरिकों के वास्तविक जीवन स्तर का मूल्यांकन कर सकते हैं। मुद्रा के रूप में मिलने वाली तनख्वाह मात्र को

किंडरगार्टन मे रखा जाय।

माता को 3 महीने से 8 महीने तक की तनख्वाह वाली छुट्टी मिलती है। इसके अलावा प्रति बालक के जन्म पर एक विशेष भत्ता दिया जाता है। पहले शिशु के लिए 100 लेव, दूसरे शिशु के जन्म पर 250 लेव और तीसरे शिशु के जन्म पर 500 लेव विशेष भत्ता मिलता है।

शिशुओं की संख्या के आधार पर परिवार को उनकी तनख्वाह मे विशेष भत्ता दिया जाता है। एक बच्चे पर 5 से 15 लेव, दो बच्चों पर 20 से 40 लेव, तीन बच्चो पर 55 से 85 लेव, भत्ता दिया जाता है। सैनिक सेवा करने वालों या शिक्षा प्राप्त करने वालो को प्रति बच्चे के लिए 30 लेव का भत्ता दिया जाता है।

जनवादी बल्गेरिया मे बुढापे या किसी कारण अशक्त होने पर पेंशन की सुविधा बहुत व्यापक और प्रजातान्त्रिक है। पुरुष 60 वर्ष की आयु पर और महिला 55 वर्ष आयु पर पेंशन के हकदार बन जाते हैं। वे यदि इसके बाद भी कुछ कार्य करें तो उनकी तनख्वाह के अलावा उन्हें पेंशन भी मिलती रहती है। जनवादी बल्गेरिया मे खेती मे कार्य करने वालों को भी पेंशन की सुविधा उपलब्ध है।

पेंशनो मे लगातार वृद्धि की जा रही है।

1979 मे औद्योगिक मजदूरो, ऑफिस मे कार्य करने वालों और खेतिहर मजदूरो, जिनको पेंशन मिल रही थी उनकी संख्या 20 लाख थी। इसके अलावा बीमारी के समय तथा दुर्घटनाग्रस्त लोगों को जो सहायता दी गई वह अलग थी। ऐसी सहायता करीब 65 करोड लेव थी।

जनवादी बल्गेरिया में प्रत्येक नागरिक को रोज़गार का अधिकार है। बेकारी तो कई वर्षों पुरानी बात हो गई है। आज जनवादी बल्गेरिया में श्रमिक को पाँच दिन और 42.5 घटे प्रति सप्ताह कार्य करना पड़ता है।

इसके अलावा प्रत्येक श्रमिक और दफ्तर मे कार्य करने वाले को 14 दिन से 21 दिन तक की तनख्वाह सहित सालाना छुट्टी मिलती है। छुट्टियों के इस काल मे वह अपने परिवार सहित विश्राम करने के लिए समुद्र तट पर स्थित या पहाड़ों पर स्थित विश्राम-गृहो मे जा सकता है। ऐसे कार्यक्रम के खर्च का दो-तिहाई भाग राज्य द्वारा सामाजिक धन से दिया जाता है। बच्चो के लिए ऐसे विश्राम कार्यक्रम के लिए अलग से भत्ता दिया जाता है। ये सब सुविधाएँ सामाजिक फ़ंड से प्रदान की जाती हैं। सामाजिक फ़ंड जन जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए जितना महत्वपूर्ण योगदान देता है यदि इसकी गणना कर तथा उन उपलब्ध सुविधाओं को ध्यान मे रखा जाए तभी हम जनवादी बल्गेरिया के नागरिकों के वास्तविक जीवन स्तर का मूल्यांकन कर सकते है। मुद्रा के रूप मे मिलने वाली तनख्वाह मात्र को

ध्यान में रखकर जन-जीवन के उच्च स्तर का सही मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

जन-स्वास्थ्य

जन-जीवन में शिक्षा, शिशुओं की देखभाल के अलावा एक महत्वपूर्ण बात है जन-स्वास्थ्य की।

जनवादी बल्गारिया में जन-स्वास्थ्य की सुविधा हर नागरिक को निःशुल्क उपलब्ध है। इसके लिए जनवादी सरकार ने 41 पॉलिक्लीनिक अस्पतालों, विशेष सेनेटोरियम इत्यादि का एक व्यापक जाल बिछा दिया है। बीमारी में उपचार की सुविधा दूर-दराज गाँवों तक उपलब्ध है।

बल्गेरिया में प्रति हजार आबादी के पीछे अस्पताल में बिस्तरों की संख्या पर्याप्त है। 1980 में बल्गेरिया में अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या करीब 75 हजार थी जिनमें से करीब 19 हजार सेनेटोरियमों में थीं। 1983 में प्रति हजार जनसंख्या के पीछे अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या करीब 75 पर पहुँच गई। यह सुविधा कितनी व्यापक है इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रति एक हजार जनसंख्या पर जहाँ नर्सों की संख्या 1952 में 6.4 थी वह 1970 में बढ़कर 25.3 हो गई और 1983 में यह बढ़कर 48.2 हो गई। 1985 तक प्रति एक हजार आबादी के पीछे 50 नर्सें हो जायेंगी जो दुनिया के मौजूदा माप-दंडों को देखते हुए बहुत ही उच्च स्तर की सुविधा है।

इसी प्रकार प्रति एक हजार आबादी पर डाक्टरों की संख्या जो 1952 में 4 6 थी वह 1970 में 15.8 हो गई और 1983 में बढ़कर 24 0 हो गई। 1985 में प्रति एक हजार आबादी के पीछे जनवादी बल्गेरिया में डाक्टरों की संख्या 25 हो जाएगी। विश्व के विकसित पूँजीवादी देशों से तुलना की जाए तो यह संख्या बहुत ही आगे बढ़ी हुई है।

अस्पतालों में आधुनिकतम यंत्र और मशीनों का उपयोग किया जाता है। आज जनवादी बल्गेरिया में प्रति 400 बीमारों के लिए एक एम० डी० उपलब्ध है तथा प्रति 1500 बीमारों के पीछे एक दाँतों का विशेषज्ञ उपलब्ध है। इस मामले में जनवादी बल्गेरिया ब्रिटेन, जापान, अमरीका और पश्चिमी जर्मनी से कहीं आगे है।

बल्गेरिया में अस्पतालों की जो सुविधा उपलब्ध है उनमें करीब पाँचवाँ भाग ऐसे विशेष अस्पतालों का है जहाँ मानसिक या स्नायु मनोविज्ञान इत्यादि के लिए विशेष सुविधा प्राप्त है। दुर्घटना अथवा पुष्ट पदार्थों की कमी के कारण जो रोग हो जाते हैं जिनमें शरीर के विभिन्न भागों को लगातार कसरत या बिजली किरण या विशेष किरणों या विभिन्न तापमानों पर पानी या विशेष नमकयुक्त पानी या

विशेष प्रकार के रसायन युक्त कीचड के उपयोग से ठीक किया जा सकता है, उसकी भी सुविधा इन विशेष अस्पतालों में उपलब्ध है।

जनवादी बल्गेरिया में जन-स्वास्थ्य सुविधा की जो यह व्यापक और उच्च स्तरीय सुविधा उपलब्ध है इसका परिणाम यह हुआ है कि मलेरिया, पेचिश टाइफस, पोलियो, इत्यादि बीमारियाँ उस देश से पूरी तरह समाप्त कर दी गई हैं। चेचक जैसी बीमारी तो कई वर्षों पहले समाप्त कर दी गई।

बल्गायेवोग्राड जिले में एक अस्पताल मैंने देखा। वहाँ शिशुओं के लिए एक विशेष विभाग कायम था। प्रत्येक शिशु का पूरा रिकार्ड वहाँ रखा जाता है। एक्सरे, खून की जाँच, पेशाब और दस्त की जाँच, दाँतों और आँख की जाँच सब प्रकार का उस इलाके के प्रत्येक शिशु का रिकार्ड वहाँ रखा जाता है। उस विभाग की मुखिया एक महिला डाक्टर थी। वह नौजवान थी। मैंने उनसे पूछा कि क्या कभी मीजल्स बीमारी का कोई शिशु आया है। वह पूछने लगी यह बीमारी क्या होती है। मैंने बताया कि इसमें शिशु को बुखार और तेज बुखार हो जाता है फिर पहले सीने पर और बाद में मुँह पर कुछ दाने उभर कर आते हैं। वह डाक्टर हालाँकि एक विशेषज्ञ थी परन्तु वह समझ नहीं पाई। वह गई और एक बुजुर्ग महिला डाक्टर को बुलाकर ले आई। अब मैंने यह प्रश्न उनसे किया तो वे हँसने लगीं। कहने लगीं कि आज से बीस वर्ष पहले यह बीमारी यहाँ हुआ करती थी। अब शिशु के जन्म के तत्काल बाद विभिन्न संक्रामक बीमारियों की रोकथाम के लिए देश भर के अस्पतालों में जो टीके देने की व्यवस्था है उस कारण यह बीमारी होती ही नहीं। हमारे आज के प्रशिक्षित डाक्टरों को हैजा व चेचक की तरह, इस बीमारी की जानकारी नहीं है। यह बीमारी हमारे शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य शिक्षा में केवल मात्र एक ऐतिहासिक अनुसंधान की बात रह गई है।

यह प्रश्न और उत्तर अपने आप में जनवादी बल्गेरिया की जन-स्वास्थ्य व्यवस्था के कारगर होने का तथा उसके उच्च स्तर का परिचायक है।

सोफिया में मैंने केन्द्रीय क्लिनिकल अस्पताल को देखा। सभी विभागों को देखा। मेरी विशेष दिलचस्पी तो फिजियो थेरेपी विभाग और लेबोरेटरी विभाग में। फिजियो थेरेपी विभाग जब मैंने देखा तो मैं वास्तव में अवाक् हो गया। मेरा अनुमान था कि कलकत्ता का फिजियो थेरेपी विभाग काफी उच्च स्तर का है और हर तरह बढ़ा चढ़ा है। परन्तु सोफिया के इस अस्पताल के इस विभाग को देखकर मुझे ऐसा लगा कि उसने डाक्टरी उपचार और प्राकृतिक उपचार को मिलाकर देखें तो कलकत्ता के इस विभाग से कई गुनी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। मैंने इलेक्ट्रो थेरेपी की अत्याधुनिक मशीनों की जानकारी की [illegible] हासिल की है।

अब मैं लेबोरेटरी विभाग में गया और खून की जाँच करने वाले विभाग में पहुँचकर मैंने देखा कि वहाँ ऐसी मशीनें लगी हुई हैं जो चंद सेकण्डों में खून

लगाकर थोड़ा-सा खून निकाला जाए और उसे मशीन में ठीक रूप से रख दिया जाए तो खून में ग्लूकोज, कोलेस्ट्रॉल, यूरिया इत्यादि सभी प्रकार की जाँच पूरी होकर कम्प्यूटर से यह परिणाम पाँच मिनट में आ जाता है।

मैं जब वहाँ गया तब एक नया जापानी यंत्र आ चुका था जिसे शीघ्र चालू किया जाने वाला था। खून की जाँच का वह दुनिया में अतिआधुनिक यंत्र है। पश्चिमी पूँजीवादी देशों का प्रचार तंत्र और खासकर अमरीका का प्रचार तंत्र लगातार यह प्रचार करते रहते है कि उनके देशों में मजदूरों और कर्मचारियों की तनख्वाह का स्तर कितना ऊँचा है। परन्तु वे लोगों से यह छिपाते हैं कि अपनी तनख्वाह का 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत भाग तो कर्मचारी को मकान के किराए के लिए देना पड़ता है जबकि जैसा पहले उल्लेख किया जा चुका है बल्गेरिया में यह प्रति परिवार ज्यादा-से-ज्यादा 5 से 8 प्रतिशत होता है।

परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात है जन-स्वास्थ्य की। दुनिया के अग्रणी पूँजीवादी देश अमरीका में चिकित्सा निजी क्षेत्र में है और किसी भी व्यक्ति को जो कोई इलाज कराना हो उसको उसका शुल्क देना पड़ता है।

मेरे एक मित्र का लड़का अमेरिका में था। उसे दाँत में तकलीफ हो गई। दाँतों के डाक्टर के पास गया। पूछा तो पता चला कि दाँत निकलवाने और नया दाँत लगवाने का खर्च इतने डालर होगा। मेरे मित्र के लड़के ने हिसाब लगाया कि इसमें यदि वह 200 डालर जोड़ दे तो वह अमेरिका से हवाई जहाज में भारत आकर वापस जा सकता है।

उसने यही किया। भारत में उसके इतने मित्र थे कि दाँत निकालने का और नया दाँत लगाने का खर्च लगभग कुछ नहीं हुआ। यदि यह छोटी-सी स्वास्थ्य-सुविधा वह अमरीका में कराता तो उसे भारत आने-जाने के हवाई जहाज खर्च के लगभग बराबर डालर खर्च करने पड़ते।

जनवादी बल्गेरिया में यह सब जन-स्वास्थ्य सेवा, दवाई, इलाज सब नि शुल्क है। नागरिकों के जीवन में यह कितनी बड़ी सुविधा है और यदि जन-जीवन स्तर का तुलनात्मक मूल्यांकन करना हो तो यह सुविधा कितनी महत्वपूर्ण है इसका अनुमान ही लगाया जा सकता है।

जनवादी बल्गेरिया की व्यापक और बारगर जन-स्वास्थ्य सुविधा का यह परिणाम हुआ है कि बल्गेरिया में संभावित आयु बढ़कर 71 वर्ष हो गई है।

इसका परिणाम यह अवश्य हो रहा है कि जनवादी बल्गेरिया की सरकार को बुढ़ापे की पेंशन देने में सख्यात्मक और रकम के रूप में ज्यादा बोझ वहन करना पड़ता है परन्तु एक जनवादी सरकार के लिए एक उच्चस्तर पर पहुँची हुई समाज व्यवस्था के नेतृत्व के लिए यह महान संतोष का विषय है।

विज्ञान-कला-संस्कृति

किसी भी देश की प्रगति का एक महत्वपूर्ण मापदंड है कि उसने विज्ञान, कला और संस्कृति के क्षेत्र मे कितनी प्रगति की है।

जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व की सदा से यह नीति रही है कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शिक्षा और अन्वेषण कार्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। इस कार्य के लिए विशेष अनुसंधान और अन्वेषण सस्थाओ का निर्माण किया गया। इस क्षेत्र मे जनवादी बल्गेरिया को सोवियत संघ से विशेष सहायता मिली है। जनवादी बल्गेरिया की विज्ञान और अन्वेषण के क्षेत्र मे हुई प्रगति उसके और सोवियत सघ के तथा अन्य समाजवादी देशों के बीच घनिष्ठ सम्बन्धों का और विशेष जानकारी के आदान-प्रदान का परिणाम है।

शुरु के वर्षों मे ऐसी वैज्ञानिक अनुसंधान और अन्वेषण की संस्थाओ की स्थापना मे सोवियत सघ के विशेषज्ञो ने अपनी सेवाएँ देकर महान योगदान दिया। साथ ही हजारो हजार बल्गेरियन वैज्ञानिकों, इंजीनियरो तथा अन्य अन्वेषण कार्य मे लगे लोगो को सोवियत संघ ने अपने देश मे और बल्गेरिया में प्रशिक्षण दिया।

अप्रैल 1956 की बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की ऐतिहासिक मीटिंग मे प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट मे टोडोर जिवकोव ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि बल्गेरिया का द्रुत गति से विकास करने के लिए विज्ञान और टेक्नोलॉजी की आधुनिक उपलब्धियो का पूरा उपयोग किया जाए और इस क्षेत्र मे बल्गेरिया को जल्दी-से-जल्दी अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समान स्तर तक पहुँचना होगा। टोडोर जिवकोव ने अपनी रिपोर्ट मे इस बात पर भी विशेष जोर दिया कि अनुसधान और अन्वेषण के कार्य का देश के अर्थतंत्र मे उपस्थित समस्याओं और उनके हल से सीधा और निकटतम सम्बन्ध रहना चाहिए। इसी नीति के परिणाम स्वरूप कुछ वर्षों की तैयारी के बाद बल्गेरिया की जनवादी सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने न सिर्फ अनुसधान और अन्वेषण कार्य के लिए अधिक धनराशि उपलब्ध कराई, ऐसी सस्थाओं का विस्तार किया बल्कि यह भी निर्णय लिया और उसे लागू किया कि इन अनुसधान और अन्वेषण सस्थाओ के मुख्यालय उसी क्षेत्र मे स्थित किए जाने चाहिए जहाँ उस वस्तु विशेष या उस उद्योग विशेष के उत्पादन की बहुतायत हो। यही बात खेती के क्षेत्र में जैसे अगूर, तम्बाकू तथा इनसे बनी वस्तुओ के लिए भी लागू की गई है।

आज जनवादी बल्गेरिया मे 400 अनुसधान और अन्वेषण संस्थान कार्य कर रहे हैं। इन सस्थानों मे 24 हजार से ज्यादा वैज्ञानिक कार्य कर रहे हैं। इनमें 7000 विज्ञान के केन्डीडेट, है करीब 600 विज्ञान के डाक्टर हैं। इनका मार्गदर्शन करने ˜, करीब 800 प्रोफेसर हैं और 40 अकादमी सदस्य हैं। इन संस्थानों मे जो

कार्य होता है उसमे स्थल पर कार्य करने वाले वैज्ञानिको का भी उपयोग किया जाता है। इस कार्य मे 7 हजार से ज्यादा अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेषज्ञ लगे हैं। इसके अलावा डाक्टरी क्षेत्र, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र मे कार्य करने वाले अनुसधानकर्ता जो इस कार्य मे लगे हैं उनकी सख्या करीब 4 हजार है।

1960 मे अनुसंधान और अन्वेषण कार्य के लिए राष्ट्रीय आय का केवल मात्र आधा प्रतिशत दिया जाता था। उस काल की तुलना मे आज राष्ट्रीय आय कई गुना बढ़ गई है और इस बढ़ी राष्ट्रीय आय का 3.5 प्रतिशत भाग इस कार्य के लिए सुरक्षित रखा जाता है।

बल्गेरिया मे अनुसंधान और अन्वेषण कार्य की शीर्षस्थ सस्था है बल्गेरिया की विज्ञान अकादमी। इस अकादमी के नीचे 65 अन्वेषण यूनिट हैं तथा 51 संस्थाएँ हैं। इसके अलावा सात विशेष अनुसधान संस्थाओ से भी इसका सम्बन्ध है। इस अकादमी के 9 ऐसे समन्वित और मिले-जुले केन्द्र हैं जो विभिन्न विश्वविद्यालयो के सम्बन्धित विभागो से सम्पर्क रखते हैं।

जनस्वास्थ के क्षेत्र मे बल्गेरिया की एक विशेष आयुर्विज्ञान अकादमी है जो देश भर में डाक्टरी शिक्षा प्रदान करने वाली सस्थाओ तथा विभिन्न विशेष क्षेत्र मे ध्यान देने वाले अस्पतालो के विभागो मे सम्पर्क रखती है और उनका मार्गदर्शन करती है।

उच्च शिक्षा प्रदान करने वाली सस्थाओ का भी अनुसधान और अन्वेषण कार्य मे शामिल कर लिया गया है।

इस प्रकार के विशेष प्रयत्नो का ही यह परिणाम है कि 1976 से 1980 के काल मे इन उच्च शिक्षा सस्थानो के इन विभागो ने वैज्ञानिक क्षेत्र की करीब 3800 समस्याओं का अध्ययन किया। इस प्रकार के अध्ययन से जो परिणाम निकाले गए उनमे से करीब 1500 को राष्ट्रीय अर्थतन्त्र मे उपयोग मे लाया गया जिसके परिणामस्वरूप करीब 22 करोड लेव की बचत हुई है।

हर योजना काल के दौरान अनुसधान और अन्वेषण करने वाली सस्थाओ के सामने कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाते हैं जिन पर कार्य पूरा और सफल होने पर उनका अर्थतन्त्र में उपयोग किया जाता है।

1961 से 1985 के काल मे राष्ट्रीय महत्व की ऐसी 950 समस्याएँ अनुसधान और अन्वेषण के लिए प्रस्तुत की गई हैं।

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है इस कार्य मे जनवादी बल्गेरिया और सोवियत सघ के बीच अत्यन्त घनिष्ठ सहयोग के सम्बन्ध है। जनवादी बल्गेरिया का इस क्षेत्र मे सहयोग अन्य समाजवादी देशो मे भी अत्यन्त घनिष्ठतम है। यह सहयोग विकासशील देशो से भी है क्योंकि विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र

में जनवादी बल्गेरिया अब इस स्तर पर पहुँच गया है कि उसने कई पैटेन्ट पश्चिमी विकसित पूँजीवादी देशों को भी बेचे हैं।

अब तक सोवियत संघ ने जनवादी बल्गेरिया को 7 हज़ार विशेष नक्शे तथा तकनीकी पत्र उपलब्ध कराये हैं। सोवियत संघ के करीब 200 अनुसंधान तथा अन्वेषण संस्थान और जनवादी बल्गेरिया के 160 ऐसे संस्थान क़रीब 600 प्रश्नों पर संयुक्त अनुसंधान और अन्वेषण का कार्य कर रहे हैं। इनमें ऑटोमेशन इलेक्ट्रॉनिक, बिजली इंजीनियरिंग, मशीन निर्माण, धातुविज्ञान, आणविक ऊर्जा तथा खेती की समस्याएँ शामिल हैं। इसके अलावा समाजवादी देशों के सयुक्त आर्थिक सहयोग परिषद् के देशों के साथ करीब 300 प्रश्नों पर जनवादी बल्गेरिया मिला-जुला अनुसंधान कार्य कर रहा है।

अंतरिक्ष क्षेत्र में विज्ञान के क्षेत्र में सयुक्त कार्य करने में भी जनवादी बल्गेरिया महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वह इन्टरकोसमोस संस्था का एक सक्रिय सदस्य है।

जनवादी बल्गेरिया ने अंतरिक्ष क्षेत्र में अनुसंधान कार्य मे काफी महत्वपूर्ण सफलताएँ प्राप्त की हैं। वह आज इस बात में सक्षम है कि अंतरिक्ष में यान भेज पाए।

1972 मे जनवादी बल्गेरिया ने बिना इंसान चालित इंटरकोसमोस अंतरिक्ष यान में अपने वैज्ञानिक उपकरण रख कर उन्हें अंतरिक्ष क्षेत्र में भेजा। इस प्रकार अंतरिक्ष क्षेत्र की टेक्नोलॉजी मे प्रवेश करने वाले देशों में सारी दुनिया में बल्गेरिया ने 18वाँ स्थान प्राप्त कर लिया।

पूरे बाल्कान क्षेत्र के देशों में अंतरिक्ष अनुसंधान कार्य में जनवादी बल्गेरिया सबसे अग्रणी है।

इस क्षेत्र मे जनवादी बल्गेरिया और सोवियत संघ के बीच सहयोग ने एक ऐतिहासिक स्तर प्राप्त कर लिया जब 10 से 12 अप्रैल 1979 में बल्गेरिया के अंतरिक्ष उड़ान भरने वाले जॉर्जी इवानोव ने सोयूज़-33 अंतरिक्ष यान जिसके कमाण्डर सोवियत संघ के निकोलाई रूकाविश्निकोव थे उसमें सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में यात्रा की। जनवादी बल्गेरिया की अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र में यह एक महान उपलब्धि थी। उसके बाद के वर्षों में जनवादी बल्गेरिया विज्ञान और अनुसंधान के इस उच्च क्षेत्र में लगातार प्रगति कर रहा है।

कला और संस्कृति

बल्गेरिया की कला और संस्कृति की धरोहर बहुत पुरानी है जिसका उल्लेख हम कर चुके हैं। बल्गेरिया की सांस्कृतिक धरोहर की यह विशेषता रही है कि वह ... मानवतावादी परम्पराओं में और अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध भावनाओं में

ओत-प्रोत रही है।

कई शताब्दियों के विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव और कई बार क्रूर दबाव के बावजूद बल्गेरिया का सांस्कृतिक विकास प्रगति करता रहा। इस काल में उसने विभिन्न संस्कृतियों की अच्छी बातों को आत्मसात भी किया है।

जनवादी बल्गेरिया ने समाजवाद के निर्माण के साथ-साथ एक नए मानव और नए सांस्कृतिक मापदंडों और मान्यताओं का विकास किया है परन्तु लोक-संस्कृति की अपनी मूल्यवान धरोहर को उसने क़ायम रखा है और उसे विकसित होने का मौका दिया है। बल्गेरिया के गाँवों में पुरुषों और विशेषकर महिलाओं के लिबास तरह-तरह के रंगों से लैस कसीदे सेकढ़े हुए सूती, ऊनी और चमड़े के लिबासों का रहा है। घरों में सजावट के भी ऐसे ही आकर्षक रंगीन कसीदे, खाने के टेबलों पर विशेष प्रकार के चीनी मिट्टी के बने बर्तन, चम्मच इत्यादि यह सब बल्गेरिया की संस्कृति की धरोहर हैं। जनवादी बल्गेरिया में इस धरोहर को प्रोत्साहित किया जा रहा है। बल्गेरिया के रमणीक पर्यटन और विश्राम स्थान वार्ना जो कि अपनी सुनहरी मिट्टी के समतल समुद्रतट के लिए विश्व विख्यात है, में आज भी कई ऐसे रेस्तराँ हैं जहाँ इस परंपरागत धरोहर को क़ायम रखा गया है। नवम्बर 1980 में मल्लिक के छोटे से मनहर गाँव में हो या जुलाई 1983 में वार्ना के एक इस प्रकार के विशेष रेस्तराँ में हो मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा है।

इन रंगीन कसीदेदार वस्त्रों को देखकर मुझे राजस्थान याद आ गया क्योंकि रंगीन राजस्थान और गुलाबों के देश बल्गेरिया के विशेषकर महिलाओं के वस्त्रों में रंगभरे कसीदों में बहुत समानता थी।

हम जनवादी बल्गेरिया के अतिथि थे। भोज के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम करने वाले पुरुषों और महिलाओं ने हम सब अतिथियों को परंपरागत नृत्य में शामिल होने का निमंत्रण दिया। यह नाच धमाल के सुर का ही एक नाच था। अंत में पुरुष और महिला हाथों में हाथ डाल कर गोल-गोल नाच करती थीं। मुझे राजस्थान के घूँदी नृत्य की याद आ गई। इस सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने में मुझे तो कोई कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ बल्कि मुझे तो बल्गेरिया के भाईचारे, सौहार्द और आत्मीयता की यह एक अमिट यादगार का अनुभव हुआ।

जनवादी बल्गेरिया का सांस्कृतिक कांग्रेस का पहला सम्मेलन 1967 में हुआ जिसमें इस कार्य की देखभाल करने के लिए एक संस्थान का निर्माण किया गया। इसका नाम है बल्गेरिया की कला और संस्कृति का संस्थान। उस सम्मेलन के पहले स्थानीय पैमाने पर भी सम्मेलन हुए और नगरपालिकाओं, शहरों तथा जिलों के पैमाने पर सांस्कृतिक समितियों का गठन किया गया। इसका धीरे-धीरे विकास हुआ और 1974 में एक नई व्यापक संस्था का निर्माण किया गया। इसका नाम था "बल्गेरिया की कला, संस्कृति, प्रचार साधनों तथा नए कलात्मक कार्यों की

विकास सस्थान।"

इस कार्य को पूरा करने के लिए सारे देश में सांस्कृतिक कला इत्यादि के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सुविधाएँ उपलब्ध की गईं। 1970 में बल्गेरिया मे 46 थियेटर थे। 1980 मे उनकी संख्या बढ़कर 58 हो गई है। इन थियेटरों में दर्शकों की सख्या मे भी आशातीत प्रगति हुई है। जहाँ 1970 में इन थियेटरों मे 22 हज़ार लोग इनके कार्यक्रमो को देख सकते थे वहाँ 1980 मे प्रतिदिन क़रीब 30 हज़ार लोग इन कार्यक्रमों को देख सकने की स्थिति में थे।

यह विकास न सिर्फ़ ऐसे थियेटरो की सख्या और दर्शकों की दृष्टि से हुआ बल्कि इन थियेटरो मे जो कार्यक्रम दिखाए गए उनमें भी बहुत प्रभावशाली वृद्धि हुई। जहाँ 1970 मे क़रीब 13 हज़ार ऐसे कार्यक्रम होते थे वहाँ 1980 में इनकी संख्या 17 हज़ार से ज्यादा हो गई।

कला और संस्कृति के क्षेत्र मे आज जनवादी बल्गेरिया अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुका है।

1978 मे जनवादी बल्गेरिया ने यह कार्यक्रम हाथ मे लिया कि प्रख्यात निकोलस कोस्तेटिनोविच टोरिच की कृतियो को राष्ट्रीय महत्व का स्थान दिया जाए। उसके बाद दूसरे वर्ष में लियोनार्दो दा विंचि की कृतियों को यह राष्ट्रीय महत्व का स्थान दिया गया। उसके बाद महान लेनिन के 110वें जन्मदिवस के उपलक्ष मे पूरे देश में सांस्कृतिक तथा कलाओ के कार्यक्रमों का एक व्यापक वर्ष मनाया गया।

संस्कृति और कला के क्षेत्र में प्रगति का यह परिणाम हुआ कि जनवादी बल्गेरिया कई अंतर्राष्ट्रीय सास्कृतिक कार्यक्रमो का अतिथि देश बन गया है।

इनमे उल्लेखनीय है सोफिया का अंतर्राष्ट्रीय ओपेरा गायको का समारोह, वार्ना का अन्तर्राष्ट्रीय बेले कार्यक्रम, सोफ़िया का अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला तथा अंतर्राष्ट्रीय गायक प्रतियोगिता समारोह इत्यादि।

जुलाई 1983 मे जब मैं वार्ना में था उस समय मुझे दो ऐसे अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक समारोहों को देखने का सुअवसर मिला। एक था नौजवान बालिकाओं का शारीरिक कला प्रदर्शन का अंतर्राष्ट्रीय समारोह और दूसरा था अंतर्राष्ट्रीय बैले प्रतियोगता समारोह। दोनों कार्यक्रम बहुत ही सुहावने थे। अंतर्राष्ट्रीय बैले प्रतियोगता समारोह का विशेष उल्लेख करना आवश्यक है। यह कार्यक्रम करीब बीस दिन चला। मुझे सबसे बेहतर टीमो के कार्यक्रम प्रदर्शन को देखने का मौक़ा मिला। वैसे तो इस कार्यक्रम मे चालीस से ज्यादा देशों ने भाग लिया था। क्यूबा सहित सभी समाजवादी देशों के बैले नृत्य करने वाली टीमें इसमें शामिल थीं। परन्तु इनके अलावा अमरीका, जापान, ग्रीस, ब्रिटेन, फ्रांस इत्यादि कई विकसित

पूँजीवादी देशों की टीमों ने भी उसमे भाग लिया। दो दिन तक मैंने ये कार्यक्रम देखे। हालांकि उस स्टेडियम मे लोग इतने खचाखच भरे थे और मौसम भी गर्म था इसलिए शारीरिक रूप से कुछ असुविधा का अनुभव अवश्य हुआ परन्तु यह कार्यक्रम इतना मनमोहक और आकर्षक था कि मैं सीट से उठ ही नही पाया। अंतराल के समय कोका कोला के लिए बड़ी भीड़ लगती थी। परन्तु हिन्दुस्तानी अतिथि देखकर उन्होंने मुझे लाइन में खड़े होने के लिए मजबूर नहीं किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमो मे जनवादी बल्गेरिया ने यह जो ख्याति और मान प्राप्त कर लिया है वह बाल्कान के एक छोटे से देश के लिए विशेष उपलब्धि मानी जानी चाहिए।

जनवादी बल्गेरिया ने संस्कृति के अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे एक और महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है। 1979 मे बल्गेरिया की राजधानी सोफिया मे बालको का पहला अंतर्राष्ट्रीय समारोह हुआ। भविष्य के जनक बालक-बालिकाओं के अंतर्राष्ट्रीय समारोह को अपनी राजधानी सोफिया मे सफलतापूर्वक आयोजित कर जनवादी बल्गेरिया ने संस्कृति के क्षेत्र में महान उपलब्धियो की शृंखला मे एक और महत्वपूर्ण कड़ी जोड़ दी है।

जनवादी बल्गेरिया की इन उपलब्धियों ने अपने देश मे संगठित किए जा रहे कार्यक्रमों का आधार रखा है।

आज बल्गेरिया के नागरिकों मे प्रत्येक पांच व्यक्तियो के पीछे एक व्यक्ति इस प्रकार की सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त कर पा रहा है। पुस्तक प्रकाशन में और थियेटर सुविधाओ में बल्गेरिया का स्थान दुनिया के अग्रणी देशो मे है। पूरे बल्गेरिया मे करीब 35 हजार सांस्कृतिक संस्थाएँ सक्रिय कार्य कर रही हैं। बल्गेरिया मे पुस्तकालयों का तांता लगा है। पूरे देश मे करीब 10 हजार पांच सौ पुस्तकालय हैं। देश मे 58 ओर्केस्ट्रा कार्य कर रहे है। राज्य द्वारा सहायता प्राप्त 209 संग्रहालय और कलाकृतियो के प्रदर्शक संग्रहालय हैं। स्थानीय पैमाने पर विभिन्न इलाको में 4500 सामुदायिक सांस्कृतिक केन्द्र हैं जिनके पास अपने खुद के भवन हैं। इसके अलावा नौजवानो के संगठन ट्रेड यूनियनो इत्यादि के 265 सांस्कृतिक केन्द्र हैं। नौजवान नवसिखिए कलाकारों की करीब 55 हजार कम्पनियाँ हैं जो कारखानो, महलो इत्यादि मे माँग पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करती है।

नये चित्रकारो व मूर्तिकारों की उच्चकोटि की कलाकृतियाँ देशभर मे विभिन्न संग्रहालयों मे प्रदर्शित की जाती हैं। वार्ना मे 1963 में मार्च माह मे जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संग्रहालय चालू किया गया उसमें एकदम नवीनतम कलाकारो की कृतियों को भी प्रदर्शित किया गया था। यही बात सोफिया मे जॉर्जी दिमित्रोव के मकबरे के सामने जो राष्ट्रीय कला, मूर्ति और दस्तकारी का संग्रहालय चालू किया गया है उस पर भी लागू है। इन दोनो संग्रहालयों को देखने

का सुअवसर मुझे मिला बल्कि मैंने, घंटों वहाँ बिताए।

जनवादी बल्गेरिया मे जो महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटनाएँ हुईं उनमें उल्लेखनीय हैं 353 कला प्रदर्शनियाँ, कलाकारों द्वारा प्रस्तुत क़रीब 1950 गीत और नाच कार्यक्रम और नवसिखियों कलाकारों द्वारा प्रस्तुत करीब एक लाख पच्चीस हज़ार कार्यक्रम।

कला और संस्कृति का यह स्तर अपने देश के जनजीवन की दृष्टि से और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की दृष्टि से उच्चतम स्तर का है।

खेलकूद

संस्कृति के क्षेत्र मे शारीरिक व्यापार और खेलकूद का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जनवादी बल्गेरिया ने इस बात की ओर भी विशेष ध्यान दिया है। स्कूल के काल से ही बालकों को शारीरिक व्यायाम, तथा खेलकूद की पूरी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। जो बालक-बालिकाएँ विशेष दक्षता दिखाते हैं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए और ट्रेनिंग देने के लिए विशेष शिक्षकों की व्यवस्था की जाती है। धीरे-धीरे जनवादी बल्गेरिया खेलकूद के क्षेत्र मे अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरने लगा है।

1952 मे हेलसिंकी मे हुए ओलिम्पिक खेलो मे बल्गेरिया ने सबसे पहले भाग लिया। हेलसिंकी मे जिन 69 देशो ने भाग लिया उनमे जनवादी बल्गेरिया भी एक था। उन खेलो मे बल्गेरिया को मामूली सफलता मिली। मुक्केबाजी मे बल्गेरिया के बोरिस जोर्जोव ने तीसरा स्थान प्राप्त किया और कांस्य पदक प्राप्त किया। उसके बाद लगभग हर ओलिम्पिक खेल में जनवादी बल्गेरिया ने भाग लिया है।

मेलबोर्न (1956) में उसे एक स्वर्ण पदक, तीन रजत पदक और एक कांस्य पदक मिला। 1972 मे म्युनिख मे हुए खेलो मे बल्गेरिया की सफलता बहुत श्रेयस्कर रही। उसने 6 स्वर्ण, 10 रजत और 5 कांस्य पदक जीते। जितने देशों ने उन खेलों मे भाग लिया उनमे जनवादी बल्गेरिया का आठवाँ स्थान था।

1980 में मास्को मे हुए ओलिम्पिक खेलों में बल्गेरिया ने उच्चकोटि की सफलता प्राप्त की। उसे 8 स्वर्ण पदक, 16 रजत पदक और 17 कांस्य पदक मिले। जितने देशो ने उन खेलों में भाग लिया उनमें बल्गेरिया का तीसरा स्थान था।

इस वर्ष लॉस एन्जीलीस के ओलिम्पिक खेलों मे सोवियत संघ व कई समाजवादी और अन्य देशों की तरह जनवादी बल्गेरिया ने इन खेलों मे भाग न लेने का [illegible] है। इसका कारण यह है कि युद्धोन्मादी अमरीकी साम्राज्यवादी

प्रशासन ने सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के खिलाड़ियों की सुरक्षा की गारंटी देने से इंकार कर दिया, यहाँ तक कि वीसा देने में भी उसने यह शर्त रखी कि प्रत्येक खिलाड़ी की जाँच कर उपयुक्त समझा जाएगा तो उसे वीसा दिया जाएगा। यह ओलिम्पिक खेलों की परम्परा और नियमों का खुला उल्लंघन है। इतना ही नहीं अमरीकी प्रशासन के उच्चाधिकारी कम्युनिस्ट विरोधी प्रचार करने के साथ-साथ यह भी कहते जाते थे कि यदि समाजवादी देशों के खिलाड़ियों को विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ेगा तो हम ऐसी घटनाओं को रोकने में असमर्थ हैं। इन ऐलानों का साफ अर्थ यही था कि ओलिम्पिक खेलों को निम्न-स्तर की राजनीति का अखाड़ा बनाया जाय और उसका उपयोग समाजवाद विरोधी कम्युनिस्ट विरोधी प्रचार के लिए किया जाय।

जो भी हो इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि जनवादी बल्गेरिया ने खेलकूद के क्षेत्र में विश्व भर में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है और इस क्षेत्र में भी वह निरंतर प्रगति कर रहा है।

यह समाजवादी व्यवस्था की ही विशेषता है कि वह न सिर्फ जन स्वास्थ्य की उच्चकोटि की व्यवस्था प्रदान करता है बल्कि साथ-ही-साथ शारीरिक क्षमताओं के विकास के लिए, खेलकूद इत्यादि के लिए समुचित सुविधाएँ उपलब्ध कराता है और विशेष दक्षता दिखाने वाले बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहित कर उनकी ट्रेनिंग की व्यवस्था कर उनकी दक्षता को लगातार आगे बढ़ाता है।

जनवादी बल्गेरिया इस कार्य को विशेष महत्व दे रहा है। यही कारण है कि पहली बार 1952 में हेलसिंकी ओलिम्पिक खेलों में पहली बार भाग लेने वाला यह देश 1980 के मास्को ओलिम्पिक में दुनिया भर के देशों में तीसरा गौरव-शाली स्थान प्राप्त कर पाया।

कुश्ती में बल्गेरिया के लोगों की विशेष रुचि रहती है। यह बहुत जनप्रिय भी है। ज्यादातर पदक बल्गेरिया को कुश्ती या फिर भार उठाने की प्रति-योगिताओं में मिलते रहे हैं। परन्तु अब दौड़ों, तैराकी इत्यादि में भी रुचि बढ़ रही है। बल्गेरिया में जो जनप्रिय खेल हैं उसमें वॉलीबॉल का महत्वपूर्ण स्थान है।

बालक और बालिकाओं की जिमनास्टिक और उसके तरह-तरह के कलात्मक प्रदर्शन भी आजकल बल्गेरिया में बहुत जनप्रिय हो रहे हैं। वार्ना में बालिकाओं की जिमनास्टिक खेलों की एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता जुलाई 1983 में हुई थी। मुझे इसे देखने का अवसर मिला। यह अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता अब प्रतिवर्ष होने लगी है। 1982 की इस प्रतियोगिता में करीब तीस देशों ने भाग लिया जिसमें समाजवादी देशों के अलावा भाग लेने वाले देशों में प्रमुख थे चीन, इटली, जापान इत्यादि।

खेलकूद के क्षेत्र की यह उपलब्धियाँ जनवादी बल्गेरिया की द्रुतगति की प्रगति का एक अंग है।

सैलानियों का देश

बल्गेरिया एक स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु का देश है। वहाँ के आम लोग बहुत ही सौहार्दपूर्ण व्यवहार और आवभगत करने के लिए मशहूर है। परन्तु जो व्यक्ति एक बार भी बल्गेरिया की यात्रा कर आए उसे यह स्वीकार करना होगा कि बल्गेरिया बहुत रमणीक स्थानों का और सैलानियों का प्रिय देश भी है।

गुलाब का फूल बल्गेरिया का राष्ट्रीय फूल है। न सिर्फ बगीचों में बल्कि आम लोगों की रिहायशी फ्लैटों की बाल्कनी और झरोखों में भी गुलाब का फूल अवश्य नजर आएगा। यह बात अपने आपमें बल्गेरिया को मनमोहक बना देती है और सुगंधित भी। गुलाब के इस के प्रत्येक ग्राम में 2 हजार गुलाब के फूलों की महक रहती है।

बल्गेरिया में सैलानियों के लिए विशेष आकर्षण के कई स्थान हैं। पहाड़ियों पर घने जंगलों के बीच आवास और विश्राम घर बने हुए हैं। सुहावना मौसम जंगल की महक, कोई शोरगुल नहीं, स्वच्छ प्रदूषणरहित हवा और वहीं उसी आवास विश्राम स्थान में या नजदीक बहुत स्वादिष्ट भोजन और रात्रि के समय नाच की व्यवस्था, दिन को बिलियर्ड, शतरंज, ताश या टेनिस इत्यादि खेलों की व्यवस्था है। सैलानी को और क्या चाहिए?

बल्गेरिया में हजारों ऐसे आवास विश्राम स्थान हैं। कुछ तो विशिष्ट औद्योगिक संघों के अपने आवास-गृह हैं परन्तु बाकी देश और विदेश के सैलानियों के लिए उपलब्ध हैं। इन स्थानों पर पहुँचने के लिए अच्छी डामर की सड़कें हैं और बल्कान सैलानी विभाग की बसें। सैलानी चाहे तो अपनी मोटर कार से आ सकते हैं। बल्गेरिया के कई निवासियों को तो मैंने देखा कि वहीं [illegible] पर [illegible] सामान बाँधकर इन आवास-स्थानों के भ्रमण का आनन्द उठाते हैं।

पहाड़ों पर स्थित कई ऐसे आवास-विश्राम गृह प्राकृतिक झीलों के किनारे पर भी स्थित हैं। इन झीलों में नौका विहार का आनन्द भी उठाया [illegible] होता है।

[illegible] स्थित इन स्थानों में विशेष [illegible] है [illegible]। यहाँ के मौसम में कई बार [illegible] से ढका रहता है। [illegible] यह हरियाली और [illegible] का [illegible] है। किसी [illegible] पेड़ की छाया के बीच में [illegible] दिन [illegible] [illegible] की [illegible] रहती है [illegible] के मौसम में भी कुछ [illegible] हुई कई [illegible] हैं।

दूसरे नम्बर का ऊँचा पहाड़ी क्षेत्र है पिरिन पहाड़ी क्षेत्र । उसकी ऊँची-से-ऊँची चोटी माउन्ट विटहेन करीब 3000 मीटर ऊँची है। पिरिन पहाड़ी क्षेत्र भी सैलानियों के लिए बहुत आकर्षण का इलाका है।

रीला और पिरिन पहाड़ी क्षेत्रों में झीलों की बहुतायत है। यहाँ की झीलें लेम्पियरों के फिसलने और पिघलने से बनी हैं जो उन्हें विशेष प्रकार की सुन्दरता प्रदान करती है।

सबसे बड़ी बात यह है कि जनवादी बल्गेरिया की सरकार ने इन स्थानों पर उनके प्राकृतिक सौन्दर्य से मेल खाने वाले, अति आधुनिक सुविधाओं से लैस बड़े पैमाने पर आवास-गृह, विश्राम-गृह और स्थान-स्थान पर रेस्तराँ बना दिये है। सैलानियों के लिए यह सब सुविधाएँ विशेष महत्व रखती हैं।

सैलानियों के लिए एक अत्यन्त आकर्षक स्थान बल्गेरिया का काले समुद्र पर स्थित समुद्र तट है। इसकी यह विशेषता है कि दूर तक इसका किनारा लगभग समतल है। यदि समुद्र के पानी में प्रवेश कर आप 50 मीटर भीतर भी चले जाएँ तो शायद ही आपकी गर्दन की ऊँचाई तक पानी आये। पानी एकदम स्वच्छ और नीला लगता है। परन्तु किनारे पर जो मिट्टी है वह एक विशेष प्रकार की बालू मिट्टी है जिसका रंग हल्का सुनहरा है।

काले समुद्र के पानी की यह भी एक विशेषता है कि इसमें नमक की मात्रा बहुत कम है: प्रति हजार केवल 18 जबकि भूमध्य सागर में नमक की मात्रा 38 प्रति हजार है। शायद इसका कारण यह है कि नीपर, डेन्यूब, डीस्टर इत्यादि नदियों का साफ पानी इसमें लगातार गिरता रहता है। समुद्र तट के समीप ओज़ोन भी पाई जाती है जिसकी मात्रा अन्य स्थानों से 2 प्रतिशत ज्यादा है। स्वास्थ्य के लिए यह बहुत लाभदायक है।

वार्ना की यह भी विशेषता है कि समतल समुद्र तट के एकदम पीछे छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी हैं जो हरियाली से भरी हैं और वहाँ काफी संख्या में पेड़ हैं। विश्राम के लिए यह बहुत ही विशिष्ट स्थान बन गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय सैलानियों का बल्गेरिया बड़े पैमाने पर आना-जाना और उनके लिए एक विशेष संगठन की व्यवस्था केवल तीन वर्ष पुरानी है। 9 सितम्बर 1944 की जन क्रान्ति के पहले छोटी-मोटी पर्यटन एजेन्सियाँ थी जैसे बाल्कान, सीरेना इत्यादि।

1948 में जनवादी बल्गेरिया ने इस कार्य के लिए एक विशेष संस्था का निर्माण किया जिसका नाम है बाल्कानटूरिस्ट। इस संस्था की स्थापना के बाद जनवादी बल्गेरिया में अन्तर्राष्ट्रीय सैलानियों के आने की संख्या में लगातार और तेजी से वृद्धि हुई है। अब तो इस संस्था से जुड़ी हुई परन्तु विशिष्ट तरह के सैलानियों के लिए व्यवस्था करने के लिए अनेक संस्थाएँ बन गई हैं। 'ओर्बिटा'

नौजवान सैलानियों की देखभाल करती है। 'शिपका' मोटरकार से आने-जाने वाले सैलानियों की व्यवस्था करती है। 'विरिन' पहाड़ों पर स्थित विश्राम और आराम स्थानों के लिए आने वाले तथा विशेष प्रकार के सैलानियों की व्यवस्था करती है।

बल्गेरिया में विभिन्न देशों के विभिन्न उम्र के तथा व्यवसायों के लोग घूमने और विश्राम करने आते हैं और उनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। 1960 में यह संख्या दो लाख से कुछ ज्यादा थी। 1970 में यह बढ़कर 25 लाख हो गई। 1980 में यह साठ लाख की सीमा पार कर गई।

वैसे बल्गेरिया से दूसरे देशों में भ्रमण करने जाने वाले नागरिकों की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है। 1960 में ऐसे लोगों की संख्या केवल साठ हजार से कुछ ज्यादा थी। 1980 में यह लगभग सात लाख हो गई। यह इस बात का भी स्पष्ट संकेत है कि बल्गेरिया के आम लोगों के जीवन स्तर में कितनी वृद्धि और सुधार हुआ है।

विभिन्न देशों से जो सैलानी बल्गेरिया आते हैं उनमें से लगभग 15 प्रतिशत पूँजीवादी देशों से आते हैं। 1980 के आँकड़े लें तो पश्चिमी जर्मनी से आने वाले सैलानी करीब पौने दो लाख थे, ब्रिटेन से आने वालों की संख्या करीब सवा दो लाख, ग्रीस से भी लगभग उतने ही, तुर्किस्तान से आने वाले सैलानियों की संख्या करीब पौने दो लाख थी। वैसे आस्ट्रिया बेल्जियम, अमरीका, फ्रांस, इराक इत्यादि कई देशों से हजारों सैलानी बल्गेरिया के पहाड़ों और ज्यादातर यहाँ की सुनहरी बालू मिट्टी वाले समतल रमणीक समुद्र तट और वहाँ के विश्राम और आराम-गृहों से प्रभावित होकर आते हैं।

जनवादी बल्गेरिया ने सोफिया, अन्य महत्वपूर्ण शहरों में बड़े शानदार होटलों का निर्माण किया है। इसके साथ ही बल्कानटूरिस्ट के पास 1978 तक होटलों की संख्या 363 हो गई जिनमें करीब 80 हजार बिस्तरों की व्यवस्था थी। होटलों के अलावा तरह-तरह के रेस्तराँ भी बनाये गये हैं। इनमें आधुनिक ढंग के रेस्तराँ करीब 275 और परम्परागत संस्कृति का रूप कायम रखने के तरीकों से बनाये गये रेस्तराँ करीब 70 थे।

आराम-गृहों और होटलों का निर्माण-कार्य बहुत तेज गति से बढ़ाया जा रहा है। इसके अलावा इस बात की भी व्यवस्था है कि सैलानी चाहें तो यहाँ के नागरिकों के मेहमानवाज के रूप में भी रह सकते हैं। उन्हें केवल विश्राम और भोजन के नाश्तों का खर्च देना पड़ेगा। इन आराम-गृहों और होटलों का निर्माण कार्य किस तेज गति से चल रहा है इसका नमूना मैंने जुलाई 1983 में अपनी आँखों से देखा। वार्ना के आलीशान विश्राम-गृह जिसमें उपलब्ध सुविधाएँ और आधुनिक साज सिंगार होटलों से कहीं ज्यादा थीं वहीं मुझे ठहराया गया। द्रूज्बा नाम के आराम-गृहों के समूह में इसकी संख्या छः थी। द्रूज्बा शब्द का अर्थ

है मित्रता। इसके ठीक पास एक अन्य आवास-गृह है जो चार मंजिलो का है। 29 जून 1983 को रात को मैं द्रूज्बा-6 मे पहुँचा। सुबह उठते ही देखा कि द्रूज्बा पाँच में दो और मंजिल जोड़ने का निर्माण-कार्य चल रहा है। हर मंजिल मे लगभग 50 कमरे बनाये जा रहे थे। यह सारा कार्य 14 जुलाई, 1982 तक पूरा हो गया और लोग उन दो नई बनी मंजिलों मे रहने लगे। एकदम साफ-सुथरे, एक ओर की दीवार पूरी कांच से बनी जिसे धूप लग सके और प्रत्येक आधुनिक सुविधा से सम्पन्न इस आवास-गृह की दो नई मंजिलें उसमें और जोड़ने का कार्य लगभग 16 दिन मे पूरा हो गया।

वार्ना के आसपास फैले हुए कई किलोमीटर लंबे इस समुद्र तट क्षेत्र मे आवास गृहो के करीब दस समूह हैं। एक डीजल इंजन से चलने वाली नौका मे बैठकर मैंने उस पूरे क्षेत्र को देखा। ऐसे आवास-गृहो के समूह के पास समुद्र तट पर बैठे, लेटे हुए, पढ़ते हुए, तैरते हुए, चप्पुओं से चलने वाली नौकाओं और साइकिल के समान चलने वाली नौकाओं मे सैर करने वाले, तैराकों के लिबास पहने हजारों नर-नारियों और शिशुओं के समूह को देखा। ऐसा लगता था कि मानवता विश्राम के लिए यहाँ उमड़ पड़ी है। वार्ना मे बाल्कान टूरिस्ट का एक महत्वपूर्ण कार्यालय है जिसका नाम ही है 'सुनहरी मिट्टी'। वहाँ इस सारी व्यवस्था को संगठित करने वाले व्यवस्थापकों से बातें हुईं। उन्होने कहा कि जिस गति से सैलानियो की सख्या प्रतिवर्ष लगभग 15 प्रतिशत बढ़ रही थी उसके हिसाब से 1982 मे सैलानियों की संख्या करीब 85 लाख हो गई थी। उनका खयाल था कि 1984 मे वे एक करोड सैलानियो की सख्या के अनुमान को पार ही नही कर लेंगे बल्कि सभवतः 1985 के लिए जो एक करोड बीस लाख सैलानियों का लक्ष्य योजना मे रखा गया है उसके नजदीक 1984 के अन्त तक ही पहुँच पायेंगे। वास्तव मे बल्गेरिया सैलानियो के लिए एक अत्यन्त आकर्षक और मनमोहक देश है। वहाँ के प्राकृतिक स्थान, पहाड़ी क्षेत्र, गुफाएँ, समतल सुनहरी मिट्टी वाला समुद्र तट और नमकयुक्त पानी के झरने, स्वच्छ पानी की झीलें यह सब तो महत्वपूर्ण हैं ही परन्तु इनसे सबसे ज्यादा महत्व की बात यह है कि बल्गेरिया के लोग मिलनसार हैं, आवभगत और आत्मीयता का व्यवहार करने वाले मित्र लोग हैं जिनके व्यवहार और हँसमुखता से भी सैलानी स्वाभाविक तौर पर प्रभावित होते हैं।

जगह-जगह पर आकर्षक नजारा प्रस्तुत करने वाले और मीठी महक देने वाले गुलाब के फूलो का तो कहना ही क्या।

यह है बल्गेरिया—गुलाबी फूलो का देश, सैलानियो का देश।

जनवादी बल्गेरिया की विदेश नीति

जनवादी बल्गेरिया की विदेश नीति का आधार तो 9 सितम्बर 1944 के

मुक्ति दिवस के पहले ही तैयार हो गया जब जॉर्जी दिमित्रोव के मार्गदर्शन में फ़ादरलैण्ड फ़्रण्ट ने बल्गेरिया की विदेश नीति की रूपरेखा प्रस्तुत की। मुक्ति दिवस के बाद नयी जनवादी सरकार ने उस विदेश नीति को पूर्ण रूप देना शुरु किया। इस नीति का आधार है समाजवादी समाज-व्यवस्था की मूल मान्यताएँ अर्थात मानवतावाद, प्रजातंत्री नज़रिया, अन्तर्राष्ट्रीयवाद तथा विश्व शान्ति। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे इसकी यही व्याख्या की गई है कि यह नीति "अडिग अन्तर्राष्ट्रीयवाद, पूरी तरह प्रजातान्त्रिक और दृढ़ संकल्प शान्ति" की नीति है।

जनवादी बल्गेरिया की विदेश नीति का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और निर्णायक अंग है *सोवियत संघ के साथ प्रगाढ़ और निरंतर दृढ होने वाली मित्रता* और सहयोग के सम्बन्ध इस नीति का ऐतिहासिक आधार भी है। एक बार रूस ने बल्गेरिया को तुर्किस्तान के तानाशाही शासन से मुक्ति दिलाई और दूसरी बार सोवियत संघ की लाल फ़ौज ने बल्गेरिया को क्रूर बर्बर नाज़ीवादी फ़ासिज़्म से मुक्ति दिलाने मे निर्णायक सहयोग दिया। सोवियत बल्गेरियन मित्रता और भाई-चारा दोनों देशों के जनगण के दिलो मे उभरने वाली ऐतिहासिक और स्वाभाविक भावना है। परन्तु जनवादी बल्गेरिया और सोवियत संघ की मित्रता के लगातार बढते सहयोग का आधार अब और मज़बूत हो गया है। यह है सर्वहारा वर्ग का अन्तर्राष्ट्रीयवाद जिस पर लेनिन के पथप्रदर्शक रास्ते पर चलने शुरू हुए जॉर्जी दिमित्रोव के नेतृत्व द्वारा प्रस्थापित सिद्धान्तों पर दृढता से चलने वाली बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी स्वाभाविक तौर पर सोवियत संघ के साथ मित्रता और सह-योग की नीति को अपनी आँखो की पुतली की तरह अनमोल मानती है।

लेनिन के मार्गदर्शन के अनुरूप जनवादी बल्गेरिया की विदेश नीति के बुनि-यादी सिद्धान्त यह रहे हैं और आज ये है कि समाजवादी व्यवस्था के निर्माण मे सहायक हो ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध कायम किये जाएँ, सोवियत संघ के साथ सर्वांगीण और निरंतर बढ़ते सहयोग की नीति अपनाई जाए, *समाजवादी* जगत की एकता को सुदृढ़ किया जाय, राष्ट्रीय तथा सामाजिक मुक्ति संग्राम में संघर्षशील लोगो और देशो का समर्थन किया जाय, विश्व शान्ति के लिए निरंतर प्रयत्न किये जाएँ तथा दुनिया के प्रत्येक देश से बराबरी के स्तर पर सहयोग किया जाए जिससे समाजवादी व्यवस्था की अन्तिम विजय सुनिश्चित हो सके।

इन्ही सिद्धान्तो पर जनवादी बल्गेरिया की विदेश नीति के मार्गदर्शक सिद्धान्त रहे हैं सर्वहारा वर्ग का और समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयवाद, जो लोग और देश राजनैतिक और सामाजिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे हैं उनका समर्थन, जिन ... आज़ादी प्राप्त की है और जो सामाजिक प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं उन ... देशों से सहयोग तथा भिन्न प्रकार की समाज-व्यवस्था वाले देशो से

न्तिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्तों के आधार पर सम्बन्धों सुधार। 1944 में
ने मुक्ति दिवस के बाद जनवादी सरकार की स्थापना से ही बल्गेरिया इस
ति पर चल रहा है।

1949 में जॉर्जी दिमित्रोव की मृत्यु के बाद बल्गेरिया की विदेश नीति में कुछ
कीर्णता और कट्टरपंथी रुझानों के अंश उभरे।

परन्तु इस सन्दर्भ में अप्रैल 1956 की बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की
न्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक भूमिका निभाई। इस
मीटिंग के निर्णयों ने न सिर्फ जनवादी बल्गेरिया के आर्थिक विकास में आई
कावटों को दूर कर द्रुतगति से प्रगति का रास्ता खोल दिया बल्कि साथ ही साथ
स मीटिंग और उसके निर्णयों ने विदेश नीति को भी वापस सचीले परन्तु
वास्तविक लेनिनवादी सिद्धान्तों पर ढाल दिया और जॉर्जी दिमित्रोव द्वारा शुरू
किये रास्ते पर उसे पुन: स्थापित कर दिया।

अप्रैल की इस नई नीति को निर्धारण करने वाले, उसे आगे बढ़ाने वाले
लगातार उसे अमली रूप देने वाले नेता टोडोर जिवकोव बल्गेरिया की कम्युनिस्ट
पार्टी के इस समय महामंत्री हैं।

ध्यान रहे कि अप्रैल 1956 की इस केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के पहले
सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का 20वां महा अधिवेशन हो चुका था। बीसवीं
कांग्रेस के मूल्यांकन और उसमे निर्धारित सिद्धान्तों को बल्गेरिया की कम्युनिस्ट
पार्टी और उसकी जनवादी सरकार ने पूरी तरह आत्मसात किया। तब से बल्गेरिया
के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विकास होने लगा।

1981 में बल्गेरिया ने अपने राज्य की स्थापना की 1300वीं सालगिरह
मनाई। उसी वर्ष बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी 90वीं सालगिरह
मनाई। यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि 1981 का वर्ष टोडोर जिवकोव
द्वारा बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी केन्द्रीय समिति का नेतृत्व भार
पूरी तरह सभालने का 25वीं वर्षगांठ का वर्ष था।

यह 1939 में बल्गेरिया के राजनयिक सम्बन्ध केवल 39 देशों से थे।
1981 में बल्गेरिया ने करीब 148 देशों से राजनयिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये
जिनमें 15 समाजवादी देश, 24 विकसित पूंजीवादी देश, और 79 विकासशील
देश थे जिनमें समाजवादी दिशा वाले देश भी शामिल हैं।

जनवादी बल्गेरिया की सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के साथ
मित्रता, सहयोग और परस्पर सहायता की सधियाँ हैं। साथ ही साथ उसकी
वियतनाम, लाओस, कम्पूचिया, अंगोला, इथोपिया और मोजाम्बिक के साथ भी
मित्रता और सहयोग की सधियाँ हैं।

परस्पर आर्थिक सहयोग कौंसिल (सी०एम०ई०ए०) (1949) और वारसा

शक्ति के उपासक राष्ट्रों में जनवादी बल्गेरिया का नाम है।

1955 में बल्गेरिया को संयुक्त राष्ट्र के सदस्य के रूप में स्वीकार किया गया। 1980 तक जनवादी बल्गेरिया 150 से ज्यादा सरकारी और गैरसरकारी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का सदस्य हो गया। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को में बल्गेरिया का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है और वह उसकी करीब 70 प्रायोजनाओं का सदस्य है।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हम जनवादी बल्गेरिया और सोवियत संघ के बीच घनिष्ठ और निकटतम सहयोग का उल्लेख कर चुके हैं। 1970 के बाद के दशक में जनवादी बल्गेरिया और सोवियत संघ ने सभी अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर समान रुख लिया है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के 24वें महाधिवेशन ने विश्व शान्ति के लिए एक व्यापक कार्यक्रम स्वीकार किया गया। इसके आधार पर सोवियत संघ ने तनाव कम करने, हथियारों को सीमित करने, आणविक हथियारों के निर्माण और उनके उपयोग पर रोक लगाने के लिए कई ठोस और व्यावहारिक प्रस्ताव प्रस्तुत किए। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के 25वें महाधिवेशन ने इसी शान्ति की नीति को और आगे बढ़ाने वाला तथा उसे और ठोस रूप देने वाला एक और व्यापक कार्यक्रम स्वीकार किया। यह कार्यक्रम था विश्व शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए और मजबूती से संघर्ष करने तथा सभी देशों की स्वतन्त्रता की रक्षा करने का कार्यक्रम। यह नीति सारी मानवता के हितों के अनुकूल नीति थी। यह कार्यक्रम ऐसा था जिसने विश्व शान्ति के लिए शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व, विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक प्रगति के लिए तात्कालिक और दीर्घकालीन दोनों उद्देश्यों को पूरा करने के उन्हें सहयोग देने और इन सबके लिए ठोस स्थापनाएँ प्रस्थापित करने वाला था। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने इन दोनों कार्यक्रमों को अपना खुद का कार्यक्रम बनाया और वह सोवियत संघ, अन्य समाजवादी देशों, गुट निरपेक्ष आन्दोलन के देशों तथा दुनिया की सभी शान्तिप्रिय प्रगति की शक्तियों के साथ मिलकर इस कार्यक्रम को पूरा करने के प्रयत्नों में पूरी शक्ति से लगी हुई है।

सोवियत संघ और जनवादी बल्गेरिया के बीच अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में निकटतम सम्बन्धों में एक महत्वपूर्ण दौर शुरू हुआ जब जुलाई 1973 में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने इस दिशा में और ठोस निर्णय लिये और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के उसी वर्ष दिसम्बर में हुए पूर्णाधिवेशन ने इसी दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लिये।

सोवियत संघ के कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के तत्कालीन महामंत्री लियोनिद ब्रेझनेव तथा बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महा- टोडोर झिवकोव की इस काल में महत्वपूर्ण मीटिंगें भी हुईं। यह कहा जा है कि 1 अगस्त 1975 को हेलसिंकी में जो समझौते और घोषणा पर

क्षर हुए जिसने विश्व में तनाव-शैथिल्य की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान उस हेलसिंकी घोषणा पर हस्ताक्षर होने के पहले जो राजनीतिक पहल की और कदम उठाये गए, उनमे जनवादी बल्गेरिया का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

अपनी इसी नीति पर निरंतर आगे बढ़ते हुए जनवादी बल्गेरिया ने 1980 मे शान्ति परिषद द्वारा संगठित 'विश्व शान्ति संसद' नामक अत्यन्त महत्व-अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सोफिया में संगठित किया। इस सम्मेलन का विश्वव्यापी है।

1981 मे जॉर्जी दिमित्रोव की जन्म शताब्दी के अवसर पर बल्गेरिया की निस्ट पार्टी ने एक विशाल अंतर्राष्ट्रीय समारोह बहुत सफलतापूर्वक सम्पन्न। इस समारोह में दुनिया के सभी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियो, अन्य देशो की वादी प्रगतिशील पार्टियो के साथ-साथ कई अन्य साम्राज्यविरोधी पार्टियों के निधियों ने भी भाग लिया। इस समारोह को शुरू करने मदद और उसका न करते समय बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामंत्री र जिवकोव ने जो भाषण दिए उनका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है।

इसके पहले बल्गेरिया ने एक और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के सम्मेलन का आयोजन था। विश्व के बालक-बालिकाओ का एक सम्मेलन जिसके नारे थे एकता, त्मक और सौन्दर्य। इस सम्मेलन का आयोजन 'विश्व शान्ति की पताका' के के आधार पर किया गया था।

हेलसिंकी घोषणा से जो तनाव-शैथिल्य की प्रक्रिया को गति मिली उसके त पिछले कुछ वर्षो से अमरीकी साम्राज्यवादी रीगन प्रशासन ने ऐसी र, हथियारो की होड़ तथा फौजी उकसावे और हस्तक्षेप की नीतियाँ चालू रखी है जिन्होंने विश्व शान्ति के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर दिया है। त संघ की सरकार और वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी, वारसा संधि देश सभी ई स्थिति का जायजा लेकर उसके अनुरूप अपनी नीतियाँ बना रहे हैं।

जनवादी बल्गेरिया वारसा संधि देशो का प्रस्थापक सदस्य है और वह वारसा शो की महत्वपूर्ण मीटिंगों मे अपना पूरा योगदान दे रहा है। बल्गेरिया की स्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामंत्री टोडोर जिवकोव ने कई महत्वपूर्ण र इस स्थिति मे बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और जनवादी बल्गेरिया कार की नीतियो का बहुत स्पष्ट प्रतिपादन किया है। इसी वर्ष बल्गेरिया युनिस्ट पार्टी ने अपनी पार्टी का एक विशेष राष्ट्रीय अधिवेशन संगठित या जिसका मुख्य उद्देश्य था हर क्षेत्र मे गुणात्मक सुधार परन्तु आर्थिक सत्र त्मक सुधार के उस नारे को टोडोर जिवकोव ने सही मार्क्सवादी ढंग से अंतर्राष्ट्रीय स्थिति से जोड़ा।

उन्होंने कहा कि "इस काल की विशेष बात यह है कि अमरीकी प्रशासन और उसके नाटो संधि सहयोगियों ने समाजवादी देशों के विरुद्ध एक खतरनाक ऐलानिया जंगखोर नीति को तेज गति दे दी है।"

साम्राज्यवादी आक्रामक हल्के इस भ्रम में हैं कि यदि वे हथियारों की होड़ की नीति चलायें तो समाजवादी देश आर्थिक बोझों से इतने दब जायेंगे कि वहाँ की जनता का जीवन स्तर गिरेगा, इस प्रकार वे किसी एक समाजवादी देश तथा समाजवादी व्यवस्था को ही कमजोर कर पायेंगे।

टोडोर जिवकोव ने दृढ़ता से कहा, "परन्तु सच बात तो यह है कि हम वारसा संधि सदस्य देश किसी भी हालत में वर्तमान शक्ति के संतुलन की स्थिति में हमारे देशों के प्रतिकूल दिशा में कोई परिवर्तन नहीं होने देंगे। हम इस बात पर दृढ़ संकल्प हैं कि शक्ति संतुलन में बराबरी की स्थिति की हर कीमत पर रक्षा की जाय।"

टोडोर जिवकोव ने जहाँ जनवादी बल्गेरिया और वारसा संधि देशों की दृढ़ नीति की घोषणा की वहीं सम्मेलन में उन्होंने यह महत्वपूर्ण बात भी कही कि, "युद्ध की शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करते समय यह बड़ी भूल होगी और उसका हमारी रणनीति और कार्यनीति दोनों पर गलत असर पड़ेगा यदि हम यह समझ बैठें कि साम्राज्यवादियों के प्रतिगामी और उग्र उकसाऊ हल्के जिन नीतियों को चला रहे हैं उनको खुद अमरीका और नाटो देशों में सभी पार्टी, राज्य तथा सार्वजनिक क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति और व्यावसायिक वर्ग के लोग सभी पूरी तरह समर्थन करते हैं और इसलिए विश्व का आणविक युद्ध की ओर खिसकते जाना अवश्यंभावी है और इसे रोका नहीं जा सकता।"

टोडोर जिवकोव ने घोषणा की कि आज दुनिया में शान्ति की शक्तियाँ सभी मिलकर जंगखोर शक्तियों से बलशाली हैं।

बाल्कान क्षेत्र : शान्ति का क्षेत्र

जनवादी बल्गेरिया की अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर विदेशी नीति की जो सक्रिय दिशा है उसके साथ ही साथ जनवादी बल्गेरिया और बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण अंग यह भी है कि बाल्कान क्षेत्र के अपने पड़ोसी देशों के साथ मित्रता के रिश्ते और बढ़ाए जाएँ और बाल्कान को एक शान्ति का क्षेत्र बनाया जाए। इसके लिए जनवादी बल्गेरिया रूमानिया, व युगोस्लाविया से बहुत निकट और नजदीकी सम्बन्ध बनाए हुए है। परस्पर आर्थिक सहयोग, व्यापार पर्यटन इत्यादि हर क्षेत्र में जनवादी बल्गेरिया की सरकार इसे आगे बढ़ाने के लिए अगुवाई कर रही है। जनवादी बल्गेरिया ने पिछले कुछ वर्षों में टर्की के साथ भी काफी अच्छे व्यापारिक और राजनैतिक सम्बन्ध बना लिये हैं।

तुर्किस्तान की राजनैतिक स्थिति भिन्न है और इसके साथ सम्बन्ध सामान्य करने और सहयोग बढ़ाने का कार्य बहुत कठिन रहा है। परन्तु जनवादी बल्गेरिया की सरकार ने तुर्किस्तान के साथ भी सम्बन्ध बहुत सुधारे हैं और व्यापारिक तथा अन्य क्षेत्रों में उसके साथ सहयोग बढ़ाया है। इन देशों के शासनाध्यक्षों या राज्याध्यक्षों की बल्गेरिया यात्राएँ भी हुई हैं। जनवादी बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर जिवकोव ने भी इनमें से कई देशों की राजकीय यात्रा की है।

बाल्कान क्षेत्र को शान्ति का क्षेत्र बनाने, इसे आणविक हथियार रहित क्षेत्र घोषित किया जाय इस दिशा में जनवादी बल्गेरिया की सरकार और विशेषकर बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामन्त्री और बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर जिवकोव ने खुद दिलचस्पी लेकर महत्वपूर्ण पेशकदमी की है। यही कारण है कि 1981 में टोडोर जिवकोव ने यह प्रस्ताव किया कि बाल्कान क्षेत्र के देशों के शासनाध्यक्षों का एक सम्मेलन सोफ़िया में किया जाए जो इस प्रश्न पर ठोस रूप से विचार करे कि बाल्कान क्षेत्र को किस प्रकार शान्ति का क्षेत्र बनाया जा सके।

1984 में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का किस्म और गुण के सुधार विषय पर अधिवेशन हुआ उसमें टोडोर जिवकोव ने कहा कि "बाल्कान क्षेत्र के देशों ने बाल्कान को शान्ति का क्षेत्र बनाने के प्रश्न को एजेन्डा में प्रस्तुत कर दिया है यह विश्व युद्ध की शक्तियों से मुकाबला करने में हमारी महत्वपूर्ण विजय है। इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम जो प्रयत्न करेंगे और इसमें जो सफलता प्राप्त करेंगे वह हमारा बाल्कान क्षेत्र का विश्व शान्ति के लिए अपना विशिष्ट योगदान होगा।"

बाल्कान देशों में मित्रता और सहयोग बढ़ाने में और बाल्कान क्षेत्र को शान्ति का क्षेत्र बनाने के लिए प्रयत्न करने में टोडोर जिवकोव की विशेष भूमिका रही है।

जनवादी बल्गेरिया विश्व के अन्य प्रमुख मसलों पर भी जो सही अन्तर्राष्ट्रीय विश्व शान्ति सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों से निकटतम सम्बन्ध तथा साथ ही साथ लेबनान, स्वापो आदि देशों के साम्राज्य विरोधी जियनवाद नस्लवाद विरोधी संघर्षों को समर्थन निकारागुआ और कम्पूचिया, अफगानिस्तान आदि देशों में साम्राज्यवादी हस्तक्षेप तथा कम्पूचिया में इसके साथ मिला हुआ चीन की सरकार का विस्तारवादी हस्तक्षेप इनका दृढ़ता से विरोध नई अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण के संघर्ष को समर्थन देने की जो नीतियाँ अपना रहा है उसे विश्व क्षितिज पर जनवादी बल्गेरिया का बहुत इज्जतदार स्थान है।

जनवादी बल्गेरिया और वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी के चोटी के नेता टोडोर जिवकोव का विश्व के राजनीतिज्ञों में बहुत आदर और सम्मान का स्थान है।

भारत-बल्गेरिया : मित्रता और सहयोग

भारत और जनवादी बल्गेरिया के बीच मित्रता और सहयोग के बड़े गहरे और लगातार विकसित होने वाले सम्बन्ध हैं। यह सम्बन्ध न सिर्फ आर्थिक क्षेत्र में सहयोग, व्यापार में सहयोग तक ही सीमित हैं। यह मित्रता और सहयोग बड़े व्यापक क्षेत्र में भी हैं और लगातार दृढ़ हो रहे हैं। वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, तकनीकी हर क्षेत्र में इनका विस्तार हो रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों देशों की समाजव्यवस्थाएँ भिन्न होते हुए भी दोनो देशों के राजनीतिक सम्बन्ध भी बड़े मित्रतापूर्ण, भाईचारे से ओतप्रोत हैं और ज्यादातर अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर दोनों देश एक ही प्रकार का अथवा समान दृष्टिकोण अपनाते हैं।

शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धातो पर आधारित भारत और बल्गेरिया के यह सर्वांगीण और मित्रतापूर्ण और सहयोग के सम्बन्ध दुनिया के सामने एक प्रभावशाली मिसाल प्रस्तुत करते हैं।

दोनों देशों के इन मित्रतापूर्ण सम्बन्धों की एक बड़ी विशेषता यह है कि दोनों देशों के राजकीय नेताओं अर्थात भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर जिवकोव के व्यक्तिगत सम्बन्ध भी बहुत निकटतम मित्रता के हैं।

भारत बल्गेरिया के इन सम्बन्धों का उल्लेख करते समय हम जनवादी बल्गेरिया की महान पुत्री, बल्गेरिया की सांस्कृतिक विभाग की मंत्री और बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की पोलित ब्यूरो की सदस्या ल्युडमिला जिवकोवा की याद किये बिना नहीं रह सकते। बहुत कम आयु में ल्युडमिला जिवकोवा की दुखद मृत्यु हो गई परन्तु आज हमारे बीच में उनकी मधुर यादगार मौजूद है और रहेगी।

उन्होंने कई बार भारत की यात्रा की, भारत के नौजवानों से लगाकर वयोवृद्ध लोगों, हर विचार के राजनीतिज्ञों से उनके सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध थे। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से उनके बहुत आत्मीय सम्बन्ध थे। भारत-बल्गेरिया की मित्रता और सहयोग को आगे बढाने में ल्युडमिला जिवकोवा ने जो भूमिका अदा की है उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। भारत के व्यापक हल्कों में उनकी मधुर

और आदरपूर्ण यादगार आज भी मौजूद है।

भारत-बल्गेरिया की मित्रता और सहयोग के इन सम्बन्धों को दोनों देशों के राज्याध्यक्षों और शासनाध्यक्षों की एक-दूसरे देश की राजकीय यात्राओं और उनमें स्थापित निकटतम व्यक्तिगत सम्बन्धों ने बहुत बड़ा योगदान ही नहीं दिया है बल्कि इन सम्बन्धों को और दृढ़ किया है और उच्च स्तर पर पहुँचाया है।

श्रीमती इंदिरा गांधी की बल्गेरिया की राजकीय यात्रा

भारत-बल्गेरिया के मित्रता और सहयोग का उल्लेख करते समय दो यात्राओं का विशेष उल्लेख करना आवश्यक है। एक है 6 से 8 नवम्बर 1981 की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की बल्गेरिया की राजकीय यात्रा। वैसे इसके 14 वर्ष पहले भी श्रीमती इंदिरा गांधी बल्गेरिया की यात्रा पर गई थी परन्तु नवम्बर 1981 की उनकी यह यात्रा विशेष महत्त्व रखती है। इस यात्रा के दौरान टोडोर जिवकोव से उनकी मुलाकात और महत्वपूर्ण वार्ताएँ हुई। जैसाकि टोडोर जिवकोव ने आकाशवाणी की संवाददाता श्रीमती भल्ला को उस समय दिये एक साक्षात्कार में कहा है कि उनकी और श्रीमती गांधी की यह चौथी मुलाकात है। परन्तु इस मुलाकात और बातचीत के दौरान हमारे दोनों देशों के सम्बन्ध और हमारी व्यक्तिगत मित्रता और ऊँचे स्तर पर पहुँची है।

इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को जनवादी बल्गेरिया ने आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक जनस्वास्थ्य तथा आम लोगों के जीवन स्तर के सुधार में जो प्रगति की है उसे देखने और उसकी जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। इस यात्रा के दौरान श्रीमती गांधी टोडोर जिवकोव के जन्मस्थान प्रावेत्स भी गयी वहाँ भी उनके और टोडोर जिवकोव के बीच पेचीदा अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर वार्ताओं का दौर चला। इस यात्रा के दौरान सोफिया के 'क्लिमेन्ट ऑफ ओहरिड विश्वविद्यालय' ने उन्हें डॉक्टर की मानद डिग्री प्रदान की।

इस यात्रा की शुरुआत में ही श्रीमती गांधी ने जॉर्जी दिमित्रोव की समाधि पर पुष्पमालाएँ चढ़ायी।

8 नवम्बर 1981 को भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामंत्री और बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर जिवकोव ने एक संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किये।

संयुक्त घोषणा में दोनों देशों के लगातार बढ़ने और मधुर होने, मित्रता और सहयोग के सम्बन्धों पर तथा भारत-बल्गेरिया संयुक्त कमीशन के कार्य की प्रगति पर सन्तोष व्यक्त किया गया है और दोनों देशों के चोटी के राजनेताओं ने इस घोषणा में इन सम्बन्धों को और विकसित, व्यापक और दृढ़ बनाने का संकल्प दोहराया है।

भारत-बल्गेरिया । मित्रता और सहयोग

भारत और जनवादी बल्गेरिया के बीच मित्रता और सहयोग के बड़े गहरे और लगातार विकसित होने वाले सम्बन्ध हैं। यह सम्बन्ध न सिर्फ आर्थिक क्षेत्र में सहयोग, व्यापार में सहयोग तक ही सीमित हैं। यह मित्रता और सहयोग बड़े व्यापक क्षेत्र में भी हैं और लगातार दृढ़ हो रहे हैं। वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, तकनीकी हर क्षेत्र में इनका विस्तार हो रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों देशों की समाजव्यवस्थाएँ भिन्न होते हुए भी दोनों देशों के राजनीतिक सम्बन्ध भी बड़े मित्रतापूर्ण, भाईचारे से ओतप्रोत हैं और ज्यादातर अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर दोनों देश एक ही प्रकार का अथवा समान दृष्टिकोण अपनाते हैं।

शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित भारत और बल्गेरिया के यह सर्वांगीण और मित्रतापूर्ण और सहयोग के सम्बन्ध दुनिया के सामने एक प्रभावशाली मिसाल प्रस्तुत करते हैं।

दोनों देशों के इन मित्रतापूर्ण सम्बन्धों की एक बड़ी विशेषता यह है कि दोनों देशों के राजकीय नेताओं अर्थात भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर झिवकोव के व्यक्तिगत सम्बन्ध भी बहुत निकटतम मित्रता के हैं।

भारत बल्गेरिया के इन सम्बन्धों का उल्लेख करते समय हम जनवादी बल्गेरिया की महान पुत्री, बल्गेरिया की सांस्कृतिक विभाग की मंत्री और बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की पोलित ब्यूरो की सदस्या ल्युडमिला झिवकोवा की याद किये बिना नहीं रह सकते। बहुत कम आयु में ल्युडमिला झिवकोवा की दुखद मृत्यु हो गई परन्तु आज हमारे बीच में उनकी मधुर यादें मौजूद है और रहेंगी।

उन्होंने कई बार भारत की यात्रा की, भारत ... १५...
वृद्ध लोगों, हर विचार के राजनीतिज्ञों से उनके
श्रीमती इंदिरा गांधी से उनके बहुत
मित्रता और सहयोग को आगे बढ़ाने

परन्तु संयुक्त घोषणा दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं। विश्व की सभी प्रमुख समस्याओं पर दोनों पक्षों के वार्तालाप ने दोनों देशों के समान दृष्टिकोण को भी दर्ज किया है। यह कहा गया है कि विश्व शान्ति आज दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। हथियारों की होड़ की नीति, नये आणविक हथियारों के विशेष किस्म के न्यूट्रोन बम के निर्माण पर और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ाने की नीतियों पर दोनों देशों ने अपनी गहरी चिन्ता व्यक्त की है।

इस घोषणा में दोनों देशों ने यह विश्वास व्यक्त किया है कि मानवता के सामने उपस्थित इन खतरों को टाला जा सकता है परन्तु उसके लिए सही रास्ता वार्तालाप और तनाव-शैथिल्य का ही है। शक्ति के उपयोग की धमकियों, यह सही रास्ता नहीं है।

दोनों देशों के निःशस्त्रीकरण की विशेष आवश्यकता को दोहराया है और 1982 के राष्ट्रसंघ के निःशस्त्रीकरण के प्रस्ताव को लागू करने के लिए सतत् प्रयत्न की आवश्यकता पर जोर दिया है। दोनों देशों ने विश्व में एक न्याययुक्त नई आर्थिक व्यवस्था के निर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया है।

दोनों देशों ने दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी आत्मरक्षा की आवश्यकता से अधिक हथियार रखने और इस प्रकार तनाव बढ़ाने की निन्दा की है। दोनों देशों ने हिन्द महासागर क्षेत्र को शान्ति का क्षेत्र बनाने और उसके लिए राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने पर जोर दिया है। साथ-ही-साथ उन्होंने हिन्द महासागर क्षेत्र में फ़ौजी अड्डे कायम करने अथवा उनके विस्तार की निन्दा की है।

फ़िलिस्तीनी लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार और उनके स्वतन्त्र राष्ट्र बनाने के अधिकार का नामीबिया की आज़ादी और उसके एकमात्र प्रतिनिधित्व संगठन स्वापो का समर्थन, इत्यादि बातों का संयुक्त घोषणा में उल्लेख है। साथ-ही-साथ उसमें यह भी कहा गया है कि साम्राज्यविरोध और गुट निरपेक्षता का अटूट संबंध

राजनीतिज्ञ का स्वागत कर रहे हैं जिनके नेतृत्व में भारत गणराज्य आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में लगातार महत्वपूर्ण कामयाबियाँ हासिल कर रहा है तथा सामाजिक क्षेत्र मे प्रगति कर रहा है।

श्रीमती गाधी का स्वागत करते समय हम ऐसे व्यक्ति का स्वागत कर रहे हैं जो जवाहरलाल नेहरू के शुरू किये हुए मार्ग पर लगातार दृढ़ता से चल रही हैं। हम भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री का स्वागत कर रहे है जिसकी शाति और सद्भाव की सकारात्मक नीति को विश्व-भर मे सम्मान मिला है और जिसकी एशिया क्षेत्र में शाति को सुदृढ़ करने के प्रयत्नो को सभी क्षेत्रो मे स्वीकार किया जा रहा है।

श्रीमती गांधी का जब हम स्वागत करते हैं तो हम बल्गेरिया जनवादी गणतत्र के एक सच्चे और महान मित्र का स्वागत करते हैं।

अपने इस भाषण आगे चलकर उन्होंने कहा :

"हम गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की गतिविधियों को, जो साम्राज्यवाद, उपनिवेश-वाद तथा आक्रामक कदमों का वह विरोध करती हैं और विश्व शान्ति के प्रयत्नो को योगदान दे रही है, बहुत महत्व देते हैं। इस आन्दोलन की स्थापना, इसे मजबूत बनाने तथा उसकी एकता कायम रखने मे भारत गणराज्य की महत्व-पूर्ण भूमिका की हम सराहना करते है।"

श्रीमती इंदिरा गाधी ने इसके उत्तर मे जो भाषण दिया उसमे उन्होंने कहा, "मैं आपके देश में, जो गुलाब के फूलो का देश है, भारत से आई हूँ जो कमल के फूलो का देश है।"

उन्होंने टोडोर जिवकोव को बहुत धन्यवाद दिया और भारत गणराज्य की ओर से बल्गेरिया की सरकार और जनता को शुभकामना सदेश व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि "मैं 14 वर्ष पहले यहाँ आई थी। तब से लगाकर आज तक आपने जो ज़बर्दस्त प्रगति की है उसमे मुझे आपके सक्रिय नेतृत्व की बात नजर आ रही है।"

"हमारे दोनों देशों की मित्रता लगातार सुदृढ हो रही है उसमे आपका विशेष योगदान तो है ही परन्तु साथ ही उसमें एक ऐसे व्यक्ति का भी महत्वपूर्ण योगदान है जो आज हमारे बीच नहीं है। मेरा आशय श्रीमती ल्युडमिला जिवकोवा से है जिनकी याद आज भी हमारे दिलो मे ताज़ा है।

जो भी श्रीमती ल्युडमिला जिवकोवा से मिला है उसने उनमें अपने देश के लोगों के प्रति उनके प्रेम के भाव देखे हैं। अथक परिश्रम, उनकी हृदय मे उमड़ती आत्मीयता, और उनकी उच्च सास्कृतिक और श्रेष्ठ जीवन के प्रति दिलचस्पी ने सबने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। श्रीमती ल्युडमिला जिवकोवा बल्गेरिया की जनता की भावना और उसकी एक सास्कृतिक और श्रेष्ठ जीवन बिताने की उत्कटा

की सच्ची और उत्कृष्ट प्रतीक थी। बल्गेरिया की इस महान पुत्री के प्रति हमारे आदर और सम्मान के प्रतीक के रूप में उनके नाम पर दिल्ली विश्वविद्यालय में हमने स्लाविक अध्ययन का एक विशेष विभाग निर्माण करने का निर्णय लिया है।"

अपने भाषण में आगे चलकर उन्होंने कहा कि :

"बल्गेरिया ने अपनी जनता को एक नई जिन्दगी प्रदान की है जिसमें शिक्षा और इन्सान के विकास पर बहुत ध्यान दिया गया है आपके देश ने ऐसी समाज व्यवस्था अपनाई है जिसने पैत्रिक विरासत में मिलने वाली सभी विशेष सुविधाओं को समाप्त कर दिया है।"

विश्व की समस्याओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा :

"गुट निरपेक्ष आन्दोलन के संस्थापक सदस्य होने के नाते और महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के विचारों और सिद्धान्तों पर चलने के कारण हमारे देश की यह स्पष्ट मान्यता है कि टकराव का कोई भी प्रयत्न हानिकारक है। हमें हिंसा बिल्कुल पसन्द नही और हम पूर्ण और विश्वव्यापी निशस्त्रीकरण के हामी हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि यदि बड़ी मात्रा में हथियार जमा किये जाएँ तो उससे युद्ध को टाला जा सकता है।

हमारी यह मान्यता है कि इससे शान्तिपूर्वक तरीकों से मतभेदों को दूर करने की प्रक्रिया ही टलने जाती है। दुनिया मे शान्ति और सद्भाव कायम करने के लिए बातचीत के अलावा और कोई रास्ता नही।"

श्रीमती गांधी की बल्गेरिया की इस राजकीय यात्रा ने दोनो देशों के बीच के सम्बन्धों को और मजबूत बनाया साथ-ही-साथ विश्व शान्ति की प्रक्रिया में भी उसने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्रीमती गांधी ने बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामंत्री और बल्गेरिया के राष्ट्रपति टोडोर जिवकोव को भारत यात्रा पर आने का निमंत्रण दिया जो सहर्ष स्वीकार कर लिया गया।

टोडोर जिवकोव की यह राजकीय यात्रा दिसम्बर 1983 में हुई। वैसे टोडोर जिवकोव की यह पहली भारत यात्रा नही थी। वे दो बार पहले भी भारत आए हुए हैं और उस यात्रा के दौरान उन्होंने श्रीमती इंदिरा गांधी से मुलाकात और बातचीत भी की थी। परन्तु बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महामंत्री और बल्गेरिया के राष्ट्रपति की हैसियत से उनकी भारत की यह पहली राजकीय यात्रा थी।

टोडोर जिवकोव की भारत की राजकीय यात्रा

12 से 15 दिसम्बर 1983 तक बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की

केन्द्रीय समिति के महामंत्री और बलगेरिया के राष्ट्रपति टोडोर जिवकोव
की राजकीय यात्रा पर आए।

टोडोर जिवकोव के दिल्ली हवाई अड्डे पर आगमन पर भारत के राष्
ज्ञानी जैलसिंह, प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी, भारत के मंत्रिमंडल के
सदस्यों और प्रमुख नागरिकों ने उनकी अगवानी की। उन्हें राजकीय सम्मान
गया, गार्ड ऑफ़ हॉनर, तोपों की सलामी दी गई तथा हवाई अड्डे पर ही स्व
भाषण हुआ।

टोडोर जिवकोव ने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू की समाधि
मालायें चढ़ाईं। भारत और बलगेरिया की मैत्री और सहयोग जिस प्रकार से
तार बढ़ रहा है और फलता-फूलता जा रहा है उसके प्रतीक के स्वरूप टो
जिवकोव ने अपनी पहली भारत यात्रा के समय राजघाट पर जो पेड़ लगाय
वह भी फलता-फूलता बढ़ता जा रहा है।

टोडोर विकोव ने राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह से भेंट की। राष्ट्रपति
जैलसिंह ने उनके सम्मान में भोज दिया।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस राजकीय यात्रा के पहले कई देश
सरकारों के महत्वपूर्ण प्रतिनिधि, मंत्री, प्रधानमंत्री भारत की राजकीय यात्र
आए थे। परन्तु टोडोर जिवकोव ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके सम्मान में लाल
में नागरिक अभिनंदन का आयोजन किया गया और इस नागरिक अभि
समारोह में श्रीमती गांधी स्वयं मौजूद थीं और उन्होंने टोडोर जिवकोव के स
में भाषण भी दिया।

अपनी इस राजकीय यात्रा के समय टोडोर जिवकोव ने प्रधानमंत्री श्र
इंदिरा गांधी से कई बार मुलाकात और वार्तायें कीं। यात्रा के अंत में दोनों
की ओर से टोडोर जिवकोव और श्रीमती इंदिरा गांधी के संयुक्त हस्ताक्षरों
घोषणा भी की गई।

टोडोर जिवकोव की यह यात्रा अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। अंतर्राष्ट्रीय
बहुत गंभीर हो चुकी थी। उनकी यात्रा के कुछ ही सप्ताह पूर्व अमरीकी साम
वादियों ने पश्चिमी जर्मनी में मिसाइल स्थित कर दिए थे। इन मि
का संकेत पी० टी० आई० को दिए गये अपने साक्षात्कार में टोडोर जिवक
दिया है।

भारत यात्रा के पहले दिए गये इस साक्षात्कार में टोडोर जिवकोव ने
कि इस यात्रा के दौरान वे दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों पर बातच
करेंगे ही लेकिन मुख्यतः वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति पर वह श्रीमती गा
विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।

दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए उन्होंने भार

बल्गेरिया की लगातार मजबूत हो रही मित्रता का उल्लेख किया और संतोष व्यक्त किया।

"पिछले कुछ वर्षों में हमारे दोनों देशों के बीच आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में सहयोग बहुत बढ़ा है और तेज गति से बढ़ा है। साथ-ही-साथ हमने अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी सफल सहयोग की स्थितियाँ निर्मित कर ली हैं। मैं यह कह सकता हूँ कि इस आधार पर भारत-बल्गेरिया के सम्बन्धों पर हम संतोष व्यक्त कर सकते हैं।"

परन्तु उन्होंने यह भी कहा कि :

"मेरा यह भी विचार है कि हमने सभी संभावनाओं का पूरी तरह उपयोग कर लिया हो, यह नहीं कहा जा सकता। हम अपने दोनों देशों के बीच के आर्थिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और तकनीकी सहयोग का और विस्तार कर सकते हैं और उसे व्यापक बनाया जा सकता है।"

उन्होंने बल्गेरिया की ओर से यह आश्वासन दिया कि :

"मैं अपने भारतीय मित्रों को यह आश्वासन देना चाहता हूँ कि बल्गेरिया जन-वादी गणतंत्र भारत को सहायता और सहयोग देने में कुछ भी उठा न रखेगा।"

दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों के अलावा उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का भी उल्लेख किया।

पी० टी० आई० के संवाददाता ने जब अमरीका द्वारा यूरोप में मिसाइलें स्थित करने का उल्लेख करते हुए यह कहा कि इस घटना से पूर्व और पश्चिम के देशों में चिन्ता उत्पन्न होना स्वाभाविक है तो इस प्रश्न का उत्तर देते हुए टोडोर जिवकोव ने कहा :

"इस संदर्भ में चिन्ता शब्द का उपयोग कमजोर भाषा है। हकीकत यह है कि पश्चिमी यूरोप में नई अमरीकी मिसाइलें स्थित करने का अर्थ है वर्तमान बराबरी के स्तर के शक्ति संतुलन को तोड़ना और समाजवादी देशों के मुकाबले में फ़ौजी शक्ति को बढ़ाना।"

उन्होंने चेतावनी दी कि इस कदम से विश्व एक आणविक युद्ध के कगार पर पहुँच गया है।

प्रत्येक विवेकशील राजनेता और व्यक्ति यह समझता है कि शक्ति संतुलन की बराबरी की स्थिति के कारण ही साम्राज्यवादी जनखोर इसके अभी तक युद्ध की जोखिम नहीं उठा पाये हैं।

. जिवकोव ने कहा कि अमरीका और नाटो देशों ने जो यह नया खतर-

... है उसके प्रतिकार के रूप में वारसा संधि देशों ने जिन कदमों

है समाजवादी बल्गेरिया उनका पूर्ण रूप से समर्थन करता है।

यह संकेत दिया कि श्रीमती इन्दिरा गांधी से उनकी वार्ता के दौरान वे

इन सब स्थितियों पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।

अपनी भारत यात्रा के दौरान श्रीमती इंदिरा गांधी से जो वार्ताएँ उन्होंने की उसमें इन सब प्रश्नों पर चर्चा हुई। इसका उल्लेख दोनों देशों द्वारा 13 दिसम्बर 1983 को जारी की गई घोषणा में भी है।

नागरिक अभिनंदन के दौरान टोडोर ज़िवकोव और श्रीमती इंदिरा गांधी के जो भाषण हुए उनके कुछ अंश इस बात का स्पष्ट संकेत देते हैं कि दोनों देशों की मित्रता कितनी सुदृढ़ है और टोडोर ज़िवकोव और श्रीमती इंदिरा गांधी के बीच कितनी मित्रता और परस्पर आदर की भावना है।

13 दिसम्बर 1983 को लाल किले में हुए नागरिक अभिनंदन समारोह में भाषण देते हुए टोडोर ज़िवकोव ने समारोह में उपस्थित नागरिकों और भारत की जनता का अभिनंदन किया और कहा :

"जैसा कि आप जानते हैं यह मेरी तीसरी भारत यात्रा है और हर यात्रा के दौरान मुझे भारत की तेज और लगातार प्रगति के संतोष देने वाले प्रमाण देखने को मिले हैं। भारत के भाईचारे, परस्पर सद्भावना के आदर्शों, उसकी एशिया तथा सारी दुनिया में शान्ति प्रस्थापित करने की नीति, उपनिवेशवाद तथा नस्लवाद के विरुद्ध उसके सक्रिय प्रयत्न तथा हर देश के स्वतन्त्रता के मध्य विकास तथा बराबरी के दर्जे के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की उसकी जो नीतियाँ हैं उनसे सारी दुनिया में भारत का मान और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती जा रही है। यह देखकर मुझे अत्यन्त भाईचारे पूर्ण संतोष अनुभव होता है।"

उन्होंने आगे चलकर कहा कि :

"भारत को जो वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय मान मिल रहा है उसी का यह प्रतीक है कि भारत आज गुट निरपेक्ष आन्दोलन का अध्यक्ष है।"

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की चर्चा करते हुए कहा :

"यह सर्व विदित है कि पश्चिमी देशों के कुछ हल्के तेज़ी से हथियारों की होड़ में लगे हैं, वे दुनिया के विभिन्न भागों में तनाव पैदा कर रहे हैं। उनके लिए अन्याधिक हथियार रखने के लिए पृथ्वी और समुद्र ही काफ़ी नहीं वे अंतरिक्ष में भी जो अन्तरिक्ष विश्व को जीवनदायक सूर्य की रोशनी देता है वहाँ भी विनाशकारी हथियार स्थापित करने में लगे हैं।

"वैज्ञानिकों, लेखकों, सिनेमा निर्माताओं ने काल्पनिक युद्ध के विनाशकारी परिणामों की कल्पना की है। परन्तु यदि ऐसा आणविक युद्ध हो गया तो उसके विनाशकारी परिणाम सभी कल्पनाओं से भी ज्यादा खतरनाक होंगे।"

इसी सन्दर्भ में उन्होंने सतोष व्यक्त किया कि कुछ समय पहले दिल्ली में जो गुट-निरपेक्ष शिखर सम्मेलन हुआ था उसने इस खतरे से विश्व को बचाने के लिए अपनी आवाज़ बुलंद की।

अमरीका और नाटो देशों द्वारा यूरोप में नए मिसाइल स्थित कर बराबरी के शक्ति संतुलन को बिगाड़ने, फ़ौजी क्षमता में अपना प्रभुत्व बढ़ाने के क़दमों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इस ख़तरे को रोकने के लिए हमने जो भी व्यावहारिक सुझाव रखे उन्हें दूसरे पक्ष ने मानने से लगातार इन्कार किया है और यही कारण है कि हमें भी आत्मरक्षा के लिए विश्व शान्ति की रक्षा के लिए प्रतिकारक कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

उन्होंने बड़ी दृढ़ता से कहा :

"मैं आपको ईमानदारी से यह बतलाना चाहता हूँ कि हम किसी हालत में किसी को भी शक्ति का भय दिखाकर हमसे बात करने का मौक़ा देने के लिए तैयार नहीं।"

उन्होंने विश्व के बड़े भाग में फैली भूख, बेकारी और जनता के जीवन की कठिन समस्याओं का उल्लेख किया और कहा कि यह कितने दुख और खेद की बात है कि अपार संपदा जनता की इन समस्याओं को हल करने के लिए लगाने के बजाय *उसे नये-नये विनाशकारी हथियारों के निर्माण में लगाया जा रहा है।*

उन्होंने अन्त में भारत की जनता को बल्गेरिया की जनता और सरकार की ओर से धन्यवाद किया।

नागरिक अभिनंदन समारोह में प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का भाषण देने का कोई कार्यक्रम नहीं था परन्तु श्रीमती गांधी ने इस अवसर पर एक भाषण दिया। जैसे उन्होंने खुद कहा है :

"कार्यक्रम में मेरे भाषण देने का कोई आयोजन नहीं था परन्तु चूँकि आप यहाँ राष्ट्रपति के रूप में ही नहीं बल्कि भारत के एक सच्चे मित्र के रूप में आये हैं इसलिए मैं आपका स्वागत करती हूँ।"

आगे बोलते हुए उन्होंने कहा :

"हमारे दोनों देशों के कई मामलों में विचारों में भिन्नता हो सकती है परन्तु विश्व में शान्ति क़ायम रखने और पूरी शक्ति से उन गरीबों की जिन्दगी में सुधार करने के जो सदियों से पीड़ित है इन प्रश्नों पर हमारे विचार समान हैं।"

उन्होंने कहा कि विश्व शान्ति एक महान आदर्श तो है ही परन्तु हमारे जैसे देशों के लिए तो यह एक व्यावहारिक आवश्यकता भी है। उन्होंने कहा :

"हम जितना ज्यादा युद्ध की बात सुनते हैं। उतना ही सारे विश्व के भविष्य के बारे में हमारी चिन्ता बढ़ती जाती है।"

"आपने इस प्रश्न पर अपने महान देश के विचार रखे हैं। इन विचारों और हमारे विचारों में काफ़ी समानता है। हम अपने देश की ओर से और गुट निरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से विश्व के देशों में भिन्नता प्रस्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं।"

उन्होंने टोडोर जिवकोव को भारत का नियंत्रण स्वीकार कर भारत यात्रा के लिए समय निकालने के लिए धन्यवाद दिया और उनका एक बार और स्वागत करते हुए बल्गेरिया की जनता को शुभ कामनाएँ प्रस्तुत की।

इस वर्ष 1984 मे भारत और बल्गेरिया के बीच राजनयिक सम्बन्धो की स्थापना की 30वी वर्षगाँठ है।

टोडोर जिवकोव की भारतयात्रा ने दोनो देशो के बीच राजनैतिक, सास्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी हर प्रकार के मित्रता के सम्बन्धों को एक ऊँचे स्तर पर पहुँचा दिया है।

भारत-बल्गेरिया की मैत्री एक दृढ़ और अटूट वस्तु है।

नवम्बर 1981 मे श्रीमती गाधी ने अपनी बल्गेरिया यात्रा क समय कहा था :

"कुछ मित्रताएँ स्वार्थों के लिए होती हैं परन्तु कुछ ऐसे स्वार्थी नजरिये से नही बल्कि विशाल नजरिये से होती हैं। भारत-बल्गेरिया की मित्रता इसी दूसरी श्रेणी की है। उसका उद्देश्य है कि हम न सिर्फ़ अपने लिए परन्तु जिन उद्देश्यों को हम प्रिय मानते है अर्थात् एक शान्तिपूर्ण विश्व और भाईचारेपूर्ण दुनिया का निर्माण करने के लिए सतत प्रयत्न करते जाएँ।"

भारत-बल्गेरिया की मित्रता के बारे मे यह बात उपयुक्त है।

इस संविधान का मूल आधार यह है कि एक विकसित समाजवादी व्यवस्था के निर्माण का यह एक आधारभूत कानून है।

इस संविधान में यह दर्ज किया गया है कि जनवादी बल्गेरिया की समाज-व्यवस्था के संचालन में कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका है जो बल्गेरिया में एक विकसित समाजवादी व्यवस्था के निर्माण कार्य का नेतृत्व कर रही है। परन्तु इस संविधान में साथ-ही-साथ यह भी दर्ज किया गया है कि बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी विकसित समाजवादी व्यवस्था का निर्माण कार्य बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी के साथ भाईचारेपूर्ण सहयोग से पूरा करेगी। इस प्रकार संविधान में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा एक अन्य और पार्टी अर्थात् बल्गेरियाई खेतिहर पार्टी को भी मान्यता प्रदान की गई है।

संविधान में जनसंगठनों को भी मान्यता प्रदान की गई है जिसमें सबसे प्रमुख है फादरलैण्ड फ्रन्ट जिसके बारे में कहा गया है कि वह मुख्य रूप से कानूनों का पालन कराने तथा नागरिकों की आज़ादी और अधिकारों की रक्षा का कार्य करेगा।

संविधान में नागरिकों के बुनियादी अधिकारों राज्य सत्ता और शासन के विभिन्न अंगों, जन संगठनों तथा स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों इत्यादि का विस्तार में उल्लेख करने के पहले संविधान में बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी को जो स्थान दिया गया है उसके ऐतिहासिक कारणों का उल्लेख आवश्यक है।

बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी यूरोप के देशों के किसानों के संगठनों में सबसे पुरानी पार्टी है। 1979 में इसकी स्थापना के 80 वर्ष पूरे हो गये।

1878 में जब तुर्किस्तानी प्रभुत्व समाप्त हुआ तब खेती के क्षेत्र में बल्गेरिया की यह स्थिति थी कि छोटे-छोटे खेतों को जो जोतने वाले लाखों गरीब किसान थे जिनका बड़े जमींदार और पूँजीपति वर्ग शोषण करते थे।

अपने जन्मकाल से ही खेतिहर पार्टी में दो रुझानें थीं। एक तबका यह चाहता था कि यह पार्टी राजाशाही, पूँजीपति और बड़े जागीरदारों से सहयोग की नीति अपनाएं। परन्तु पार्टी का बहुमत अंग, जो लड़ाकू अंग था, चाहता था कि पार्टी को विदेशी पूँजी की लूट के विरुद्ध राजाशाही और जागीरदारों के विरुद्ध संघर्ष का रास्ता अपनाना चाहिए। यह तबका वैज्ञानिक रूप से यह नज़रिया रखने वाला नहीं था कि समाज व्यवस्था का रूप क्या हो परन्तु इसकी आम भावना यह थी कि एक प्रजातांत्रिक गणतंत्र की स्थापना हो तथा गरीबों के साथ खासकर गरीब किसानों के साथ सामाजिक न्याय प्रदान करने वाली व्यवस्था हो। पार्टी के इस बहुमत ने उसे इन्हीं नीतियों पर चलाना शुरू किया। इस प्रकार की नीतियों के सबसे बड़े प्रवक्ता थे एलेक्जेन्डर स्टाम बोलिस्की।

फौजी दस्तो ने बगावत कर दी। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी दोनों ने इस बगावत का समर्थन किया। यह बगावत कामयाब तो नहीं हो पाई परन्तु इसका राजनैतिक प्रभाव इतना पड़ा कि इस समय के शासक वर्ग को मजबूर होकर बल्गेरिया के खेतिहर पार्टी के नेतृत्व में कुछ अन्य पूँजीवादी पार्टियों के गठबंधन को 1919 के शासन की बागडोर संभालने के लिए मजबूर होना पड़ा। 1920 में नये चुनाव हुए और उसमें विजयी होने पर राज्य शासन पूरी तरह बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी के हाथ आ गया। इस पार्टी का यह शासन जून 1923 तक चला।

इस पार्टी की सरकार ने शहरों में बड़े-बड़े भवनों को सरकार के हाथ में लेकर उसमें गरीब वस्ती वालों को बसाया, पूँजीपतियों की निजी खेती सम्पत्ति को भी सार्वजनिक हितों के लिए राज्य के साथ में ले लिया, एक प्रगतिशील आयकर क़ानून भी इसने लागू किया, युद्ध में मुनाफ़ाखोरों की सम्पत्ति को इस सरकार ने जब्त कर लिया, प्राकृतिक विपदाओं से मुनाफा कमाने वालों पर मुकदमे चलाये, सहकारिता को प्रोत्साहन दिया तथा न्याय-व्यवस्था व शिक्षा के क्षेत्र में प्रजातांत्रिक सुधार किये।

इस पार्टी ने बाल्कान क्षेत्र में शान्ति और सहयोग की नीति अपनाई तथा सोवियत समाजवादी शासन के साथ सामान्य सम्बन्ध स्थापित करने के लिए पहल की।

परन्तु इस पार्टी और इसकी सरकार ने गंभीर ग़लतियाँ भी कीं। किसानी राज्य की गलत कल्पना के आधार पर इसने अन्य प्रगतिशील शक्तियों खासकर कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मिलकर प्रतिगामी पूँजीपति वर्ग के विरुद्ध संघर्ष करने की संभावनाओं को खत्म कर दिया।

पूँजीपति वर्ग जागीरदारों ने षड्यंत्र किया। वे इस खेतिहर पार्टी की सरकार से बहुत नाराज और परेशान थे। उन्होंने 9 जून, 1923 को षड्यंत्रकारी तरीक़ों से सत्ता हथिया ली और एक फ़ासिस्ट तानाशाही शासन कायम कर दिया।

लोग पूछते थे कि इतनी शक्तिशाली कम्युनिस्ट पार्टी और खेतिहर पार्टी के रहते हुए भी जनता से कटे हुए कुछ मुट्ठी भर षड्यंत्रकारी गिरोह ने कैसे सत्ता को हथिया लिया।

इसका उत्तर टोडोर जिवकोव ने स्पष्ट रूप से दिया है। इनका कहना है कि "इस प्रश्न का उत्तर जीवन के समान साफ़ है। प्रतिगामी शक्तियों की यह क़दम उठाने की हिम्मत भी इसलिए हुई और वे कामयाब भी इसलिए हो पाये क्योंकि प्रगतिशील शक्तियों में एकता नहीं थी।"

इस काल में बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी पूँजीपतियों से ज्यादा कम्युनिस्टों से घबरा रही थी। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी खेतिहर पार्टी का सही

ल्यांकन नहीं किया कि सब कुछ स्वामियों के बावजूद प्रतिगामी पूंजीवादी
ासिस्ट शक्ति के विरोध एकतापूर्ण संघर्ष में वह पार्टी बहुत महत्वपूर्ण सहयोगी
नाई जा सकती थी। बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने इस गलत समझ के कारण
जून की प्रतिक्रान्ति के समय एक दर्शक का-सा रुख अपनाया। यह एक गंभीर
कीर्णतावादी भूल थी जिसे बाद में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वीकार किया
।

जो भी हो दोनों पार्टियों को इस इतिहास ने सबक दिया। बल्गेरिया की
म्युनिस्ट पार्टी ने सितम्बर 1923 में दुनिया में पहले फ़ासिस्ट विरोधी विद्रोह
ा आह्वान किया और उसे संगठित किया। तब से ही खेतिहर पार्टी ने सहयोग
ा रास्ता अपनाना शुरू किया।

दूसरे महायुद्ध के समय हिटलरी फ़ासिस्ट तानाशाही के विरुद्ध जब संघर्ष शुरू
आ तब से बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और खेतिहर पार्टी ने मिलजुल कर कार्य
ुरू किया।

जब फ़ादरलैण्ड फ्रण्ट का निर्माण हुआ तब खेतिहर पार्टी उसमें शामिल हुई
और सक्रिय रही। 9 सितम्बर 1944 की बगावत और मुक्ति संघर्ष में खेतिहर
पार्टी बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और जन संगठनों का पूरा साथ दे रही थी।
ह फादरलैण्ड फ्रण्ट में भी शामिल हुई।

9 सितम्बर 1944 के मुक्ति दिवस के बाद जब फादरलैण्ड फ्रण्ट की सरकार
ी स्थापना हुई उसमें भी बल्गेरिया को खेतिहर पार्टी ने भाग लिया और सहयोग
किया।

कुछ वर्षों बाद बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी ने बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी
के कार्यक्रम को अपना खुद का कार्यक्रम के रूप में स्वीकार कर लिया।

1971 के बल्गेरिया के संविधान में खेतिहर पार्टी को जो मान्यता दी गई है
और फ़ादरलैण्ड फ्रण्ट में भी उसका जो स्थान है उसके यही ऐतिहासिक कारण हैं।

जनता के बुनियादी अधिकार

1971 के संविधान में बल्गेरिया की जनता की स्वतन्त्रताओं और बुनियादी
अधिकारों का बड़े ठोस रूप से उल्लेख किया गया है।

बल्गेरिया के प्रत्येक नागरिक को पूरी नागरिक स्वतन्त्रता का अधिकार है।
बिना अदालत के निर्णय के उसे किसी भी प्रकार से दंडित नहीं किया जा सकता।
किसी जुर्म के आरोप पर मुकदमा चलने और सज़ा दिये जाने पर भी शारीरिक
रूप में उस पर कोई आघात नहीं किया जा सकता।

कानून और अदालत के समक्ष प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार है।

बल्गेरिया के विधान के अनुसार किसी भी नागरिक के साथ उसके धर्म, जाति

या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता।

प्रत्येक नागरिक को रोजगार पाने का बुनियादी अधिकार है। वह अपनी इच्छानुसार कोई कार्य कर सकता है। यह राज्य की जिम्मेदारी है कि वह उसे रोजगार उपलब्ध कराने की व्यवस्था करे।

रोजगार के अधिकार के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक को विश्राम का भी बुनियादी अधिकार है। विश्राम के नियम राष्ट्रीय एसेम्बली और उसकी राज्य कौंसिल बनाती है। *वर्तमान कानूनों के मुताबिक प्रत्येक नागरिक को सप्ताह में* पाँच रोज का कार्य और दो दिन के विश्राम की व्यवस्था है। एक सप्ताह में काम के कुल घंटे ज्यादा-से-ज्यादा 42.5 रखे गये हैं। ज्यादा शारीरिक परिश्रम के कार्य में जैसे खदान इत्यादि में काम करने वालों के लिए और कम घंटों के कार्य का प्रावधान है।

इसके अलावा प्रत्येक नागरिक को प्रति वर्ष 14 से 21 दिन तक की तनख्वाह सहित छुट्टी का प्रावधान है। यह दिन उस नागरिक की कार्य कुशलता तथा सेवा काल की अवधि से सम्बन्धित है।

माताओं को प्रसव काल के पहले और बाद में कुल महीने की पूरी तनख्वाह *के साथ छुट्टी का अधिकार है। माता को यह भी अधिकार है कि वह चाहे तो* इसके बाद भी छः महीने तक आधी तनख्वाह पर छुट्टी ले सकती है और वह चाहे तो जब तक शिशु तीन वर्ष की आयु का नहीं हो जाता तब तक बिना तनख्वाह के छुट्टी ले सकती है। इस काल तक उसकी नौकरी पर उसका अधिकार कायम रहेगा। प्रत्येक नागरिक को पुरुष को 60 वर्ष की आयु और स्त्री को 55 वर्ष की आयु के बाद पेंशन पाने का अधिकार है। यदि कोई अपंग हो जाये या ऐसे रोग से ग्रस्त हो तो उसे कार्य करने में अशक्त बना दे या दुर्घटना से ऐसा हो जाये। तो उसे भी पेंशन पाने का अधिकार है।

प्रत्येक नागरिक को पूरी धार्मिक स्वतंत्रता है। परन्तु धर्मस्थान चाहे वह *गिरिजाघर हो या मस्जिद वह शिक्षा या राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने का* अधिकारी नहीं है। धार्मिक स्थान अपनी व्यवस्था करने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रत्येक नागरिक को संगठन का अधिकार है। समाजवाद विरोधी प्रचार या कार्य करने वाले तथा युद्ध का प्रचार करने वाले संगठनों को यह स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है।

प्रत्येक नागरिक को निःशुल्क इलाज का अधिकार है। बीमारी के काल में इलाज के अलावा उसे 80 प्रतिशत तनख्वाह पाने का अधिकार है। यदि वह गंभीर *रोग से पीड़ित हो जैसे क्षय रोग इत्यादि तो पूरी बीमारी के काल में उसे पूरी* तनख्वाह प्राप्त करने का अधिकार है। दवादारू और इलाज तथा औषध मुफ्त पाने का अधिकार बूढ़ों, बच्चों, अपंगों सबको है। निराश्रित व्यक्ति को भी पेंशन

पाने का अधिकार है।

प्रत्येक नागरिक को यह भी अधिकार है कि वह अपने बालक-बालिकाओं को मध्यमस्तरीय स्तर तक या पोलिटेकनीक या अन्य तकनीकी शिक्षा बिना शुल्क दिला पाए। कॉलिज में जाने पर छात्र को उसकी माता-पिता की आमदनी की सीमा के आधार पर तथा उसकी पढाई मे दक्षता के आधार पर वज़ीफा पाने का अधिकार है।

प्रत्येक बालिग नागरिक को अर्थात् 18 वर्ष की आयु प्राप्त होने पर राष्ट्रीय असेम्बली से लगाकर स्थानीय कौंसिल के चुनावो मे मत देने और अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है। यह मतदान गुप्त मतदान प्रणाली और एक वोटर एक वोट के आधार पर किया जाना चाहिए ऐसा सवैधानिक कानून है।

इन सभी बुनियादी अधिकारो के अलावा राज्य की यह जिम्मेदारी है कि वह राष्ट्रीय आय का कुछ भाग सामाजिक फण्ड के लिए सुरक्षित करे। आज जो स्थिति है उसके अनुसार सामाजिक फ़ण्ड का अनुपात प्रति व्यक्ति की तनख्वाह या खेती से हो रही आय का 25 प्रतिशत है। इस सामाजिक फण्ड से उसे सालाना छुट्टी बिताने के लिए कुछ खर्च का दो-तिहाई भाग मिलता है। माताओ को प्रत्येक शिशु के जन्म पर विशेष भत्ता और तनख्वाह मे कुछ वृद्धि मिलती है। थियेटर क्लब, खेलकूद के मैदान, पार्क इत्यादि जन सुविधाओं को प्रदान करने के लिए सामाजिक फड का उपयोग होता है। इस प्रकार बल्गेरिया का नागरिक न सिर्फ कानून की परिभाषा मे स्वतंत्र है बल्कि उसे अपने स्वतन्त्रता माँगने के लिए सब सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

राजकीय ढांचा

बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र मे सर्वोच्च शक्तिमान है विराट राष्ट्रीय असेम्बली, जिसका चुनाव प्रत्येक पाँच वर्ष मे बालिग और गुप्त मतदान के आधार पर होता है। यह राष्ट्रीय असेम्बली संविधान के अंतर्गत विभिन्न कानून बनाती है जिनसे सामाजिक और नागरिक जीवन व्यवस्थित होता है।

यह राष्ट्रीय असेम्बली एक स्टेट कौंसिल का चुनाव करती है। स्टेट कौंसिल का एक अध्यक्ष, वह तय करे उतने उपाध्यक्ष और सचिव होता है।

राष्ट्रीय असेम्बली का जब अधिवेशन नहीं होता उस काल में यह राज्य कौंसिल राष्ट्रीय असेम्बली का कार्य करती है। इसे कानून बनाने का अधिकार नहीं है परन्तु बने हुए कानूनों को लागू करने के लिए यह नियम बना सकती है। इस राज्य कौंसिल को यह भी अधिकार है कि यदि अदालत ने किसी व्यक्ति को कारावास या मौत की सज़ा दे दी हो तो वह उसे रद करं सकती है या उसे माफ़ी दे सकती है। राज्य कौंसिल के अध्यक्ष का दर्जा राष्ट्रपति के समान है इस समय टोडोर जिवकोव बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र के राज्य कौंसिल के अध्यक्ष हैं।

राज्य कौंसिल के नीचे और राष्ट्रीय असेम्बली की अंतिम देखरेख के अन्तर्गत मंत्रिपरिषद् होता है जिसमें प्रधान मंत्री और अन्य मंत्री होते हैं। मंत्रिपरिषद् का और प्रधान मंत्री का चुनाव राष्ट्रीय असेम्बली करती है और वे उसके प्रति तथा राज्य कौंसिल के प्रति जिम्मेदार हैं। वे शासन के विभिन्न विभागों के कार्यों का रोजमर्रा का संचालन करते हैं।

राष्ट्रीय असेम्बली की ही तरह बालिग और गुप्त मतदान के अधिकार से चुनी हुई स्थानीय संस्थाएँ होती हैं जिनका नाम है जन कौंसिल। संविधान के अधीन और राष्ट्रीय असेम्बली द्वारा पास किए गए क़ानूनों, या राज्य कौंसिल द्वारा बनाए गए नियमों की सीमा में बाक़ी सभी प्रशासनिक अधिकार उस क्षेत्र की जन-कौंसिल के पास रहते हैं।

अदालतें तथा न्याय-व्यवस्था

राष्ट्रीय असेम्बली पाँच साल की अवधि के लिए सर्वोच्च न्यायलय को चुनती है। इस बीच बिना बाक़ायदा आरोप लगाये और राष्ट्रीय असेम्बली में उस पर निर्णय लिये बिना किसी न्यायाधीश को हटाया नहीं जा सकता। यह न्यायाधीश और सर्वोच्च न्यायालय अपने कार्य में पूर्णतया स्वतंत्र है और संविधान और कानून को लागू करने का, जुर्म करने वाले को सज़ा देने का तथा किसी नागरिक के अधिकार का हनन हो तो उसे रक्षा प्रदान करने का काम यह न्यायालय करते हैं।

बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र में न्याय व्यवस्था में एक और महत्वपूर्ण पद होता है मुख्य विधि संरक्षण। इसका कार्य जुर्म करने वाले व्यक्तियों पर मुक़दमा चलाना ही नहीं बल्कि नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना भी है। इसकी नियुक्ति भी राष्ट्रीय असेम्बली करती है।

बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र में न्यायपालिका एकदम स्वतंत्र है।

पार्टियाँ और जनसंगठन

बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र में मार्गदर्शन राजनैतिक पार्टी का ज़िम्मा बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का है जो संविधान के अनुसार बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी के सहयोग से यह कार्य करती है।

जनसंगठन

बल्गेरिया जनवादी जनतंत्र में सबसे प्रमुख जनसंगठन है फ़ादरलैण्ड फ्रन्ट। इस जनसंगठन में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी बल्गेरिया की खेतिहर पार्टी के अलावा ट्रेड यूनियनें, दिमित्रोव नौजवान लीग इत्यादि जनसंगठन शामिल हैं।

फादरलैण्ड फ्रण्ट जनवादी बल्गेरिया का सबसे व्यापक और विशाल जनसगठन है। बल्गेरिया का कोई भी बालिग नागरिक इसका सदस्य बन सकता है। इसके अलावा जैसे उल्लेख किया जा चुका है कई जनसंगठन जैसे ट्रेड यूनियनें या जॉर्जी दिमित्रोव नौजवान लीग इत्यादि सामूहिक रूप से इसके सदस्य बन सकते हैं।

फादरलैण्ड फ्रण्ट बल्गेरिया की जन गतिविधियों में सक्रिय योगदान देता है, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा का कार्य करता है तथा राष्ट्रीय असेम्बली में उम्मीदवारों का चयन करता है।

ट्रेड यूनियनें जनवादी बल्गेरिया का अत्यन्त महत्वपूर्ण जन सगठन है। इस सगठन का कार्य है श्रमिकों के जो उसके सदस्य हैं उनके हितों की रक्षा करना, तनख्वाह तथा काम के अन्य प्रश्नों पर सामूहिक समझौते करना, फिजूल खर्च को या सामान को बर्बाद करने से रोकना, श्रमिकों में समाजवाद के निर्माण के लिए पूरा कार्य करने की प्रेरणा देना और साथ-ही-साथ श्रमिकों के लिए विभिन्न प्रकार की सुविधाओं की व्यवस्था करना। इसका कार्य है श्रमिकों में समाजवादी चेतना, अतर्राष्ट्रीयवाद तथा विश्व शान्ति के प्रति आस्था को लगातार बढाना। यह सगठन श्रमिकों को मार्क्सवाद लेनिनवाद की शिक्षा भी देता है।

दिमित्रोव नौजवान लीग बल्गेरिया के नौजवानों का बहुत असरदार और प्रभावशाली सगठन है। बल्गेरिया के मुक्ति दिवस के बाद इस संगठन ने स्वेच्छा से कार्य कर कई महत्वपूर्ण बाँधों और सडकों इत्यादि का निर्माण किया।

अपनी विभिन्न गतिविधियों के जरिये यह नौजवानों में समाजवादी समाज व्यवस्था के निर्माण में जोश के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है, नौजवानों को मार्क्सवाद लेनिनवाद के सिद्धान्तों में शिक्षित करता है बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के निर्णयों और मार्गदर्शक दस्तावेजों को आत्मसाध करने के लिए उसे प्रेरित करता है तथा आगे चलकर इन नौजवानों को कम्युनिस्ट पार्टी के अच्छे कार्यकर्ता बनने के लिए तैयार करता है। इस संगठन की समाजवादी निर्माण कार्य में महत्व-पूर्ण भूमिका है। साथ-ही-साथ युवकों में सही अतर्राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत करने में, साम्राज्यवाद, नस्लवाद इत्यादि के खिलाफ कार्यक्रमों में उन्हें सक्रिय करने में तथा विश्व शान्ति के लिए प्रभावी कार्य करने में युवकों का मार्गदर्शन करता है और उन्हें सक्रिय कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए आगे लाता है। इसके अलावा महिलाओं के, लेखकों के, वैज्ञानिकों के, इत्यादि अनेक जनसंगठन हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में सक्रिय है।

बल्गेरिया जनवादी गणतंत्र के विधान का उसके वास्तविक प्रजातांत्रिक रूप का तथा विभिन्न वर्गों के संगठनों का यह ढाँचा इस बात का प्रतीक है कि समाज-वादी प्रजातंत्र एक हकीकत है जो लोगों को सर्वांगी विकास के सभी साधन उपलब्ध कराता है और उन्हें नई जिन्दगी के निर्माण-कार्य में सक्रिय भाग लेने की प्रेरणा

और अवसर प्रदान करता है।

बल्गेरिया के लोगों का रहन-सहन

इन आँकड़ों के अलावा कुछ व्यक्तियों की मिसाल सामने रख हम कल्पना करें कि बल्गेरिया के आम लोग किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं।

वार्ना स्थित जहाज निर्माण संयंत्र में कार्यशाला में कार्य करने वाले ओतिक गारावेदोव का उल्लेख किया जा चुका है। उनकी तनख्वाह 500 लेव, पत्नी की तनख्वाह 180 लेव और वार्ना में उनका खुद का मकान।

वार्ना के निकट सहकारी फ़ार्म के एक परिवार का प्रावेरज के सहकारी फार्म के एक परिवार का तथा वार्ना के ही निकट स्थित सुवोरोह सहकारी फ़ार्म के एक परिवार का उल्लेख किया जा चुका है। जुलाई 1983 की मेरी यात्रा के दौरान मैंने कई लोगों से बातचीत की और उनके जीवन के हालात के बारे में पूछा।

द्रुज्बा (मित्रता) आवास-गृह संख्या छः जहाँ मैं ठहरा था वहाँ के रसोईघर के मुखिया थे अलेक्जेंडर, दिमित्री दोत्रेव। उनकी तनख्वाह 280 लेव थी। उनका वार्ना में खुद का मकान था। उनके पास भी लाडा 1300 मोटरकार थी जिसे लेकर वह अपने कार्य के लिए आते-जाते थे। बड़े हँसमुख मिलनसार व्यक्ति थे।

उसी आवास-गृह में रसोईघर में खाना परोसने का कार्य करने वाली एक महिला थी। नाम था वान्या अटानासोवा। उनकी तनख्वाह थी 500 लेव थी। पत्नी दुभाषिये का का काम करती थी उनकी तनख्वाह 280 लेव। उनके पति बड़ी डीजल इंजन वाली नौका के चालक थे। उनकी तनख्वाह थी 400 लेव। उन्हें बिना शुल्क एक मकान दे दिया गया था।

बाल्कान टूरिस्ट की बसों के ड्राइवरों से बात करने पर पता चला कि उनकी तनख्वाह 350 से 400 लेव थी। मोटरकार के चालकों की तनख्वाह औसतन 280 लेव से 350 लेव थी।

हर परिवार में कम-से-कम दो कमाने वाले लोग हैं। यदि माता पिता साथ रहते हों जो कई परिवारों में होता है तो वे 60 से 80 लेव पेंशन पाने वाले होते हैं। यदि लड़का-लड़की साथ रहती हैं तो कालेज में दाखिला मिलने पर वजीफा मिलता है। कई परिवारों में यह स्वाभाविक स्थिति थी कि शादी के पहले लड़का या लड़की नौकरी लग जाने के बाद भी माता-पिता के साथ रहते हैं।

सामान्यतः एक परिवार में दो या तीन लोग कमाने वाले होते हैं। इस प्रकार परिवार की औसत आमदनी करीब 600 से 800 लेव हो जाती है। कुछ कर्मचारियों, मिस्त्री, विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों इत्यादि की तनख्वाह ज्यादा है और यदि वे परिवारों में दो ही कमाने वाले हों तो वे भी औसत आमदनी के इस स्तर पर [illegible] जाते हैं।

अब पारिवारिक खर्च का अनुमान लगाइए। मकान या तो खुद का हो या यदि राज्य अथवा किसी औद्योगिक द्वारा निर्मित फ्लैट मिला हो तो किराया केवल मात्र लेव से 12 लेव होता है। शिक्षा मुफ्त, चिकित्सा मुफ्त, वृद्ध माता-पिता पेंशन पाने वाले, शिशुओं के लिए किंडरगार्टन इस प्रकार अन्य कोई विशेष खर्च का भार परिवार पर पड़ता ही नहीं।

खाना और कपड़ा यह तो एक परिवार के लिए आवश्यक है। खाने के लिए औसतन एक परिवार का क्या खर्च हो सकता है इसकी कल्पना विभिन्न चीजों के भावों को देखकर लगाई जा सकती है। हमारे देश में सबसे आवश्यक खाद्य पदार्थ आटा या डबल रोटी। यह आवश्यकता तो दुनियाभर के सभी परिवारों की भी है। बल्गेरिया में एक लेव से चार डबल रोटियाँ प्रत्येक एक किलो वाली मिलती हैं। 100 अंडों का दाम है 1 लेव। मछली बड़ी सस्ती है एक से दो लेव प्रति किलो। मुर्गी का माँस तीन लेव प्रति किलो। सोसेजेज चार लेव प्रति किलो। खाद्य तेल जो ज्यादातर सूरजमुखी तेल ही वहाँ उपयोग में आता है उसका भाव है 1.6 लेव प्रति लिटर। मक्खन की 125 ग्राम की टिकिया के दाम है, 72 लेव।

औसत परिवार एक महीने में यदि 30 किलो डबलरोटी 8 किलो खाद्य तेल, 2 या 3 किलो मक्खन, और 15 से 20 किलो मछली या मुर्गी का माँस या सोसेजेज और फिर सब्जियाँ और फल इत्यादि जो बहुत सस्ती है इनका उपयोग करे तो खुराक का माहवार खर्च आयगा करीब 100 से 125 लेव। यदि परिवार का कोई व्यक्ति दोपहर का भोजन केन्टीन में करे तो खर्च और भी कम आएगा।

कपड़ों के भावों का भी उल्लेख किया जा चुका है। 65 प्रतिशत पोलिस्टर के शर्ट के दाम हैं 10 लेव। इसी अनुपात से अन्य कपड़ों के दाम हैं। वास्तव में गरम कपड़ों के भाव बमुकाबले सस्ते हैं। अच्छे फैशनदार जूतों के दाम 15 से 20 लेव। सामान्य जूते काफी सस्ते।

इस प्रकार किसी परिवार को मकान किराया, काफी पौष्टिक और स्वादिष्ट खाने और सामान्यतः अच्छे कपड़ों के लिए औसत 300 से 350 लेव से ज्यादा खर्च करना नहीं पड़ता। स्वाभाविक बात है कि काफी बचत हो जाती है। रंगीन टेलीविजन के दाम 600 लेव हैं। यही कारण है, बल्गेरिया के प्रति सौ परिवारों के पीछे रेडियो, टेलीविजन, रेफ्रिजरेटर, कपड़े धुलाई की मशीन की संख्याएँ निम्न हैं :

प्रति सौ परिवारों में	
रेडियो	92 परिवार
टेलीविजन	87 "
रेफ्रिजरेटर	88 "
बिजली से चलने वाली कपड़े धुलाई की मशीन	81 "

1981 से यह स्थिति हो गई है कि शहरों और देहातों मे कई परिवार मोटर-कार खरीदने की स्थिति में आ गये हैं और खरीदने लगे हैं। सप्ताह में 5 दिन काम करना पड़ता है दो दिन अवकाश के हैं। बल्गेरिया के सामान्य लोग इन दिनों पहाड़ों पर घूमने चले जाते हैं या किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में व्यस्त रहते हैं। कई परिवार शनिवार को शाम का भोजन किसी अच्छे रेस्तरां में करते हैं, ऐसे कई रेस्तरां हैं कई झीलों के किनारे, कई जंगलों की बीच पेड़ काटकर विशिष्ट प्राकृतिक वातावरण को कायम रखते हुए बनाये हुए या फिर कई पहाड़ियों पर स्थित हैं।

यह कहा जा सकता है कि बल्गेरिया के आम लोग अपने जीवन में भौतिक और सांस्कृतिक दोनों प्रकार के आनन्द लेते हैं। किसी स्कूल मे आप चले जाइये, और मैं गया हूँ, वहाँ बाल-बालिकाएँ स्वच्छ और सुहावनी यूनिफ़ार्म पहने अच्छे टेबलों ओर कुर्सियों पर बैठे, टेलीविजन व सिनेमा स्लाइट इत्यादि नवीनतम उपकरणों से पढ़ाई का आनन्द लेते हैं। उनके हँसते गुलाबी चेहरे देखकर लगता है कि गुलाबों के देश बल्गेरिया में यह नए इंसानी गुलाब पनप रहे हैं।

सुवोरोव सहकारी फ़ार्म के मुख्य केन्द्र पर स्थित एक स्कूल मैंने देखा। वह माध्यमिक शिक्षा का स्कूल था परन्तु भौतिकशास्त्र रसायनशास्त्र, इत्यादि कक्षाओं के 8वें स्टैण्डर्ड की प्रयोगशालाओं में जो उपकरण मैंने देखे वह हमारे देश में कालेजों में ही उपयोग मे लाये जाते हैं।

जैसा कहा गया है पहनकर जोरों से काम और फिर सिनेमा, थियेटर, ड्रामा, शारीरिक व्यायाम के खेल, शतरंज, पुस्तकें पढ़ना, टेलीविजन देखना और अवकाश के दिनों मे घूमने जाना, प्रतिवर्ष 15 दिन से 21 दिन तक के पहाड़ों पर स्थित या समुद्र तट पर विश्राम-गृहों मे छुट्टियाँ बिताना यह है बल्गेरिया के सामान्य नागरिक का जीवन।

जनवादी बल्गेरिया की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने पिछले 10 से 15 वर्षों के बीच तनख्वाहों मे जो वृद्धि की है, सामाजिक फ़ंड को जितना बढ़ाया है आप लोगों की आमदनी, उनके उपयोग की आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि मे जो लगातार सुधार की व्यवस्था की है उसी का परिणाम है कि आज बल्गेरिया के सामान्य लोगों के जीवन की जो झाँकियाँ मैंने प्रस्तुत की हैं वे संभव हो सकी हैं। संतोष का विषय यह है कि इस दिशा मे और तेजी से आगे बढ़ने की योजनाएँ बनाई जा रही हैं। इसमें कोई शक नहीं कि टोडोर जिवकोव के सफल नेतृत्व में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार इस कार्यक्रम को पूरा करेंगी।

....और उज्ज्वल भविष्य की ओर

इस वर्ष जनवादी बल्गेरिया अपने शानदार मुक्ति दिवस की 40वीं वर्षगाँठ मना रहा है। जनवादी बल्गेरिया के भविष्य की हम क्या कल्पना कर सकते हैं।

अगले वर्ष जनवादी बल्गेरिया अपनी आठवीं पंचवर्षीय योजना पूरी कर 1986-90 के लिए नौवीं पंचवर्षीय योजना चालू करेगा। सम्भवतः 1985 में ही बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का 13वाँ महाधिवेशन भी हो। इसलिए आने वाला यह वर्ष बल्गेरिया के इतिहास में एक नया उज्ज्वल मोड़ देने वाला वर्ष होगा।

बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के 11वें महाधिवेशन (1976) में जब सातवीं पंचवर्षीय योजना चालू हुई थी उस समय तोदोर जिवकोव ने जनवादी बल्गेरिया के भविष्य के अर्थात् आने वाले कुछ वर्षों की सम्भावित प्रगति की कल्पना प्रस्तुत कर दी थी। उन्होंने कहा "1990 तक का काल हमारे सामाजिक विकास के हर क्षेत्र में संख्यात्मक तथा गुणात्मक लगातार नये आधार निर्माण करने वाला काल होगा। बनाये गये यह आधार धीरे-धीरे न सिर्फ समाजवाद के निर्माण की भौतिक और टैक्नीकल परिस्थितियाँ पैदा करेंगे, सामाजिक सम्बन्धों में और महत्त्वपूर्ण सुधार लायेंगे बल्कि इंसान का भी सर्वांगी विकास करेंगे। बल्गेरिया जनवादी गणतन्त्र एक उच्चस्तरीय समाजवादी व्यवस्था का राष्ट्र हो जाएगा बल्कि समाजवादी विकास की उच्चतम स्थिति पर पहुँच कर वह कम्युनिज्म के सामाजिक और आर्थिक आधारों का निर्माण करने लगेगा।"

यदि हम प्रश्न पर इस दृष्टि से भी देखा जाए कि विकास योजनाएँ जो इस काल में शुरू की गई हैं वे अगला कार्य शुरू कर देंगी परन्तु उनका निर्माण कार्य 1990 के बाद पूरा होगा। इस्पात का विशालतम संयंत्र, आणविक बिजली निर्माण करने वाला दूसरा संयंत्र, बिजली भट्टी से इस्पात बनाने के संयंत्र ऐसी कई महत्त्वपूर्ण योजनाएँ 1990 में या उसके लगभग काल में पूरी होंगी। इस प्रकार 1980-85 काल में जो योजनाएँ शुरू हुई हैं और जिनमें 1985 तक कई तो पूरी हो जायेंगी परन्तु यह सब उसी समय तक अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने लगेंगी और कई योजनाओं की नींव तो 1985 के बाद और तेज गति से पड़ेगी।

इस दृष्टि से आने वाले पाँच या दस वर्ष यह इतगति के विकास को न सिर्फ चालू रखने का काल होगा बल्कि यह विकास और तेज गति और गुणात्मक रूप में एक नया स्तर प्राप्त कर लेगा।

ठोस रूप में हम इसकी व्याख्या करें। जनवादी बल्गेरिया की आबादी करीब 90 लाख है जिसमें से 60 प्रतिशत से ज्यादा शहरों में रहते हैं। यदि प्रति परिवार में तीन सदस्य गिनें अर्थात् पति-पत्नी और एक बालक तो पूरे बल्गेरिया में परिवारों की कुल संख्या तीन लाख से ज्यादा नहीं हो सकती। इनमें से आने वाले पाँच वर्षों में होने वाले परिवर्तन की कल्पना भी कर लें तो शहरों में रहने वाले परिवारों की संख्या 20 लाख से ज्यादा नहीं होगी।

पिछले 25 वर्षों में जनवादी शासन ने करीब 12 लाख नये फ्लैट बनाए हैं। यदि 1984-85 में फ्लैट निर्माण की संभावित क्षमता जोड़ दी जाए तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि तब तक 15 लाख फ्लैट तैयार हो जायेंगे। अर्थात् जनवादी बल्गेरिया के प्रत्येक परिवार को नया फ्लैट देने का लक्ष्य फिर ज्यादा दूर नहीं रहेगा।

1983 के आँकड़े हैं कि प्रति व्यक्ति विभिन्न आवश्यक खाद्य पदार्थों की खपत के आँकड़े इस प्रकार हैं—मीट करीब 70 किलो, दूध करीब 190 लिटर, सब्जी करीब 110 किलो और फल करीब 115 किलो।

यदि प्रति परिवार के लिए वही कल्पना की जाए कि कम-से-कम औसत उसके तीन सदस्य होंगे तो प्रति परिवार इन वस्तुओं की खपत इस प्रकार होगी।

मांस	210 किलो	अर्थात् करीब तीन-चौथाई किलो प्रतिदिन
दूध	570 लीटर	अर्थात् करीब 1.5 लीटर प्रतिदिन
सब्जी	330 किलो	अर्थात् करीब 90 ग्राम प्रतिदिन
फल	345 किलो	अर्थात् करीब 95 ग्राम प्रतिदिन

जब यह स्थिति 1984 की है और जब कुछ ही वर्षों पहले खेती के क्षेत्र में नये सुधार, व्यवस्था के नये तरीके लागू किए गए हैं और खेतिहर-औद्योगिक संस्थानों की राष्ट्रीय यूनियन का निर्माण किया गया है तो स्वाभाविकतः उसके अत्यन्त लाभकारी परिणाम 1985-1990 के काल में ही मिलेंगे।

आज यदि बल्गेरिया के सामान्य परिवार का जीवन स्तर इतना ऊँचा हो चुका है जो *उपरोक्त आँकड़ों से साफ नजर आ रहा है तो यह कल्पना करना* दूर नहीं कि 1990 तक वह बहुतायत की हालत में पहुँच जायेंगे।

मेरी समझ में सबसे महत्वपूर्ण बात है 1984 में हुए पार्टी के विशेष अधिवेशन ... जिवकोव ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है और उसमें पूरी पार्टी, और समाज

के सामने यह मुख्य लक्ष्य रहा है कि हर क्षेत्र मे हर स्तर पर ग्रिस्म और गुण सुधार किया जाए। पिछले 25 वर्ष का यह अनुभव रहा है कि बल्गेरिया कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति मे जब कोई महत्वपूर्ण निर्णय लिया अर्थतंत्र के क्षेत्र मे किसी विशेष प्रश्न पर कोई नारा दिया है तो कुछ ही वर्षों में पके व्यापक लाभकारी परिणाम सामने आए हैं। यदि केन्द्रीय समिति ने एक शेष अधिवेशन बुलाना आवश्यक समझा और उसमे इस एक प्रश्न को मुख्य श्न बनाकर टोडोर जिवकोव ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है तो यह कल्पना की जा कती है कि 1985-90 के काल मे हर क्षेत्र मे इसका व्यापक प्रभाव नजर एगा।

जनवादी बल्गेरिया का अर्थतंत्र बल्कि हर क्षेत्र मे आज तक उसने जो प्रगति ाप्त कर ली है और तेज गति से प्रगति चालू रखने के नये आधार रख दिये हैं मिने यदि क्वालिटी सुधार कर हर क्षेत्र और हर स्तर पर इसे लागू करने का कार्य ालू हो गया जो अवश्य हो जाएगा तो इस वर्तमान उच्चस्तरीय समाजवादी व्यवस्था मे एक अत्यन्त व्यापक और उसे एकदम और ऊँची श्रेणी मे ले जाने वाला गुणात्मक परिवर्तन हो जाएगा।

समाजवादी व्यवस्था ने पूंजीवादी व्यवस्था के मुकाबले मे अपने आप को उच्चकोटि की व्यवस्था साबित कर दिया है क्योंकि इस व्यवस्था मे मुद्रा स्फीति मूल्यो मे वृद्धि, बेकारी इत्यादि समाज को त्रस्त करने वाली समस्याएँ नही हैं इसके विपरीत प्रतिवर्ष आर्थिक विकास की गति भी पूंजीवादी देशो के मुकाबले तेज है और इस प्रगति का सामाजिक लाभ आप लोगों को मिलता है। ये बा निर्विवाद सत्य हैं। परन्तु ऐतिहासिक तौर पर पूंजीवाद और समाजवाद मे व्यवस्थाओ के रूप मे जो होड है उसमे एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन का आधार है प्र व्यक्ति विभिन्न महत्वपूर्ण वस्तुओ की उत्पादकता। दूसरा मूल्यांकन का यह आधार है कि कम-से-कम कच्चा माल का प्रयोग कर कम-से-कम श्रम शक्ति उपयोग कर चीजो को तैयार करना। इस मामले मे जापान ने काफी प्रगति की और यही कारण है कि चाहे मोटरगाडी हो और चाहे घड़ी और केल्कुलेटर अं कम्प्यूटर हर चीज मे जापान अमरीका के बाजार को हड़पने जा रहा है।

निश्चित तौर पर हर वस्तु के बारे मे यह कहना कठिन होगा परन्तु अ तौर पर अनेक महत्वपूर्ण वस्तुओ के निर्माण मे प्रति व्यक्ति उत्पादकता मे समा वादी बल्गेरिया कई पूंजीवादी देशों को पीछे रख पाएगा।

यह कामयाबी समाजवादी बल्गेरिया की निर्णायक कामयाबी होगी। वैसे इस काल मे ही लोग कहने लगे हैं कि बल्गेरिया यूरोप का जापान है। परन्तु तुलना कई मानो मे सही तुलना नही। खासकर इसलिए कि जापान में पूंजीव व्यवस्था है और बल्गेरिया में समाजवादी व्यवस्था जिसका आम लोगो के जन-जी

में पूंजीवादी ढर्रे पड़ता है। और बल्गेरिया को यूरोप का जापान इसी लिए कहते हैं कि प्रति व्यक्ति उत्पादकता की दर उसकी कई अन्य देशों से जितनी पूंजीवादी देशों से कहीं ज्यादा है। परन्तु अब यह कल्पना की जा सकती है कि 1990 तक या उसके लगभग समाजवादी बल्गेरिया कई वस्तुओं के उत्पादन प्रति व्यक्ति उत्पादकता और क्वालिटी में कई पूंजीवादी देशों को पीछे छोड़ देगा

बल्गेरिया ने रोबोट उत्पादन शुरू कर दिया है। तीन मुख्य पीढ़ी के कम्प्यूटर उसने बना लिये हैं। टोडोर जिवकोव के इस नारे के परिणामस्वरूप इस बात की कल्पना की जा सकती है कि उत्पादन के कई क्षेत्रों में रोबोट और कम्प्यूटरों का उपयोग शुरू हो जाएगा।

यदि समाजवादी बल्गेरिया कुछ विशेष वस्तुओं के उत्पादन में विशेषकर उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में प्रति व्यक्ति उत्पादन और लागत के स्तर में पूंजीवादी देशों को पीछे रखने में अर्थात इस अर्थ में भी वह यूरोप का जापान बन जाए तो यह एक बहुत निर्णायक महत्वपूर्ण बात हो जाएगी।

इसका अर्थ होगा कि पूंजीवादी व्यवस्था निरे आर्थिक क्षेत्र में भी समाजवाद से लड़ाई हारने लगा है। बल्गेरिया एक छोटा-सा कम आबादी वाला देश है वहाँ से ऐसे महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त होना यह समाजवादी व्यवस्था की आर्थिक क्षेत्र की सीमित परिधि में भी एक निर्णायक विजय होगी।

क्वालिटी के लिए बुलाये गए बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी के इस वर्ष हुए विशेष अधिवेशन में 'क्वालिटी' के सुधार के लिए गए नारे के साथ टोडोर जिवकोव ने कुछ नये तरीकों का भी उल्लेख किया है। इसमें विशेष ध्यान देने वाली बातें हैं कार्य टीम को भुगतान करने में पीस-रेट तरीके की शुरुआत और एक ही वस्तु निर्माण करने वाले संयत्रों में उपभोक्ता पसन्द के आधार पर समाजवादी होड़ का तरीका शुरू करना।

टोडोर जिवकोव ने इस बात का उल्लेख अपनी रिपोर्ट में किया है। परन्तु स्वाभाविक तौर पर इसके लिए नियम बनाने पड़ेंगे और आर्थिक संयत्रों के मैनेजमेन्ट व्यवस्था और तरीकों को करना आवश्यक हो जाएगा।

यह विश्वास किया जा सकता है कि टोडोर जिवकोव के नेतृत्व में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति, समूची पार्टी और बल्गेरिया की कार्यरत जनता इस कार्य को अवश्य पूरा करेगी। इस कार्य में कुछ वर्ष लग सकते हैं

परन्तु इस कार्य में बल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी का जो अनुभव होगा उसकी जो उपलब्धियां होंगी और मैनेजमेन्ट के तरीकों में वह जो नए सुधार करेगा उससे एक हद तक दुनिया की विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों को और समाजवादी देशों को अवश्य लाभ होगा।

यह सब तो सैद्धान्तिक और कुछ हद तक गंभीर चिंतन की बातें हैं। परन्तु

सामान्य नागरिक के नजरिये से इन सब परिवर्तनो, योजनाओं, सम्भावनाओ का क्या अर्थ होगा।

इन सबका परिणाम यह होगा कि आने वाले वर्षों मे 1990 या उसके लगभग समाजवादी बल्गेरिया के नागरिक चाहे वह कारखाने या दफ्तर या खेती के क्षेत्र मे कार्य कर रहा हो उसकी आय मे सम्भवतः 50 प्रतिशत वृद्धि हो पाएगी। रेडियो, टेलीविज़न, धुलाई मशीन, रेफ्रिजरेटर इत्यादि के बाद अब बारी आएगी मोटर-कार खरीदने की। मुझे कोई विस्मय नही होगा यदि 1990 या उसके लगभग बल्गेरिया के एक-चौथाई परिवार मोटरकार ले लेंगे।

विशाल निर्माण योजनाओ मे सोफिया से वार्ना तक का सडक निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा। यह सड़क दुनिया की सबसे कठिन निर्माण समस्याओ को पूरा करने वाली सडक होगी। इसका निर्माण कार्य मैंने देखा है। ऊँची पहाडियो को पार करते हुए या उनमे सुरंग बनाकर उसमें निकलते हुए, कहीं-कहीं नदियों नालों पर पुल बनाकर उस पर चलते हुए ज्यादातर भाग मे सीमेन्ट कंकरीट की बनी यह सडक जिसकी लागत का अनुमान है प्रति एक हज़ार मीटर दूरी के लिए दस हजार लेव (अर्थात् दस हज़ार डालर) यह निर्माण कार्य मे न सिर्फ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी बल्कि दुनिया में देखने लायक वस्तुओ मे एक होगी।

खाने-पीने, अच्छे और स्वच्छ फैशनदार वस्त्र पहनने मे बल्गेरिया का नागरिक उस समय तक बहुचर्चित और बहु प्रचारित पश्चिमी पूंजीवादी देशो मे उपलब्ध फैशनें, वस्तुओ की बहुतायत और अत्यन्त आसानी से उनकी उपलब्धि इन मामलो मे (बशर्ते के पश्चिमी पूंजीवादी देशो मे आपके जेब मे डालर या पौड या मार्क हो) वह मुकाबला करने लगेगा और उनको पीछे रख देगा।

टोडोर जिवकोव ने कई वर्षों पहले यह कह दिया कि 1990 तक बल्गेरिया उच्च समाजवादी व्यवस्था के उच्चतम स्तर पर पहुँच जाएगा। शायद टोडोर जिवकोव ने भी उस समय यह कल्पना नही की होगी। यह बात एकदम स्वाभाविक ही है। कि 1984 के शुरू मे वे क्वालिटी के सुधार के प्रश्न पर पार्टी के एक विशेष अधिवेशन को एकदम सारगर्भित और काफी नई स्थापनाएँ प्रस्तुत करने वाली रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे।

परन्तु टोडोर जिवकोव ने बार-बार यह कहा है कि समाजवादी व्यवस्था का संचालन मनोगत तरीकों से नहीं बल्कि वैज्ञानिक, भौतिक, आर्थिक आधार पर किया जाना चाहिए।

मेरी यह मान्यता है कि क्वालिटी के सुधार को मुख्य लक्ष्य बनाने का उन्होंने जो नारा दिया है वह मनोगत नही बल्कि ठोस भौतिक और आर्थिक आधार पर दिया हुआ एक ऐसा नारा है जो कुछ ही वर्षों में समाजवादी बल्गेरिया के अर्थतंत्र, और जन जीवन के हर क्षेत्र मे एक नया कायापलट कर देगा।

बल्गेरिया की उच्चतम समाजवादी व्यवस्था के निर्माण की इस कहानी के अध्ययन से, दो बार बल्गेरिया की यात्रा के दौरान मैंने खुद जो देखा है, सुना है और लोगो से जो सम्पर्क किया है उस आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि 1985 से 1990 का यह काल समाजवादी बल्गेरिया के जीवन मे ऐसा एक और निर्णायक परिवर्तन का काल होगा जो न सिर्फ विश्व-व्यापी महत्व रखने वाली बात होगी बल्कि गुलाब के फूलों के इस देश बल्गेरिया के जन जीवन मे ऐसा नया सुखदायी सर्वांगी अवसर का भौतिक सांस्कृतिक और इंसानी स्वरूप से एक नई खुशहाल और सांस्कृतिक तौर पर उच्च स्तरीय स्थिति के लाने वाला काल होगा जिसके देखने पर ही विश्वास किया जा सकता हो।

मैं उस कल्पना मे गोते लगा रहा हूँ।

40वी वर्षगांठ के इस सुअवसर पर यह कल्पना कर रहा हूँ कि अब तक की कामयाबियो के आधार पर आने वाले पाँच वर्षों मे बल्गेरिया ने सिर्फ एक उच्चतम समाजवादी व्यवस्था को चरमसीमा पर पहुँचाने वाला देश होगा बल्कि सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक प्रगति के तेज गति और उच्च स्तर की वह यूरोप और दुनिया में एक विस्मयकारी ही नही बल्कि समाजवाद के पक्षधर लोगो के लिए एक जोशीली प्रेरणादायक मिसाल बन जाएगा।

□